राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........ 9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, बुधवार, 23 अप्रैल 2025

वर्ष 06, अंक 204, पृष्ट 12, मूल्यः 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

नाबालिग बेटी को उठा ले गए दबंग, माता-पिता की पिटाई कर किया घायल....03

ग्राम पंचायत की खुली बैठक में मारपीट केस दर्ज.....12

पहलगाम आतंकी हमले में अब तक 30 लोगों की मौत, दो विदेशी भी शामिल; शाह पहुंचे श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने पर्यटकों पर कायराना हमला किया है. इस हमले में अब तक 30 पर्यटकों की मौत होने की खबर है जबकि कई अन्य घायल हुए हैं. मरने वालों में दो विदेशी भी शामिल हैं. आतंकी हमले में एक इजरायल और एक इटली के नागरिक की मौत हुई है.

स्वतंत्र प्रभात

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को आतंकवादियों ने पर्यटकों पर कायराना हमला किया है. इस हमले में अब तक 30 पर्यटकों की मौत होने की खबर है जबकि कई अन्य घायल हुए हैं। जानकारी के मुताबिक, मरने वालों में दो विदेशी भी शामिल हैं. आतंकी हमले में एक इजरायल और एक इटली के नागरिक की मौत हुई है. अभी तक इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। वहीं, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दिल्ली से श्रीनगर पहुंच चुके हैं।

आतंकवादियों की इस नापाक और कायराना हमले से पूरा देश स्तब्ध है. वहीं, आतंकियों का खात्मा करने के लिए ऑपरेशन शुरू कर दिया गया है. भारतीय सेना ने इलाके में अतिरिक्त बल भेजा है. आतंकवादियों के खिलाफ एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया है. राष्ट्रीय राइफल्स की टीम भी संयुक्त अभियान में शामिल हो गई है. हमले के बाद अनंतनाग में पर्यटकों की सहायता के लिए एक इमरजेंसी हेल्प डेस्क स्थापित किया गया है।

पर्यटकों के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी

पहलगाम आतंकी हमले के खिलाफ पूरे देश में गुस्सा है. हमले में घायल पर्यटकों का पहलगाम अस्पताल में इलाज चल रहा है. पुलिस से पर्यटकों की सहायता के लिए और संपर्क करने के लिए 9596777669, 01932225870 (9419051940 व्हाट्सएप) हेल्पलाइन नंबर जारी किया है. अटैक के तुरंत बाद सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को खाली करा लिया है और सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है. बताया जा रहा है कि आतंकी पुलिस की वर्दी में आए थे. ताकि किसी को कोई शक न हो पाए।

किसी आतंकियों को वबख्शा नहीं जाएगा- PM मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अभी सऊदी अरब के दौरे पर हैं जहां से वह लगातार स्तिथि का जायजा ले रहे हैं. उन्होंने गृहमंत्री अमित से फोन पर बात की है. साथ ही एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, 'मैं जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं. जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी संवेदना है. मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल लोग जल्द से जल्द ठीक हो जाएं. प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है. इस जघन्य कृत्य के पीछे जो लोग हैं, उन्हें न्याय के कटघरे में लाया जाएगा. उन्हें बख्शा नहीं जाएगा! उनका नापाक एजेंडा कभी सफल नहीं होगा। '

अमित शाह दिल्ली से श्रीनगर पहुंचे

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह हमले के बाद दिल्ली से श्रीनगर पहुंच चुके हैं. जहां वह आज रात सुरक्षा बलों के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करेंगे. साथ ही वह पहलगाम अस्पताल भी जाएंगे और हमले में घायल हुए लोगों से मुलाकात करेंगे. वहीं, कल सुबह अमित शाह घटनास्थल पर पहुंच कर पूरे मामले की स्थिति का मुआयना करेंगे. अमित शाह ने कहा है कि इस जघन्य आतंकी हमले में शामिल लोगों को बख्शा नहीं जाएगा। वह

अपराधियों पर कड़ी कार्रवाई करेंगे और उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देंगे।

खास तौर पर टूरिस्ट को बनाया गया निशाना

जानकारी के मुताबिक, आतंकियों ने को खास तौर पर टूरिस्ट को निशाना बनाने के लिए इस हमले को अंजाम दिया है. साथ ही पर्यटकों को मारने से पहले उससे उनका धर्म पूछा जा रहा था. एक तरह से खास धर्म को टार्गेट करके हमला किया गया है. यह हमला दोपहर करीब 3 बजे हुआ. 2 से 3 बंदूकधारियों ने पर्यटकों पर इस कायरनामा हमले को अंजाम दिया है.आतंकवादी बैसरन घाटी में पहाड़ से नीचे उतरे और वहां पर्यटकों पर गोलीबारी शुरू कर दी.बैसरन पहलगाम में एक प्रमुख पर्यटन स्थल है।

तुम्हें नहीं मारूंगा, मोदी को ये बता देनाःपहलगाम में पति को मारने के बाद उसकी पत्नी से बोला आतंकी

पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में 30 लोगों की मौत की आशंका है. इस हमले में कर्नाटक के मंजूनाथ भी मारे गए हैं. उनकी पत्नी पल्लवी ने बताया कि आतंकवादियों ने उनके पति को मार डाला. इसके बाद आतंकवादियों ने उनसे कहा कि तुम्हें नहीं मारेंगे. जाओ, मोदी को ये बता देना।

कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 30 लोगों के मारे जाने की आशंका है. कई अन्य घायल हुए भी हुए हैं। इसी हमले में कर्नाटक के शिवमोगा जिले के मंजूनाथ ने भी जान गंवाई है. वो परिवार के साथ पहलगाम छुट्टियां मनाने के लिए पहुंचे थे. उनके साथ पत्नी पल्लवी और बेटा था. पल्लवी ने इस हमले के बारे में जो कुछ बताया है, वो दिल दहला देने वाला है. पल्लवी ने बताया कि आतंकी हिंदुओं को गोली मार रहे थे। आतंकी हमले में जान गंवाने वाले मंजूनाथ की पत्नी पल्लवी ने आगे बताया, जब उन्होंने मेरे पति को मार दिया तो मैंने और बेटे ने आतंकियों से कहा कि तुमने मेरे पति को मार दिया है. अब मुझे भी मार दो. इस पर एक आतंकी ने कहा कि तुम्हें नहीं मारूंगा. जाओ, मोदी को ये बता देना. हमले के बाद स्थानीय लोग हमारी मदद के लिए आए. 3 स्थानीय लोगों ने जान बचाई।

डीएम नेहा शर्मा की पहल लाई रंग, दस साल से भी पुराने अवैध कब्जों से मिली ग्रामीणों को मुक्ति

● सभी तहसीलों के लिए बनाई गई थी 10-10 क्विक रेस्पॉस टीम

अवैध कब्जों पर चला प्रशासन का बुलडोज़र, कई जमीनें कराई गईं खाली

तहसील दिवस बना समाधान दिवस, ग्रामीणों में खुशी की लहर

चकमार्ग और खलिहान की जमीनें कब्जा मुक्त, ग्राम प्रधानों को सौंपी जिम्मेदारी

स्वतंत्र प्रभात

मनकापुर (गोंडा), तहसील समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी श्रीमती नेहा शर्मा के दिशा-निर्देशन में राजस्व विभाग द्वारा त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की गई, जिसके परिणामस्वरूप वर्षों से लंबित राजस्व एवं चकमार्ग संबंधी विवादों का स्थलीय सत्यापन कर नियमानुसार समाधान किया गया। उल्लेखनीय है कि जिलाधिकारी श्रीमती नेहा शर्मा द्वारा पूर्व में ही सभी उपजिलाधिकारियों को स्पष्ट निर्देश निर्गत किए गए थे कि तहसील समाधान दिवस पर राजस्व एवं चकमार्ग से संबंधित समस्त प्रकरणों का स्थलीय सत्यापन के उपरांत प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। इसी क्रम में प्रत्येक तहसील स्तर पर 10-10 राजस्व टीमों का गठन किया गया था, जिनके माध्यम से प्राप्त शिकायतों पर समयबद्ध एवं परिणामोन्मुखी कार्यवाही सुनिश्चित की गई।

10 साल पुराना अवैध कब्जा मुक्त कराया

ग्राम बरसैनिया लखपतराय निवासी श्री राम सिंह द्वारा खलिहान भूमि गाटा संख्या 56 पर अवैध अतिक्रमण की शिकायत प्रस्तुत की गई थी। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार राजस्व टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर संबंधित गाटा संख्या का सीमांकन, निशानदेही एवं कब्जा मुक्त कराकर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। यह कब्जा विगत 10 वर्षों से चला आ रहा था, इस समाधान दिवस पर प्रस्तुत प्रकरण पर त्वरित कार्यवाही की गई।

चुवाड़ बभनीपायर में चकमार्ग की पैमाइश और निस्तारण

इसी प्रकार, ग्राम चुवाड़, बभनीपायर निवासी श्रीमती श्रीदेवी द्वारा चकमार्ग गाटा संख्या 808 एवं 821 की पैमाइश हेतु प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया। राजस्व टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर ग्राम प्रधान एवं ग्रामीणों की उपस्थिति में चिन्हांकन कराया गया तथा चकमार्ग की भूमि को ग्राम प्रधान की सुपुर्दगी में सौंपते हुए आवश्यक मरम्मत एवं पटाई हेतु निर्देशित किया गया।

बूढ़ापायर में तालाब भूमि से अतिक्रमण हटाना

ग्राम बूढ़ापायर के बस्ती खास निवासी श्री चन्दी प्रसान द्वारा तालाब की भूमि गाटा संख्या 171 व 160 की पैमाइश एवं अतिक्रमण से मुक्ति हेतु आवेदन किया गया था। राजस्व टीम द्वारा सीमांकन कर दोनों गाटा को चिन्हित किया गया, जो कि मौके पर खाली पाए गए। संबंधित भूमि की तालाब के रूप में उपयोगिता सुनिश्चित करने हेतु इसे ग्राम प्रधान की सुपुर्दगी में सौंपा गया।

देवरिया में चकमार्ग भूमि पर अतिक्रमण मुक्ति

ग्राम देवरिया निवासी श्री शिव कुमार द्वारा चकमार्ग गाटा संख्या 11 से अवैध कब्जा हटवाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया। राजस्व विभाग द्वारा सीमांकन कर चकमार्ग की भूमि को चिन्हित किया गया, जो मौके पर खाली पाई गई। उक्त भूमि का सुपुर्दन ग्राम प्रधान को कर दिया गया।

केशवनगर में चकमार्ग भूमि पर अतिक्रमण मुक्ति

इसी प्रकार, ग्राम केशवनगर ग्रन्ट पश्चिमी निवासी श्री शिवपूजन द्वारा गाटा संख्या 2559 एवं 2692 पर अवैध अतिक्रमण की शिकायत प्राप्त हुई। तत्परता से कार्रवाई करते हुए संबंधित भूमि की निशानदेही कराई गई एवं चकमार्ग की स्थिति बहाल की गई। चकमार्ग की भूमि का सुपुर्दन भी ग्राम प्रधान को कर दिया गया।

चकगौरा में चकमार्ग से अवैध कब्जा हटवाना

ग्राम चकगौरा निवासी श्री दुर्गेश मिश्रा द्वारा गाटा संख्या 168 एवं 204 से अवैध कब्जा हटवाने हेतु प्रस्तुत प्रार्थना पत्र के क्रम में राजस्व एवं पुलिस टीम द्वारा संयुक्त रूप से मौके पर कार्यवाही कर अतिक्रमण हटवाया गया तथा चकमार्ग को पुनः उपयोग हेतु उपयुक्त स्थिति में लाया गया।

संक्षिप्त ख़बरें

मामूली बात पर दो भाइयों के बीच मार-पीट, दोनों पक्षों ने दर्ज कराया मुकदमा

नगराम, लखनऊ। नगराम क्षेत्र के करोरा गांव में मंगलवार की सुबह 9 बजे के करीब मामूली बात को लेकर दो भाईयों के बीच कहासुनी के बाद मार-पीट हो गई। सभी घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नगराम में भर्ती कराया गया। पुलिस ने दोनों पक्षों से मिली तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। नगराम थाना क्षेत्र के करोरा गांव निवासी कमलेश, मुकेश और इतवारी लाल तीनों सगे भाई हैं लेकिन सभी अलग-अलग रहते हैं। बंटवारे के बाद से सभी में विवाद इस कदर उभरा की दोनों के बीच खाई हो गई। नगराम थाना प्रभारी विवेक चौधरी के मुताबिक एक पक्ष के मुकेश कुमार ने आरोप लगाया कि उसके छोटे भाई इतवारी लाल ने घरेलू कहा-सुनी के साथ अपनी पत्नी अलका के साथ मिलकर मारने लगे बीच-बचाव में आये मेरे बेटे अनकेश को भी मारा-पीटा है। जिसमें हम सबको चोटें आई हैं। वहीं दूसरे पक्ष से इतवारी लाल ने मामला दर्ज कराते हुए बताया कि मुकेश की लड़ाई सबसे बड़े भाई कमलेश से रूपए के लेन-देन को लेकर हो रही थी जब दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास किया तो मुकेश ने उस पर डंडा व कुल्हाड़ी से वार कर दिया। बीच-बचाव में आई मेरी पत्नी अलका को भी अपने बेटे के साथ मिलकर मारा-पीटा है। दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों पक्षों से मिली तहरीर के मुताबिक मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही की जा रही है।

राजस्व विभाग की सांठगांठ- भू-माफिया नजूल की जमीन को खुर्द-बुर्द करने में जुटे

मथुरा- सदर तहसील के अंतर्गत गांव औरंगाबाद में कचहरी रोड पर जमीन को खुर्द-बुर्द करने के लिए लगे हुए हैं सूत्रों के अनुसार के थाना सदर बाजार के इलाके में लेखपाल ,क्षेत्रीय राजस्व निरीक्षक और अपर तहसीलदार को बड़ी मोती रकम मिलने के कारण मथुरा के बाहर के भू- माफिया फर्जी दस्तावेज तैयार कर उसे जमीन को बड़े मुनाफा के साथ बचने के लिए तैयार है यह जमीन नजूल की जमीन है जिस पर सरकारी कब्जा नहीं होने के कारण भू माफियाओं की नजर पड़ी है फिर उसे ठिकाने लगाने की जुगत लग गए हैं इस जमीन को कब्जाने के लिए तैयारी पूर्ण हो चुकी है क्योंकि इलाका पुलिस भी मिल चुकी है एक बड़ी रकम राजस्व टीम और संबंधित विभाग के सभी अधिकारियों पर खर्च की जा चुकी है इस मामले में कोई अधिकारी बोलने को तैयार नहीं है

समस्तीपुर शहर में खुले में फेंका जा रहा है मेडिकल कचरा, निस्तारण का इंतजाम नहीं

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

समस्तीपुर में कचरे के ढेर में मानव अंग मिलने से इलाके सनसनी फैल गई। मामला शहर के काशीपुर वार्ड-34 की है, जहां मंगलवार को कचरे के ढेर से कटा हुआ मानव अंग मिला। सूचना मिलने के बाद नगर निगम के कर्मचारी पहुंचे और जांच की। जिसमें पता चला कि मानव का कटा हुआ पैर था, जो मेडिकल वेस्टेज था। इसके बाद नगर निगम के सफाईकर्मी पहुंचे और कटे पैर को बोरे में डालकर ले गए। वहीं सिविल सर्जन डॉ. एसके चौधरी ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं।

स्थानीय वार्ड पार्षद प्रतिनिधि विजय कुशवाहा ने इस घटना पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि इलाके में बड़ी संख्या में निजी अस्पताल हैं, लेकिन उनके पास मेडिकल कचरा के निस्तारण का कोई प्रबंध

नहीं है। जिसके कारण खुलेआम मेडिकल वेस्ट सड़क पर फेंका जा रहा है। कभी नवजात का शव मिलता है, तो कभी इंसानी अंग कचरे में मिलता है। यह बेहद अमानवीय और खतरनाक है। इससे आम लोग परेशान है, लेकिन अस्पताल प्रबंधन लापरवाह बना हुआ है।

वहीं स्थानीय लोंगो का आरोप है कि क्षेत्र में अवैध रूप से कई अस्पताल चल रहे हैं। बिना किसी निगरानी के मेडिकल का कचरा कूड़े में फेंका जा रहा है। इस वजह से स्थानीय लोंगो को काफी दिक्कतें हो रही हैं। इसको लेकर लोग कई बार जिला प्रशासन से मांग कर चुके हैं कि अवैध रूप से संचालित अस्पतालों की जांच हो। लेकिन शिकायत करने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हो रही है।

वहीं मेडिकल वेस्टेज के निस्तारण में बारे में डॉक्टर नागमणि राज बताते हैं कि खून से सनी सिरिंज, ग्लव्स और पट्टी आदि को नष्ट कर देना चाहिए। अगर मेडिकल कचरे को 1150 डिग्री सेल्सियस के निर्धारित तापमान पर नहीं लाया जाए तो यह ऑर्गेनिक प्रदूषण पैदा करते हैं, इनके प्रदूषण से कैंसर और प्रजनन संबंधी परेशानी होती है। साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी असर पड़ता है। इसे जहां - तहां नहीं फेंकना चाहिए। मेडिकल कचरा जानलेवा और खतरनाक है।

गोंडवाना एक्सप्रेस में यात्री की मौत, पुलिस कर्मियों पर लगाया मारपीट का आरोप

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा- मंगलवार को गोंडवाना एक्सप्रेस में एक यात्री की मौत हो गई इसकी सूचना जीआरपी पुलिस को लगी तो जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची और रेलवे डॉक्टर को सूचना दी तो रेलवे डॉक्टर ने यात्री को चेक करते हुए मृत घोषित कर दिया ।जीआरपी पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

घटना के बारे में जानकारी देते हुए मृतक के पुत्र ने बताया कि वह मूल रूप से टीकमगढ़ मध्य प्रदेश का रहने वाला है और दिल्ली में रहकर अपने पिता रामदयाल के साथ रहकर मेहनत मजदूरी का कार्य करते हैं । सोमवार को टीकमगढ़ से दिल्ली के लिए रवाना हुए और गोंडवाना एक्सप्रेस में बैठकर दिल्ली जा रहे थे तभी आगरा और मथुरा के बीच ट्रेन की खिड़की के पास उनके पिता रामदयाल बैठे हुए थे ट्रेन में ड्यूटी दे रहे पुलिसकर्मी ने खिड़की पर न बैठने के बात कही और उसे एक तरफ ले गए जहां उसके साथ मारपीट की गई और मारपीट करने के बाद रामदयाल बेहोश हो गए और बाद रेलवे स्टेशन पर उनकी मौत हो गई। फिलहाल मृतक के परिजनों ने दो पुलिसकर्मियों पर मारपीट कर जान से मारने का आरोप लगाते हुए जीआरपी थाना में प्रार्थना पत्र दिया है। घटना को लेकर जीआरपी इंस्पेक्टर यादराम सिंह ने बताया है कि मृतक के परिजनों ने प्रार्थना पत्र दिया है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद जांच करते हुए आगे की विधिक कार्रवाई अमल ला जाएगी।

अज्ञात बुजुर्ग का क्षत-विक्षत शव रेलवे ट्रैक के पास पड़ा देख मची अफरातफरी

निगोहां थाना क्षेत्र के बघौना गांव के पास (एफसीआई) रेलवे ट्रैक के पास से जा रहे कुछ राहगीरों ने ट्रैक किनारे एक बुजुर्ग का क्षत-विक्षत शव देखा। बुजुर्ग की दर्दनाक हालत देख मौके पर अफरा-तफरी मच गई। लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद निगोहा पुलिस मौके पर पहुंची।मृतक की उम्र करीब 65 वर्ष बताई जा रही है। वह सादे कपड़ों में था और पास में कोई पहचान से जुड़ा कागज नहीं मिला। स्थानीय लोग भी उसे पहचान नहीं सके। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।पुलिस को आशंका है कि मृतक सुबह किसी समय ट्रेन की चपेट में आ गया होगा। हालांकि यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह हादसा है या आत्महत्या। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति पूरी तरह साफ हो सकेगी।थानाध्यक्ष निगोहा का कहना है कि मृतक की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। क्षेत्र के अन्य थानों को भी सूचना भेजी गई है और गुमशुदगी की रिपोर्टों को खंगाला जा रहा है। साथ ही ट्रैक के आस पास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी चेक की जा रही है।

भ्रष्टाचार

लाखों खर्च के बाद भी हैंडपम्पों की नहीं सुधरी दशा- रिबोर के नाम पर हर साल खेला जा रहा बड़ा खेल, जिम्मेदार मौन

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

हरीश कुमार चौधरी

सिद्धार्थनगर। जिले के नौगढ़ विकास खण्ड क्षेत्र की ग्राम पंचायतों में शुद्ध पानी के लिए लगवाए गए हैंड पम्पों के रिबोर के नाम पर भले ही लाखों रुपये निकालकर खर्च दिखाया जा रहा है। पर क्षेत्र में आज भी लोग शुद्ध पानी के लिए तरस रहे है। इसके पीछे रिबोर के नाम पर जमकर की गई धांधली सबसे बड़ा कारण बन गई है। जिसके चलते बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को मजबूरन आर्सेनिक युक्त पानी पीना पड़ रहा है, बावजूद ज़िम्मेदार चुप्पी साधे हुए हैं। नौगढ़ विकास क्षेत्र की ग्राम पंचायतों में लगे हैंडपम्पो के रिबोर के नाम पर किस तरह भ्रष्टाचार की वैतरणी में गोता लगाया जा रहा है, यह किसी से छुपा नहीं है। जिम्मेदार सबकुछ जानकर भी चुप्पी साधे हुए हैं। जिसकी वजह से लोगो ने खुलेआम हो रहे भ्रस्टाचार को देखने के बावजूद भी शिकायत करना ही बंद कर दिया है।हालात यह है कि शासन की महत्वाकांक्षी योजना के तहत गावों व स्कूलों में ग्रामीणों व छात्र- छात्राओं को शुद्ध पानी उपलब्ध कराकर उन्हें बीमारियों से बचाने के नाम पर लगाए गए हैंडपम्पों के रिबोर करने के नाम पर जहां मोटी रकम का खर्च दिखाया जा रहा है। वहीं हैंडपम्प की करीब 80 फिट गहरी बोरिंग में नियमों को ताक पट रखकर नई पाइप डालने की जगह पहले से लगी पाइपों को भी निकाल कर बेच दिया गया या निजी कार्य में इस्तेमाल कर लिया गया।

रिबोर के नाम पर हो रही खानापूर्ति यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि रीबोर के नाम पर किस तरह से खेल - खेला जा रहा है। यही नहीं इस बाबत जब ग्रामीणों से बात की गई तो उन्होंने बताया कि केवल यह स्कूल ही नहीं क्षेत्र के सभी स्कूलों के साथ - साथ गावों में भी लगे हैंडपम्पों का यही हाल है। जहां ब्लॉक के जिम्मेदार अधिकारी वर्षो से रिबोर के नाम पर खानापूर्ति कर शासन द्वारा भेजी जा रही बड़ी रकम का वारा न्यारा कर क्षेत्रवासियों को शुद्ध पानी पिलाने का केवल सपना दिखा रहे है।

ग्राम पंचायत अधिकारियों व जेई की सांठ-गांठ हो रहा काम इस बाबत ग्रामीणों ने बताया कि शासन की अनदेखी का फायदा उठाकर ज़िम्मेदार नलों के रिबोर के नाम पर बड़ा खेल खेलते हुए शासन द्वारा भेजी जा रही बड़ी रकम का सफाया कर रहे हैं। अब तो हालात यह हो गए है कि नलों का रिबोर ब्लॉक में मौजूद रहने वाले चर्चित ठेकेदार व ग्राम पंचायत अधिकारियों व जेई की सांठ गांठ से होता है। जिसके मिस्त्री नलो में पर्याप्त नई पाइपें डालने की जगह उल्टे पहले से नल में लगी पाइपें तक को निकालकर गायब कर दे रहे हैं। केवल कागजों पर खानापूर्ति साथ ही मानक के अनुसार नई पाइपों को नलों में लगाने के स्थान पर केवल कागजों पर खानापूर्ति की जा रही है। जिसको लेकर

ग्रामीणों ने कई बार एडीओ पंचायत समेत अन्य अधिकारियों से भी शिकायतें की, पर जब कोई सुधार नहीं हो सका तो लोगों ने शिकायतें करना ही बन्द कर दिया है। वहीं जब इस बाबत एक ठेकेदार से बात की गई तो उसने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि हमें केवल बोरिंग लगवाने व मिस्त्री की मजदूरी ही दी जाती है,नलों में जितनी पाइप हमें लगाने का फरमान जारी होता है, हम उतनी ही लगाते हैं। इसके अलावा ब्लॉक में आने जाने वाले एक प्राइवेट कर्मचारी से बात की गई तो उसने कहा कि हैंडपम्पो में किस तरह का भ्रष्टाचार हुआ है या हो रहा है, उसको जानने के लिए सभी ग्राम पंचायतों में लगे सैकड़ों नलों को बाहरी मिस्त्री लाकर केवल खुलवाकर देख लो,सच्चाई सामने आ जायेगी।

अब अगर इन सब की बातों को अगर सही माने तो शासन की महत्वाकांक्षी योजना हर व्यक्ति को शुद्ध पानी देने के दावों की ब्लॉक में किस तरह से धज्जियां उड़ाई जा रही है। यह उच्च स्तरीय निष्पक्ष जांच से ही सामने आएगा। फिलहाल ग्राम पंचायतों में लाखों खर्च होने के बाद भी आमजन को आर्सेनिक युक्त व गंदा पानी ही नसीब हो रहा है,जिसमें सबसे अधिक खामियाजा मासूम बच्चों को ही भुगतना पड़ रहा है।

क्या बोले डीडीओ

इस संबध में जिला विकास अधिकारी जेपी कुशवाहा का कहना है कि इस गर्मी में गांव में लगे इंडिया मार्का टू हैंड पंप खराब है और पानी नहीं निकल रहे तो इसकी शिकायत के आधार पर जांच कराई जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

ट्रांजिट हॉस्टल के नए आवासीय ब्लॉक व एनआईसी सभागार के सौंदयीर्करण डिजीटलीकरण का सांसद, विधायक, जिलाध्यक्ष, डीएम ने किया लोकार्पण

भदोही – ट्रांजिट हॉस्टल/ऑफिसर्स कॉलोनी के नए आवासीय ब्लॉक व कलेक्ट्रेट एनआईसी सभागार के सौंदयीर्करण डिजीटलीकरण का मा सांसद डॉ विनोद बिंद ,मा जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी, मा विधायक औराई दीनानाथ भास्कर, ज्ञानपुर विपुल दुबे, भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा ,जिलाधिकारी विशाल सिंह द्वारा लोकार्पण किया गया। मुख्य विकास अधिकारी डॉ शिवाकांत द्विवेदी ने बताया कि ट्रांसिट हॉस्टल में 8 यूनिट 2 मंजिला 01 ब्लॉक का निर्माण कार्य रू157.24 लाख की लागत से पूर्ण हुआ है। अधिकारियों को आवासीय व्यवस्था मिलने से जनहित में और प्रभावी ढंग से अधिकारी कार्य कर सकेंगे। अपर जिलाधिकारी कुंवर वीरेंद्र मौर्य एवं जिला सूचना विज्ञान अधिकारी अभिषेक मिश्रा ने बताया कि कलेक्ट्रेट स्थित एन आई सी सभागार को और अधिक बड़ा करते हुए सौंदर्यीकरण व डिजिटलीकरण किया गया है जिससे जनहित में शासन की नीतियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा जनहित में सुगमता के साथ संपादित किया जा सकेगा।

उपायुक्त पाकुड़ के निर्देश के तहत् बसतकुंडी पंचायत में योजनाओं का किया गया निरीक्षण

आबुआ आवास एवम बिरसा हरित ग्राम योजनाओं का किया गया गहन निरीक्षण

पाकुड़िया/पाकुड़/झारखण्ड– उपायुक्त पाकुड़ के निर्देश पर बिरसा हरित ग्राम, आबुआ आवास एवम अन्य सरकारी योजनाओं को गति प्रदान करने के क्रम में, स्थलीय निरीक्षण पदाधिकारियों द्वारा किया जा रहा है ताकि योजनाओं से ग्रामीण, लाभान्वित हो सकें और योजनाएं समय पर पूर्ण किया जा सके। निरीक्षण के क्रम में 22अप्रैल पाकुड़िया प्रखण्ड के बासतकुंडी पंचायत में,आबुआ आबास,बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत् गहराई,दूरी,चौड़ाई का गहन निरीक्षण करते हुए आवश्यक निर्देश भी दिए गए। योजनाओं के निरीक्षण के अवसर पर,प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सोमनाथ बनर्जी,सहायक अभियंता रोहित कुमार, बीपीओ जगदीश पंडित,पंचायत की मुखिया श्रीमती, लाभुक व ग्रामीण उपस्थित रहे योजनाओं को उपयोगी बताया।

कुरीतियों को दूर करते हुए शिक्षा पर दें ध्यान- द्विवेदी

चित्रकूट– अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा की बैठक मदन गोपाल शुक्ल की अध्यक्षता में मंगलवार को धर्मनगरी में हुई। बैठक का संचालन डॉ घनश्याम अवस्थी ने किया। महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रेम स्वरूप मिश्रा ने बताया कि विगत माह कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा प्रदेश कार्यकारिणी भंग कर दी गई थी। इसके बाद से केसी पाण्डेय को अध्यक्ष और उन्हें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुना गया था। हरिबाबू मिश्र को प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मदारी सौंपी गई है। उन्होंने बताया कि महासभा के आयोग के गठन के लिए केन्द्र व प्रदेश सरकार से पुरजोर मांग की जाएगी। इस गैर राजनीतिक मंच को सभी लोग मजबूत करें। विशिष्ट अतिथि लोकतंत्र रक्षक सेनानी रामप्रकाश द्विवेदी ने सारगर्भित विचार रखें। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को एकजुट होकर काम करना चाहिए और सामाजिक कुरीतियों को दूर करते हुए शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। बैठक में महासभा के चित्रकूट धाम समिति का गठन किया गया। जिसमें सुरेश द्विवेदी जिलाध्यक्ष, अनिल अवस्थी महामंत्री, ममता द्विवेदी महिला प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष, डॉ घनश्याम अवस्थी जिला प्रवक्ता चुने गए।

पूर्व विधायक विनय शंकर तिवारी के गिरफ्तारी से रोष बापू प्रतिमा के समक्ष मौन सत्याग्रह कर राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापनः रिहाई की मांग

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। पूर्व मंत्री पं. हरिशंकर तिवारी के पुत्र पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव विनय शंकर तिवारी के गिरफ्तारी को लेकर लोगों में रोष है। मंगलवार को मेधा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीन दयाल तिवारी के संयोजन में अनेक राजनीतिक, सामाजिक संगठनों के लोग गांधी कला भवन स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी प्रतिमा के समक्ष एकत्र हुआ और मौन सत्याग्रह करते हुये पूर्व विधायक विनय शंकर तिवारी के रिहाई की मांग किया।

मौन सत्याग्रह के बाद उपस्थित लोग हाथों में बैनर लिये जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे। यहां डीएम के प्रशासनिक अधिकारी माध्यम से राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा गया। राष्ट्रपति को भेजे ज्ञापन में कहा गया है कि पूर्व मंत्री पं. हरिशंकर तिवारी के पुत्र पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव विनय शंकर तिवारी को ई.डी. ने राजनीतिक विद्वेष बश गिरफ्तार कर लिया है। यह स्थितियां दुर्भाग्यपूर्ण और चिन्ताजनक है।

मांग किया गया है कि विनय शंकर तिवारी का राजनीतिक कारणों से उत्पीड़न बंद किया जाय। उन्हें तत्काल प्रभाव से रिहा किया जाय। राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजने के बाद मेधा प्रवक्ता दीन दयाल तिवारी, वरिष्ठ सपा नेता गणेश दत्त 'मुन्ना मिश्र', वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रमोद दूबे, सपा नेता हरीश, गिरिजा कुमार पाण्डेय, संजय उपाध्याय, उमेश पाण्डेय 'मुन्ना', सपा नेता अतुल पाण्डेय आदि ने कहा कि पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव विनय शंकर तिवारी को ईडी ने राजनीतिक कारणों से गिरफ्तार किया है। भाजपा नेताओं के इशारे पर विनय शंकर तिवारी की गिरफ्तारी को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। वक्ताओं ने मांग किया कि सपा के वरिष्ठ नेता विनय शंकर तिवारी को तत्काल प्रभाव से रिहा कराया जाय।मौन सत्याग्रह और ज्ञापन देने वालों में स्वतंत्र कुमार पाण्डेय, प्रमोद यादव, हनुमान गौड़, राजेश चौधरी, रण बहादुर चौधरी, राहुल चौधरी, ब्रम्हदेव मिश्र, मो. हनीफ, नागेन्द्र मिश्र, अंशू उपाध्याय, संदीप उपाध्याय, के.पी. शुक्ल, कृष्ण गोपाल शुक्ल, हिमांशु गोस्वामी, गिरीश चन्द्र गिरी, जय प्रकाश सिंह, हरिनन्दन पाण्डेय, राकेश पाण्डेय, नितीश चौधरी, अवनीश मिश्र एडवोकेट, ओम नरायन पाण्डेय, आशुतोष पाण्डेय, बदरूद्दीन, समीम खान, अतुल कुमार गौड़, अंशू चौरसिया के साथ ही विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक संगठनों के लिये उपस्थित रहे।

स्कूल चलो अभियानः नुक्कड़ नाटक से बच्चों को स्कूल भेजने का दिया संदेश

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले केहरैया ब्लाक के उभाई में मंगलवार को स्कूल चलो अभियान के तहत नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया गया। यूथ फाउंडेशन लखनऊ निपुण शिक्षा की टीम के सदस्य ऐश्वर्या शुक्ल, हसीन खान, दीपक यादव, आदर्श पाल और पूनम त्रिपाठी के द्वारा बच्चों को प्रतिदिन स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न प्रकार की प्रस्तुतियां दी गई। बच्चों को प्रतिदिन स्कूल न भेजने के नुकसान, बच्चों का नामांकन विद्यालय में न कराने के नुकसान, पढ़ाई से हटकर दूसरे कार्यों में लगाने के नुकसान आदि से संबंधित विभिन्न प्रकार की बातें नुक्कड़ नाटक की टीम द्वारा अभिभावकों को बताई गई। खण्ड शिक्षा अधिकारी हरैया विजय आनंद ने बताया कि कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न रह जाए और किसी बच्चे की शिक्षा प्रभावित न हो इसके लिए सरकार गंभीर है। शत प्रतिशत बच्चे शिक्षित हों इसी उद्देश्य के लिए नुक्कड़ नाटक के द्वारा अभिभावकों को जागरूक किया जा रहा है। बताया कि न्याय पंचायत स्तर पर कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है जिसमें संबंधित न्याय पंचायत के नोडल संकुल ही कार्यक्रम के नोडल हैं। इस अवसर पर नोडल शिक्षक संकुल प्रमोद त्रिपाठी, सन्तोष कुमार शुक्ल, विद्यासागर वर्मा, ज्ञानदास, महेंद्र वर्मा, अमित मिश्र, सर्वेश, साकेत कुमार, मेराज अहमद, प्रदीप शुक्ल सहित बड़ी संख्या में बच्चे और उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी रवीश गुप्ता की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आई.जी.आर.एस. की समीक्षा बैठक

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिला अधिकारी द्वारा आइजीआरएस कागजों में सबमिट कर रह गया फर्जी रिपोर्ट की झड़ी लगाते हुए लेखपाल और कानून गौ द्वारा आईजीआरएस को निस्तारण कर देते हैं यह लोग बिना शिकायतकर्ता से मिले ही रिपोर्ट लगाकर ओके कर देते हैं जिससे जिले के जिम्मेदार अधिकारी अपनी पीठ थपाते है है मंगलवार को जिलाधिकारी रवीश गुप्ता की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आई.जी.आर.एस. की समीक्षा बैठक आहूत की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि पोर्टल पर अपने विभाग से सम्बन्धी प्रकरण ना होने पर प्रकरण को लाल बटन पर क्लिक कर वापस कर दिया जाय। आईजीआरएस प्रकरणों की रैंकिंग में गिरावट पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताते हुए सम्बंधित अधिकारियों को रैंकिंग में सुधार के सख्त निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी अपने-अपने विभाग से सम्बंधित आईजीआरएस के प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की प्राथमिकता है कि सभी जन-शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण व ससमय किया जाए।जिलाधिकारी ने सम्बंधित अधिकारियों से रैंकिंग मॉड्यूल में हुए बदलाव को भलीभांति समझने और शिकायत निस्तारण की कार्यवाही को त्वरित गति से करने के निर्देश प्रदान किये। जिलाधिकारी ने कहा कि किसी भी दशा में कोई प्रकरण डिफॉल्टर की श्रेणी में नहीं आना चाहिए अन्यथा सम्बंधित के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी सार्थक अग्रवाल, एडीएम प्रतिपाल सिंह चौहान, सीएमओ डा. राजीव निगम, डीडीओ अजय कुमार सिंह, पीडी राजेश कुमार, उप जिलाधिकारी मनोज प्रकाश, शत्रुध्न पाठक, रश्मि यादव, एआरटीओ पंकज कुमार, अधीक्षण अभियन्ता विद्युत मनोज कुमार, भूमि संरक्षण अधिकारी डा. राज मंगल चौधरी, डीसी मनरेगा संजय शर्मा, डीपीआरओ रतन कुमार, ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर सौरभ द्विवेदी एवं संबंधित विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

शादी में हुई मारपीट- दूल्हे के भाई ने दुल्हन के परिवार को पीटा

● **जय माल के द्वारा छेड़खानी के कारण मारपीट जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल पर बचकर मामले को शांत कराकर शादी की रश्मि पूरी हुई**

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के नगर पंचायत कप्तानगंज के वार्ड नंबर एक अंबेडकर नगर वार्ड से अशोक कुमार पुत्र ओंकार की बारात कलवारी थाना क्षेत्र के गोसैसीपुर में जयंत्री प्रसाद पुत्र स्वर्गीय लालता प्रसाद के घर पहुंची थी। शादी समारोह में बारातियों को नाश्ता, खाने के बाद जयमाल आशीर्वाद कार्यक्रम के दौरान दूल्हे के भाई अमन व विनय पुत्र ओंकार से दुल्हन के भाई काजू प्रसाद सत्यम और मनजीत से छेड़खानी को लेकर कहासुनी हो गई, जिससे नाराज विनय, अमन लाठी-डंडों,लात-घुसो से मार कर घायल कर दिया। आसपास के लोगों ने बीच बचाव कर दोनों पक्षों को शांत करवाया। परिजनों ने घायलों को निजी वाहन से सीएचसी कुदरहा पहुंचे, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चोट की गंभीरता को देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। दुल्हन के पिता जयंत्री प्रसाद की तहरीर पर कलवारी पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। मुकदमे की जांच की जा रही है वहां मौजूद लोगों ने बताया की जय माल के समय में छेड़खानी को लेकर दोनों पक्षों में कहा सुनी मारपीट हो गई जिससे दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए बरपश्च और कन्या पक्ष मिलकर दोनों को शांत कराया उसके बाद शादी की रस्म पूरी हुई इधर घायलों को कुद् रहा सी एच सी भेजा गया जहां पर डॉक्टरों ने प्राथमिक को कर के बाद बस्ती जिला अस्पताल रेफर कर दिया जहां पर इलाज चल रहा है।

वर्षों से टूटी पुलिया की रेलिंग हादसे को दे रही दावत

स्वतंत्र प्रभात

अम्बेडकर नगर। हमेशा जन सामान्य को सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करने का दावा करने वाली सरकार के सपने को चूर चूर करने की मंशा रखने वाले अधिकारी व कर्मचारी जहां भी रहेंगे वहां की जनता को सुविधाओं के लाले ही पड़े रहेंगे। जी हां हम बात कर रहे हैं अम्बेडकर नगर के एक बेहद जिम्मेदार पी डब्लू डी विभाग की, यहां के जिम्मेदार अधिकारियों की निष्क्रियता इस कदर बढ़ गई है कि टूटी सड़कें, सड़कों में गड्ढे, टूटी पुल या पुल की रेलिंग, रोड पर उड़ती तारकोल लगी काली काली गिट्टियां और शिथिल पड़े निर्माणाधीन कार्य इस जिले की निशानी बन गए हैं। इसकी बानगी मिझौड़ा मार्ग पर भी बखूबी देखने को मिल जाती है। जानकारी के लिए बताते चलें कि अकबरपुर तहसील के ग्राम तिवारी पुर से एक रोड मिझौड़ा चीनी मिल होते हुए जनपद अयोध्या के बीकापुर तहसील में अयोध्या-सुल्तानपुर मार्ग से जुड़ता है। इसी मार्ग पर एक स्थान जिसे फत्ते की बगिया (प्रतापपुर चामुर्खा) कहा जाता है यहां रोड पर बनीं एक पुल की रेलिंग दोनों तरफ टूटी हुई है जो कि हर पल दुर्घटना को दावत दे रही है। लोगों ने बातचीत में बताया कि इस पुल की रेलिंग काफी दिनों से टूटी हुई है लेकिन कोई इसे बनवाने की सुधि नहीं ले रहा है। इसी रोड पर गन्ने के सीजन में हजारों की संख्या में ट्रैक्टर और ट्रकों से गन्ने की ढुलाई भी की जाती है। लोगों ने मौखिक रूप से यह भी बताया कि इस टूटी रेलिंग के करना यहां पर वाहन दुर्घटनाग्रस्त भी हुए लेकिन किसी भी जिम्मेदार अधिकारी की निगाह इस टूटी हुए रेलिंग की तरफ नहीं जा रही है। जनमानस की सुरक्षा की दृष्टिकोण से यह पुल बनवाया जाना अति आवश्यक है। इसके बारे में जानकारी लेने पर मौजूदा सहायक अधिशाषी अभियंता मो0 आमिर ने बताया कि रेलिंग ट्रक भिड़ने की वजह से टूट गई है। देखकर मरम्मत कराया जाएगा।

कप्तानगंज में तीन घरों में चोरी, नकदी, जेवरात सहित बर्तन भी उठा ले गए चोर

● **बस्ती पुलिस चोरों पर शिकंजा कसने में नाकाम है पूर्व में हुई चोरियों का अभी खुलासा नहीं हुआ की नए थाना अध्यक्ष को चोरों ने दी चोरी करके सलामी**

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के कप्तानगंज थाना क्षेत्र के महुवारी गांव में बीती रात अज्ञात चोरों ने तीन अलग-अलग घरों को निशाना बनाकर नकदी, जेवरात और बर्तन चोरी कर लिए। महुवारी गांव निवासी दिगन्त कुमार पुत्र छोटे लाल ने बताया कि वे लोग गेहूं की मड़ाई के लिए घर से दूर गए थे। लगभग रात 1:05 बजे जब वे वापस लौटे तो देखा कि घर का सारा सामान बिखरा पड़ा था। चोर घर से गले की चेन, कान की बाली, तीन जोड़ी पायल, एक अंगूठी और दो हजार रुपये नकद चुरा ले गए। साथ ही बगल के गांव नरोत्तमपुर में राम कुबेर उपाध्याय के घर से भी चोरों ने 15,300 रुपये नकद और कान की बाली चुरा ली। वहीं, इसी गांव के राम सुरेश चौधरी के घर से पांच अदद बर्तन चोरी कर लिए गए।पीड़ितों ने घटना की जानकारी थाना कप्तानगंज में दी है और तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कर चोरों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की मांग की है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है।

24 को होगा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन

चित्रकूट– संत निरंकारी सत्संग कर्वी में आगामी 24 अप्रैल को मानव एकता दिवस के अवसर पर प्रातः 10 से दोपहर एक बजे तक संत निरंकारी मिशन की समाज कल्याण शाखा संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वाधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। संत निरंकारी मिशन के कार्यकर्ता शिवभवन ने बताया कि मानव एकता दिवस के अवसर पर देश की सभी शाखाओं में स्वैच्छित रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। बताया कि रक्तदान शिविर का कार्यक्रम सन् 1986 आरम्भ किया गया था, जो अभी जारी है। संत निरंकारी मिशन के मीडिया सहायक सचिन श्रीवास्तव ने बताया कि पिछले लगभग चार दशकों में आयोजित 8,644 शिविरों में 14,05,177 युनिट रक्त का दान मानव की भलाई के लिए दिया जा चुका है।

मजदूरी मांगा तो दबंगों ने पीटाः डीआईजी से लगाया न्याय की गुहार

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में नर्सिंग होम में टाइल्स लगवाने वाले ठेकेदार गोविन्द निषाद ने जब मजदूरी मांगी तो उसे बुरी तरह से मारा पीटा गया। पुलिस में भी जब उसकी सुनवाई नहीं हुई तो उसने सरदार सेना जिलाध्यक्ष विनय चौधरी के साथ डीआईजी से मिलकर न्याय की गुहार लगाया। डीआईजी ने इस मामले में तत्काल कार्रवाई का आश्वासन दिया है। डीआईजी को मंगलवार को दिये पत्र में कहा गया है कि मुण्डेरवा थाना क्षेत्र के मूडाडीहा निवासी गोविन्द निषाद ने कोतवाली थाना क्षेत्र के पोखरभिटवा निवासी अमरनाथ सिंह से उनके संतकबीर नगर जनपद के खलीलाबाद कोतवाली थाना क्षेत्र के बडगो में बनवाये जा रहे नर्सिंग होम में टाइल्स लगवाने का ठेका लिया। उनके नर्सिंग होम में लगभग 5 लाख रूपये का टाइल्स लगाने का कार्य कराया। पैसा मांगने पर अमरनाथ सिंह टाल मटोल करते रहे। गत 20 अप्रैल 2025 को जब गोविन्द निषाद ने पैंसा मांगा तो अमरनाथ सिंह, उनके पुत्र अमित सिंह, नर्सिंग होम के तीन कर्मचारियों ने मिलकर उसे लोहे के राड, लात घूसों से मारा पीटा इससे वह बेहोश हो गया। होश में आने पर उसने संतकबीर नगर जनपद के कोतवाली खलीलाबाद में घटना की सूचना दिया। पुलिस ने उसकी तहरीर लेने से इंकार कर दिया। कहा कि वह बड़े आदमी है और उनके विरूद्ध मुकदमा दर्ज नहीं हो पायेगा। डीआईजी से समूचे मामले की जांच कराकर दोषियों के विरूद्ध मुकदमा पंजीकृत कराकर न्याय दिलाने और बकाया धन दिलाने की मांग किया गया है। डीआईजी को ज्ञापन देने वालों में संदीप कुमार निषाद, अंकुर निषाद, गोविन्द कुमार, अनव, साधु शरन, सुमिरन, राम अशीष, अक्षय कुमार, सूरज, राहुल, शिवपाल, मुकेश, पतिराम निषाद, बलिराम, प्रदीप कुमार के साथ ही सरदार सेना के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल रहे।

लंबित प्रोत्साहन राशि भुगतान के लिए सहिया संघ ने विधायक को सौंपा माँग पत्र

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया, पाकुड, झारखंड– मोंगलाबांध स्थित विधायक आवास मे सोमवार 21को सहिया संघ ने विधायक प्रो. स्टीफन मरांडी को प्रोत्साहन राशि भुगतान हेतु एक मांग पत्र सौपा। साहियाओ का कहना है की हम सब विगत कई बर्षो से स्वस्थ विभाग मे कार्यरत है हमारे जिला के लंबित प्रोत्साहन राशि विभागीय उदासीनता के कारण लंबित पड़ा है पाकुड़ जिला छोड़ कर बाकी सभी जिला मे भुगतान कर दिया गया है पाकुड़ जिला मे 1160 स्वस्थ सहिया है । विधायक प्रो. स्टीफन मरांडी ने सहिया संघ के सभी सहिया को आश्वासन देते हुए कहा की मै जल्द ही उपायुक्त सहित स्वस्थ विभाग से इस बिषय पर बात कर के आप सभी के मांग को रखूँगा ताकि आप सभी के लंबित प्रोत्साहन राशि का भुगतान जल्द से जल्द हो सके मौके पर दीपा कुमारी तुरी, निरुपमा दास, सादिमा बीबी, कोशिला कुमारी सहित अनेक स्वस्थ सहिया उपस्थित थी।

30 तक करा लें ई-केवाईसी

चित्रकूट– जिला पूर्ति अधिकारी आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 से आच्छादित जनपद के समस्त राशनकार्ड धारक अपने राशनकार्ड से संबंधित समस्त सदस्यों की ई-केवाईसी अपने उचित दर विक्रेता की दुकान पर जाकर आगामी 30 अप्रैल तक अवश्यक करा लें अन्यथा उनकी यूनिट डिलीट होने की स्थिति में वह व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे। अतः ऐसे कार्ड धारक जिन्होंने अपने राशनकार्ड के समस्त सदस्यों की ई-केवाईसी अब तक नहीं कराई गई है, वह 30 अप्रैल से पूर्व अनिवार्य रूप से ई-केवाईसी करा लें।

कार्यालय ग्राम पंचायत करमा सुजिया विकासखंड गौर बस्ती

अल्पकालीन निविदा सूचना

ग्राम पंचायत करमा सुजिया विकासखंड गौर बस्ती में मनरेगा, राज्य वित्त / पन्द्रहवां वित्त, बी. आर. जी. एफ. एक अन्य योजना के अर्न्तगत वर्ष 2025/2026 कराये जाने वाले कार्यो पर सामग्री आपूर्ति हेतु मुहरबंद निविदाएं इच्छुक आपूर्तिकर्ताओ से दिनोंक 23/04/2025 से दिनाँक 30/04/2025 को 2:00 बजे तक आमांत्रित की जाती है। मुहरबंद निविदाएं ग्राम प्रधान करमा सुजिया ग्राम पंचायत सचिवकी उपस्थित में निविदाताओं/अधिकृत प्रतिनिधियो के समक्ष उसी दिन उपराहन 2:00 बजे निविदा खोली जायेगी। किसी भी कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय से नियमानुसार निविदा मूल्य प्राप्त की जा सकती है। निविदा दाता नियतानुसार 1-टिन नं0 2-पेन नं0 की मूल प्रतियों प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

शर्ते –

1. अनुबंध गठन के समय धरोहर धनराशि 6 प्रतिशत एन.एस.सी/एफ.डी. आर. अथवा नियमानुसार अनुमान्य ग्राम पंचायत पक्ष में बंधक होगी, मूल रूप में जो ग्राम करमा सुजिया के पक्ष में बंधक होगी, मूल रूप में जमा करना होगा।
2. न्यूनतम दर वाले निविदादाता/आपूर्तिकर्ता आदेश उपरान्त 7 दिनो के अन्दर सामग्री की आपूर्ति करनी होगी।
3. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की सीमा क्षेत्र के किसी भी स्थल पर हो सकती है। अधोमानक सामग्री क्षेत्र के आपूर्ति होने पर आपूर्ति आदेश निरस्त कर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगी।
4. नियमानुसार देय आयकर, व्यापारकर, रायल्टी, स्टैम्प ड्यूटी आदिर देना आवश्यक होगा 1
5. सशर्त निविदाएं स्वीकार नही की जायेगी। निविदा प्रपत्र का मूल्य किसी भी दशा में वापस नहीं होगा।
6. प्राप्त सभी निविदा प्रपत्रो में पहले यह परीक्षण किया जायेगा कि निविदादाता ने समस्त वाच्छित प्रमाणपत्र को संलग्न किया है। या नहीं इनमें किसी प्रकार की कमी पाये जाने पर निविदादाता द्वारा दी गयी दरें तुलनात्मक विवरण में अंकित नही की जायेगी।
7. निविदा को विना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम करमा सुजिया के पास सुरक्षित अधिकार होगा।

राजेश कुमार
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत करमा सुजिया
विकास खंड गौर जनपद बस्ती

कुलदीप कुमार
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत करमा सुजिया
विकासखण्ड गौर जनपद बस्ती

संक्षिप्त खबरें

नगर पंचायत कपिलवस्तु के लेदवा में सीमांकन के लिए पहुंची राजस्व टीम

सिद्धार्थनगर। जिले के नगर पंचायत कपिलवस्तु के बर्डपुर नंबर 08 के लेदवा में मंगलवार को एक व्यक्ति के काबिज भूमि को खाली कराने के उद्देश्य से सीमांकन का कार्य करने के लिए राजस्व और नगर पंचायत की टीम गई । बताते चलें कि पीड़ित द्वारा बताया जा रहा है कि उक्त भूमि पर उनका पट्टा हुआ है, पीड़ित एहसाउल्लाह ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर न्याय का गुहार लगाया है। पीड़ित का आरोप है कि कई वर्षो से जब तक गांव नगर पंचायत का दर्जा नही हुआ था तो जमीन पट्टा किया गया था, लेकिन अब शहरी में जब हुआ तो कपिलवस्तु नगर पंचायत के अधिकारी के द्वारा कहा जा रहा है की जमीन सरकारी है। पीड़ित ने ये भी कहा कि यह मामला न्यायलय में पड़ा हुआ है अभी तक किसी भी प्रकार से न्यायालय आदेश नही किया है और जब तक न्यायलय का आदेश आ नही जाता तबतक कोई भी न कार्यवाही करने की मांग किया है। इस संबध में नायब तहसीलदार विजय कुमार श्रीवास्तव का कहना है कि केवल सीमांकन का कार्य आज हुआ है।

एनएसएस शिविर में पर्यावरण संरक्षण के लिए छात्रों ने किया जागरूक......

मोहनलालगंज क्षेत्र में स्थित महेश प्रसाद डिग्री कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में छात्र और अधिकारियों ने मिलकर पर्यावरण संरक्षण को लेकर विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया और जागरूकता फैलाई।कार्यक्रम की शुरुआत पर्यावरण सुरक्षा की शपथ के साथ हुई। इसके उपरांत पॉलिथीन प्रतिबंध, जल संरक्षण, और अधिक से अधिक वृक्षारोपण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। छात्रों ने बताया कि किस प्रकार पॉलिथीन का उपयोग पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है और इसके स्थान पर वैकल्पिक उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। शिविर में भाग ले रहे छात्रों ने नुक्कड़ नाटक और प्रभावशाली श्लोगनों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्होंने प्लास्टिक उपयोग के दुष्परिणाम, जल संकट, और वनों की कटाई जैसे मुद्दों को सरल और प्रभावी तरीके से दर्शाया। छात्र-छात्राओं की प्रस्तुतियों को उपस्थित दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अर्चना सिंह, प्रोफेसर डॉ. डी.वी. सिंह, एवं सीमा मैम विशेष रूप से उपस्थित रहीं। उन्होंने छात्रों को ऐसे आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने हेतु प्रेरित किया।अंत में सभी उपस्थित लोगों ने यह संकल्प लिया कि वे अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे बदलावों के माध्यम से धरती को सुरक्षित और स्वच्छ बनाए रखने में योगदान देंगे।

मंदिर और बस्ती के पास लगने वाली मीट की दुकानें हटेंगी- एसडीएम

लालगंज (रायबरेली)। तहसील क्षेत्र के सेमरी चौराहे से खीरो रोड की नहरिया पटरी पर बुधवार और शनिवार को लगने वाले बाजार में मीट की दुकानें मंदिर और बस्ती के बेहद करीब लगाई जा रही हैं। इससे वहां के रहने वाले लोगों और श्रद्धालुओं में भारी नाराजगी है। ग्रामीणों का कहना है कि मीट की दुकानों से पशु पक्षी मांस के टुकड़े उठाकर घरों और मंदिर के आसपास गिरा देते हैं। जिससे माहौल अशुद्ध हो रहा है और लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही हैं। ग्रामीणों के शिकायत करने पर एसडीएम ने पुलिस को निर्देश दिए, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

मंगलवर को ग्रामीणों ने दोबारा एसडीएम से मुलाकात कर बताया कि पुलिस ने दुकानदारों को रोड से 15 से 20 फीट पीछे हटने को कहा है। लेकिन इससे भी समस्या का समाधान नहीं हुआ है। कहा कि दुकानों से मात्र 50 मीटर दूरी पर बस्ती और दुर्गा मंदिर हैं। एसडीएम मिथिलेश त्रिपाठी ने कहा कि ग्राम प्रधान और व्यापार मंडल से वार्ता कर उपयुक्त जगह चिन्हित की जाएगी। आश्वासन दिया कि जल्द कार्रवाई कर लोगों को राहत दिलाई जाएगी।

नाबालिग बेटी को उठा ले गए दबंग, माता-पिता की पिटाई कर किया घायल

● पुलिस ने दर्ज किया अपहरण का मामला, दुराचार और पॉक्सो एक्ट में नहीं की कार्यवाही

स्वतंत्र प्रभात

आलापुर, अम्बेडकरनगर जनपद अम्बेडकरनगर के थाना जहांगीरगंज क्षेत्र के मखदूमपुर गांव में दबंगई और पुलिस की लापरवाही का चौंकाने वाला मामला सामने आया है। गांव के ही छोटू पुत्र राजमान निषाद ने एक नाबालिग लड़की को जबरन उठाकर अपने घर में तीन दिन तक बंदी बनाकर रखा। जब पीड़िता के माता-पिता बेटी को वापस लाने पहुंचे, तो दबंगों ने उन्हें बुरी तरह पीटकर घायल कर दिया और जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित परिवार का आरोप है कि आरोपित युवक जबरन नाबालिग से शादी करना चाहता है और इसके लिए पूरे परिवार ने मिलकर उन्हें धमकाया। उन्होंने जहांगीरगंज थाने में लिखित शिकायत दी, लेकिन पुलिस ने केवल अपहरण का मुकदमा दर्ज कर मामले को हल्का करने का प्रयास किया।

पॉक्सो एक्ट और दुराचार की धाराएं न लगाने पर उठे सवाल

घटना में नाबालिग लड़की के साथ दुराचार की भी आशंका जताई जा रही है, बावजूद इसके न तो पॉक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया और न ही संबंधित धाराएं जोड़ी गई। जांच अधिकारी उपनिरीक्षक प्रमोद खरवार पर पीड़ित पक्ष ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि वे विपक्षी परिवार से मिले हुए हैं और जानबूझकर अभियुक्त को बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

थानाध्यक्ष का बयान- "जांच जारी है"

इस बाबत जब थानाध्यक्ष से बात की गई तो उन्होंने कहा कि मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है। लेकिन खबर लिखे जाने तक अभियुक्त की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है, जिससे पीड़ित परिवार और गांव में

आक्रोश व्याप्त है।

जनता में नाराज़गी, पुलिस पर सवाल

पूरा मामला क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि जब खुलेआम एक नाबालिग के साथ ऐसी वारदात हो सकती है और पुलिस उसे गंभीरता से नहीं लेती, तो आम जनता की सुरक्षा पर सवाल उठते हैं। अब देखना होगा कि पुलिस अधीक्षक और जिला प्रशासन इस मामले में क्या सख्त कदम उठाते हैं और क्या उपनिरीक्षक प्रमोद खरवार के खिलाफ कोई कार्यवाही होती है?

मंगटईया गांव में बुजुर्ग ने गमछे के सहारे लटकर जान दी...

निगोहां निगोहां थाना क्षेत्र के मंगटईया गांव में 58 वर्षिय एक किसान ने गमछे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। परिवारीजनों की सूचना पर पहुची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मंगटईया निवासी बृजभान सिंह 58 जो अपनी पत्नी प्रेमा देवी के साथ रहते थे मृतक के कोई औलाद नही थी मृतक चार भाई थे जिसमें सभी अलग अलग मकानों में परिवार समेत रहते है।ग्रामीणों की माने तो बृजभान सिंह शराब का लती था।,मंगलवार शाम को ब्रजभान शराब के नशे में घर आया और कोठरी का दरवाजा बन्द कर बल्ली के सहारे गमछे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। काफी देर दरवाजा नही खुलने पर पत्नी ने आवाज लगाई कोई आहट न मिलने पर जाकर देखा तो अंदर से दरवाजा बन्द था जिसके बाद अन्य लोगो को मौके पर बुलाया पहुचे लोगों ने निगोहां पुलिस को सूचना दी पहुची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एसओ निगोहां अनुज कुमार तिवारी ने बताया कि परिवारीजनों ने किसी तरह का कोई आरोप नही लगाया। मृतक नशे का लती होने की बात सामने आई है शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ ने स्व0 बी0एन0 सिंह की प्रतिमा के सामने धरना दिया

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में 21 अप्रैल 2025 उत्तर प्रदेश सेवानिवृत कर्मचारी एवं पेंशनर्स एसोसिएशन द्वारा कल दिनांक 22 अप्रैल 2025 को स्व0 बी0एन0 सिंह की प्रतिमा (जिलाधिकारी आवास के सामने) अपराह्न 2ः00 बजे से आयोजित धरना में शिक्षक महासंघ के आवाहन पर लखनऊ जनपद के पदाधिकारी एवं सक्रिय कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रादेशिक उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता डा0 आर0पी0 मिश्र ने बताया कि भारत सरकार द्वारा लोकसभा में पारित कराए गए वित्त विधेयक, 2025 के माध्यम से सिविल सेवा पेंशन नियमावली में बदलाव कर दिया गया है जिससे उसे सेवानिवृत्ति की तिथि के आधार पर पेंशनर्स में भेद करने का अधिकार प्राप्त हो गया है। इस बदलाव से पुराने पेंशनर्स के सामने आठवें वेतन आयोग के लाभों की परिधि से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। इसके विरोध में तथा पुरानी पेंशन की बहाली सहित अन्य मांगों को लेकर शिक्षक महासंघ ने भी प्रदेशव्यापी धरना में सम्मिलित होने का निर्णय लिया है। संगठन के जिला अध्यक्ष अनिल शर्मा एवं जिला मंत्री महेश चंद्र ने बताया की कल प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्व0 बी0एन0 सिंह की प्रतिमा के समक्ष आयोजित धरना में संगठन के पदाधिकारी एवं सक्रिय कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

निगोहां के राती गांव में अवैध खनन चरम पर, पुलिस बनी मूकदर्शक.......

स्वतंत्र प्रभात

निगोहां। लखनऊ, निगोहां थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राती गांव में बीते एक सप्ताह से अवैध खनन धड़ल्ले से जारी है। ग्रामीणों के अनुसार, दिन-रात भारी मशीनों से मिट्टी और बालू का अवैध खनन किया जा रहा है, जिससे क्षेत्र की सड़कें क्षतिग्रस्त हो रही हैं और पर्यावरण को भी नुकसान पहुंच रहा है जबकि नियम यह है कि दिन में आप बगैर तिरपाल के मिट्टी का खनन नहीं कर सकते हैं नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए डंपर गांव में बनी रिंग रोड के माध्यम से हाइवे तक जाते हैं शाम 6ः00 के बाद खनन पर पूरी तरीके से रोक है फिर भी खनन करने वालों के ऊपर पुलिस का डर तनिक भी भाई नहीं दिखाई देता स्थानीय लोगों ने इस अवैध गतिविधि की शिकायत निगोहां थाने में की, लेकिन हैरानी की बात यह है कि अब तक कोई ठोस कार्यवाही

नहीं की गई है। ग्रामीणों का आरोप है कि खनन माफिया पुलिस की शह पर बेधड़क काम कर रहे हैं।ग्रामीणों ने उच्च अधिकारियों से हस्तक्षेप की मांग की है और चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही कार्रवाई नहीं हुई, तो वे सड़क पर उतरकर प्रदर्शन करेंगे।

एस0 एम0 एस0 ने लोगो को जाग्रित कर व पेड लगाकर पृथ्वी दिवस मनाया

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में काम लगा देंगेहम सब जानते हैं कि "बढ़ती आबादी, घटते पेड़" और अनियंत्रित पृथ्वी के अवयवो के दोहन से धरती पर भारी संकट गहरा गया है"। विगत 10 (दस) वर्षो में भारत देश की आबादी तेजी बढ़ कर 2015 के सापेक्ष 127 से लगभग 145 करोड़ हो गईजो लगभग 15त्र का इजाफा दर्शाता है। वहीं विश्व की आबादी 10 वर्षो में 65 करोड़ का इजाफा हुआ है जो वर्ष 2015 के सापेक्ष 747 करोड़ से बढ़कर लगभग 823 करोड़ हो चुकी है जो मात्र 10त्र ही है। बढ़ी हुई आबादी का सीधा असर प्रकृति पर मौजूद प्राकृतिक सम्पदा को खत्म करने पर सीधे पड़ रहा है। आज सबसे ज्यादा बड़ा खतरा अब उर्जा की हो रही और हमे अक्षय उर्जा का अधिक से उप्योग किया जाना चाहिये। इस वर्ष के विश्व पृथ्वी दिवस का थीम भी÷ अपनी उर्जा अपनी पृथ्वी÷ रखा गया है। यह भी देखा गया है जहां की आबादी घनी होती जा रही है,। वही प्राकृतिक संसाधन की

कमी पड़ने लगती हैं। इसी क्रम में एक तरफ जहाँ पानी का भी संकट गहरा रहा है वही दूसरी तरफ प्रदूषण बढता जा रहा है जिससे भीषण गर्मी एवम अप्रत्यासित चक्रवाती वारिस पहाडियो का खिसकना जीवन को दूभर कर दिया है। यदि समय रहते न चेते तो उपलब्ध पानी और हवा के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। उपरोक्त बाते पृथ्वी दिवस के अवसर पर स्कूल ऑफ मैनेजमेण्ट साईसेज, लखनऊ में छात्र-छात्राओं में चेतना जगाने हेतु कही गयी। आज दिनांक 22 अप्रैल, 2025 को पृथ्वी दिवस के अवसर पर धरती को हरा-भरा रखने, इसे प्रदूषण मुक्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाने, व अधिक से अधिक पेड़ लगाने तथा पृथ्वी की सम्पदा के दोहन को कम करने एवं पानी बचाने के प्रयास हेतु श्री शरद सिह, सचिव व कार्यकारी-अधिकारी, व डॉ0 भरत राज सिंह पर्यावरणविद् व महानिदेशक आदि ने अपने वक्तव्य में वचनबद्धता की प्रेरणा दी तथा संस्था में बृक्षारोपड का भी कार्य छात्र/छात्राओं और शिक्षको द्वारा किया गया। इस अवसर पर सह-निदेशक, डा0 धर्मेद्र सिह, अधिष्ठाता, डा0 पी0के0 सिँह, डॉ0 हेमंत कुमार सिँह, विभागाध्यक्ष डॉ0 आशा कुलश्रेष्ठ, डा0 पुष्पान्जली सिह, डा0शोभना सिह, सुजाता सिन्हा, डॉ0 अजय सिँह यादव, डा0 श्रिंखला श्रीवास्तव और शिक्षकगण एवं छात्र-छात्रायें भी उपस्थित रहे।

सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन का चुनावी माहौल गर्म, कोषाध्यक्ष पद पर महिला दावेदारी बनी चर्चा का केंद्र बिन्दु

● ....सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन, लखनऊ- 25 अप्रैल को मतदान, प्रत्याशियों ने झोंकी अपनी ताकत"

...अध्यक्ष, महामंत्री और संयुक्त मंत्री पद पर कड़ा मुकाबला; चाय ठेलों से लेकर चैम्बरों तक गूंज रहा प्रचार

स्वतंत्र प्रभात

विनीत कुमार मिश्रा

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में इन दिनों सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन, लखनऊ की वर्ष 2025-26 की नई कार्यकारिणी चुने जाने के लिए जैसे - जैसे चुनाव तिथि करीब आ रही हैं वैसे - वैसे प्रत्याशियों की धड़कने भी बढ़ती जा रही हैं। प्रत्याशी इस समय पूरे दमखम के साथ चुनाव प्रचार मे अपनी पूरी ताकत झोंक रहे हैं।

मीराबाई मार्ग स्थिति राज्य कर भवन मे स्थित सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन कार्यालय से लेकर वकीलों के चैम्बरों तक चुनाव प्रचार की धूम मची पड़ी हैं। इस समय राज्य कर भवन और उसके आसपास स्थित चाय के ठेले और गुमटियों पर भी प्रत्याशी छोटी - छोटी टुकड़ियों मे अपने समर्थकों के साथ चुनावी गणित बनाते दिख रहे हैं। सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन के सदस्य अधिवक्ता सुनील गुप्ता, राजीव त्रिवेदी, अखिलेश शुक्ला और सुरेंद्र यादव ने बातचीत मे बताया कि इस वर्ष अध्यक्ष पद हेतु संजय मिश्रा एवं जलज चतुर्वेदी, और महामंत्री पद पर गतवर्ष के उपविजेता शिव कुमार पाण्डेय और विनीत चंद्रा के बीच कांटे की टक्कर दिखाई दे रही हैं।

वहीं इस बार के अन्य सदस्यों अधिवक्ता राजेश गौतम, संजय यादव, अंजनी वर्मा, अनिल सिंह ने बताया कि इस समय विभिन्न पदों के प्रत्याशी अपने प्रचार हेतु मतदाताओं के साथ व्यक्तिगत मुलाकात एवं जन संपर्क करके अपनी बात रख रहे हैं, इन लोगों ने भी माना हैं कि इस वर्ष के चुनाव मे कई प्रत्याशियों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है। वहीं संघ के वर्तमान कोषाध्यक्ष अधिवक्ता रमेश श्रीवास्तव ने बताया की संघ द्वारा नियुक्त एल्डर कमेटी चुनावी प्रक्रिया का कुशलता के साथ संचालन कर रही है और निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव के लिए दिन रात मेहनत कर रही है। चुनावी माहौल पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि जहां अध्यक्ष और महामंत्री पद पर कांटे की टक्कर देखने को मिल रही है वहीं इस बार कोषाध्यक्ष पद पर का चुनाव भी काफी रोचक हो गया है।

इसी तरह जब महामंत्री पद के प्रत्याशी और गतवर्ष के उपविजेता शिव कुमार पाण्डेय (एडवोकेट) से बात हुई तो उन्होंने भी स्वीकार किया किया कि इस वर्ष भी लड़ाई इतनी आसान नहीं है लेकिन गतवर्ष मिले वोट और इस बार की चुनावी गणित उन्हें जरूर जीत दिलाएगी, उन्होंने बताया की मतदान 25 अप्रैल को होगा और मतगणना 26 अप्रैल को होगी। उन्होंने यह भी बताया कि इस वर्ष वरिष्ट कार्यकारिणी सदस्य पद हेतु भी काफी रोमांच देखने को मिल रहा है जिसमे कुल 6 पदों के लिए 9 प्रत्याशी मैदान मे हैं, वहीं कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्यों के 6 पदों हेतु कुल 8 प्रत्याशी अपना भाग्य आजमा रहे हैं। अधिवक्ता शिव कुमार पाण्डेय ने बातचीत को आगे बढ़ाते हुए बताया कि संयुक्त मंत्री (3 पद) जैसे महत्वपूर्ण पद पर भी 4 प्रत्याशी अपनी दावेदारी पेश कर रहे है।

ज्ञात हो कि अध्यक्ष (1पद) पर दो प्रत्याशी, उपाध्यक्ष (1पद) पर 2 प्रत्याशी, जहां अपना भाग्य आजमा रहे हैं, तो वही उपाध्यक्ष मध्य (2 पद) के लिए केवल 2 ही प्रत्याशियों के आवेदन आने से यह प्रत्याशी निर्विरोध चुन लिए जाएंगे। उपाध्यक्ष कनिष्ठ 1 पद हेतु भी 2 प्रत्याशी मैदान मे होने से इस पद पर भी कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है।

सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन के इतिहास में कोषाध्यक्ष पद पर महिला दावेदारी बनी चर्चा का विषय.......

सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन के इतिहास मे पहली बार कोषाध्यक्ष पद पर किसी महिला ने अपनी दावेदारी पेश की है, इस पद की महिला प्रत्याशी अधिवक्ता असमा हाशिम का सीधा मुकाबला अधिवक्ता अवधेश कुमार श्रीवस्ताव से होगा।

जब कोषाध्यक्ष पद की प्रत्याशी असमा हाशिम से दूरभाष के माध्यम से बात की गई तो उन्होंने बताया कि कोषाध्यक्ष का काम काफी कठिन और जिम्मेदारी पूर्ण होता है लेकिन विगत वर्षो मे कई कार्यकारिणी की सदस्य रहीं हूं तो ये अनुभव काफी काम आएगा, उन्होंने भी स्वीकार किया कि इस पद पर काफी कड़ी टक्कर है, लेकिन फिर भी वह अपनी जीत को लेकर आश्वस्त दिखाई दे रही है।

पत्रकारिता की आड़ में थाना प्रभारी पर बना रहे दबाव, रहीमाबाद पुलिस की निष्पक्षता को बदनाम करने की हो रही साजिश

● तथाकथित पत्रकार पुलिस महकमे को बदनाम करने की रच रहे साजिश।

स्वतंत्र प्रभात

विनीत कुमार मिश्रा

लखनऊ। रहीमाबाद क्षेत्र में एक गंभीर और चिंताजनक स्थिति सामने आ रही है, जहाँ कुछ कथित पत्रकार अपनी निजी स्वार्थ सिद्धि के लिए पुलिस प्रशासन पर अनुचित दबाव डालने का प्रयास कर रहे हैं। सूत्रों और विश्वसनीय जानकारी के अनुसार, यह पत्रकार चाहते हैं कि थाना प्रभारी उनके निर्देशों पर कार्य करें, और जबरन ऐसे मुकदमे दर्ज किए जाएँ जिनका कोई वास्तविक आधार नहीं है। रहीमाबाद थाना प्रभारी ने इस संबंध में खुलकर अपना पक्ष रखते हुए कहा कि, "हम किसी निर्दोष व्यक्ति के खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज नहीं कर सकते। हमारा कर्तव्य है कि हम हर मामले की निष्पक्ष जांच करें और केवल साक्ष्यों के आधार पर ही कानूनी कार्रवाई करें।" उनका कहना है कि पुलिस प्रशासन पर इस प्रकार का दबाव बनाना, कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ है और यह समाज में अराजकता फैलाने जैसा है। थाना प्रभारी जब ऐसे अनुचित मांगों को मानने से इनकार करते हैं, तो संबंधित कथित पत्रकार उनके विरुद्ध निराधार और भ्रामक खबरें प्रकाशित और प्रसारित करने लगते हैं। इन खबरों का उद्देश्य केवल थाना प्रभारी की छवि को धूमिल करना होता है, ताकि दबाव बनाकर अपने पक्ष में कार्य करवाया जा सके।

लोकतंत्र और पत्रकारिता पर प्रश्नचिन्ह

इस पूरे घटनाक्रम ने पत्रकारिता की साख पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। एक ओर जहां पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, वहीं दूसरी ओर कुछ स्वार्थी तत्व पत्रकारिता की आड़ में ऐसे कार्य कर रहे हैं, जो इस पेशे की गरिमा को ठेस पहुंचाते हैं।

भीषण गर्मी में वाटर कूलर बना शोपीस जिम्मेदार मस्त जनता त्रस्त

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज- लखनऊ मोहनलालगंज ब्लॉक परिसर में लगा वाटर कूलर शो पीस बनकर रह गया है जिससे आम जनता को इस भीषण गर्मी में पानी के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है लेकिन जिम्मेदार सब कुछ जानते हुए भी अंजान बने हुए हैं। जबकि सरकार ने इस भीषण गर्मी में हर जगह शुद्ध जल उपलब्ध कराने का निर्देश सभी आला अधिकारियों को दे रही है लेकिन इसके बावजूद भी कुछ अधिकारी इस पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं जिसका जीता जागता उदाहरण मोहनलालगंज ब्लाक परिसर में लगे वाटर कूलर से है जहां पर वाटर कूलर खराब पड़ा हुआ है और आम जनता को पानी के लिए दर दर के ठोकरें खाना पड़ रहा है। अब यह कब तक सही होगा यह तो आने वाला समय ही तय करेगा।

आम जनता में रोष- मोहनलालगंज ब्लॉक परिसर में लगे वाटर कूलर में पानी न आने से आम जनता को इस भीषण गर्मी में पानी की काफी समस्या हो रही हैं लेकिन आला अधिकारी जानते हुए भी मौन है जिसको लेकर आम लोगों में काफी रोष व्याप्त हो रहा है।

क्या बोले अधिकारी - जब संबंध में खंड विकास अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने बताया कि आप लोगों के माध्यम से जानकारी हुई है चेक कराया गया है तार टूटा होने के कारण सप्लाई बंद हो गई है जल्द ही मरम्मत का कार्य करा कर वाटर कूलर से पानी शुरू हो जाएगा।

गेट पर लगे ताले का वीडियो वायरल होने पर दोनों शिक्षिका निलंबित....

● खबरें प्रकाशित होने पर पड़ा असर शिक्षिका पर पूर्व में भी लग चुके थे गंभीर आरोप......

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। ग्राम पंचायत भद्दी शीर्ष में बने प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकीय लापरवाही का मामला सामने आया है। सोमवार की सुबह विद्यालय के खुलने के निर्धारित समय पर स्कूल का गेट बंद मिला और ताला लटका हुआ था। वहीं, विद्यालय के बाहर छात्र-छात्राएं और उनके अभिभावक खड़े नजर आए। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो खुद इंचार्ज अध्यापिका के द्वारा सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया गया, जो कुछ ही घंटों में वायरल हो गया।

वीडियो वायरल होते ही शिक्षा विभाग में हड़कंप मच गया। मामले को संज्ञान में लेते हुए जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, लखनऊ ने प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षिका संध्या देवी इंचार्ज अध्यापिका रीना देवी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। आदेश में कहा गया है कि यह आचरण शिक्षा विभाग की छवि को धूमिल करता है और इसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

वायरल वीडियो में दिखी लापरवाही......

वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि

विद्यालय का मुख्य गेट बंद है और कई छोटे-छोटे बच्चे स्कूल ड्रेस में गेट के बाहर खड़े हुए हैं। साथ ही कुछ अभिभावक भी विद्यालय खुलने की प्रतीक्षा में खड़े दिख रहे हैं। लोगों ने इस पूरे मामले को लेकर कड़ी प्रतिक्रियाएं दीं और विभागीय व्यवस्था पर सवाल खड़े किए आखिर जब पहले ही शिक्षिका के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई थी तो यदि समय रहते कार्यवाही कर दी गई होती तो आज नौनिहाल बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ नहीं होता

पूर्व में भी लग चुके हैं आरोप

शिक्षिका संध्या देवी पर पूर्व में भी आरोप लग चुके हैं। आरोप है कि उन्होंने अपने विद्यालय पर समय पर नहीं पहुंचती थी हस्ताक्षर करने पर भी विवाद हुआ तो हस्ताक्षर रजिस्टर के पन्नों को भी फाड़ दिया यह कृत्य विभागीय नियमों के विरुद्ध माना गया था। अब दोबारा ऐसी लापरवाही सामने आने के बाद विभाग ने कड़ा रुख अपनाया है।

गंभीर आरोपों के आधार पर निलंबन......

शिक्षिका पर लगाए गए आरोपों में विद्यालय में समय से उपस्थित न रहना, विद्यार्थियों के साथ दुर्व्यवहार एवं साथ ही शिक्षण कार्य में लापरवाही बरतना शामिल है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि ऐसे मामलों में कठोर कार्रवाई की जाएगी।

जांच अधिकारी नियुक्त, आगे की कार्रवाई तय

शिक्षिका के विरुद्ध लगाए गए आरोपों की जांच के लिए अलग-अलग मामलों में खंड शिक्षा अधिकारियों को जांच अधिकारी नामित किया गया है। निलंबन की अवधि में शिक्षिका को मोहनलालगंज मुख्यालय में उपस्थित रहने और किसी अन्य सेवा या व्यवसाय में संलग्न न होने का निर्देश दिया गया है। जांच रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

विश्व पुस्तक दिवस पर विशेष

पुस्तकों का महत्व रत्नों से कहीं अधिक

महात्मा गांधी ने कहा है कि पुराने वस्त्र पहनों पर नई पुस्तकें खरीदो,उन्होंने यह भी कहा कि पुस्तकों का महत्व रत्नों से कहीं अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अंतःकरण को उज्जवल करती हैं।मनुष्य के जीवन में अध्ययन जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक मनन और चिंतन भी है।पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे कलाम साहब ने कहा है कि एक पुस्तक कई मित्रों के बराबर होती है और पुस्तकें सर्वश्रेष्ठ मित्र होती हैं। शिक्षाविद चार्ल्स विलियम इलियट ने कहा कि पुस्तके मित्रों में सबसे शांत व स्थिर हैं, वे सलाहकारों में सबसे सुलभ और बुद्धिमान होती हैं और शिक्षकों में सबसे धैर्यवान तथा श्रेष्ठ होती हैं। केवल पुस्तक पढ़ना ही संपूर्ण मानवीय उद्देश्य ना होकर उससे प्राप्त ज्ञानामृत का मनन एवं चिंतन भी अत्यंत आवश्यक है। किसी भी पुस्तक का अध्ययन मनन एवं उस पर चिंतन मनुष्य के संस्कारों को परिष्कृत करता है एवं जीवन के उच्च आदर्शों को प्राप्त करने में सदैव सहायक सिद्ध होता है। अतः मनुष्य को सदैव निरंतर ज्ञानवर्धक पुस्तकों से न सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना चाहिए अपितु उसका निरंतर मनन तथा चिंतन भी करना होगा तब जाकर हमारे संस्कार,संस्कृति एवं जीवन के उद्देश्य सफल होंगे। सच्चाई भी यही है कि पुस्तकें ज्ञान के अंतःकरण और सच्चाईयों का भंडार होती है। आत्मभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी होती हैं। जिन्होंने पुस्तके नहीं पढी हैं या जिन्हें पुस्तक पढ़ने में रूचि नहीं है वे जीवन की कई सच्चाईयों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। पुस्तकें पढ़ने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि हम जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझने की शक्ति से परिचित हो जाते हैं,और समस्या कितनी भी बड़ी हो हम उससे जीतकर निजात पा जाते हैं। कठिन से कठिन समय पर पुस्तकें हमारा मार्गदर्शन एवं दिग्दर्शन करती है। जिन मनीषियों ने पुस्तक लिखी है और जिन्हें पुस्तकें पढ़ने का शौक है उन्हें ज्ञानार्जन के लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं होतीहैं। हैं। निसंदेह पुस्तकें ज्ञानार्जन करने मार्गदर्शन एवं परामर्श देने में में विशेष भूमिका निभाती है। पुस्तकें मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,नैतिक, चारित्रिक, व्यवसायिक एवं राजनीतिक विकास में अत्यंत सहायक एवं सफल दोस्त का फर्ज अदा करती हैं। प्राचीन काल से ही बच्चों तथा नौनिहालों के विकास के लिए पुस्तकें लिखे जाने का चलन तथा रिवाज रहा है। %पंचतंत्र%तथा %हितोपदेश% इसके बहुत बड़े उदाहरण हैं। पंचतंत्र,हितोपदेश में ज्ञानार्जन के लिए एवं संस्कृति सभ्यता और शिक्षा के उपयोग की बातें जो दैनिक जीवन में अत्यंत प्रभावशाली तथा उपयोगी होती है, लिखी गई हैं। और यही पुस्तकें इस देश की सभ्यता संस्कृति के संरक्षण तथा प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाती आई है। इसी तरह की पुस्तकों ने ज्ञान का विस्तार भी किया है। विश्व की हर सभ्यता मे लेखन सामग्री का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पुस्तकों के माध्यम से ही धर्म जाति संस्कृति एवं शिक्षा की मार्गदर्शिका से ही समाज आगे बढ़ा है। अच्छी किताबें अच्छे मार्गदर्शक तथा शिक्षित तथा अशिक्षित समाज को चेतना तथा सद्गुणों से संचारित करती है, व्यक्ति के अंदर मानसिक क्षमता का विकास भी होता है। ऐतिहासिक किताबें हमें इतिहास, धर्म, राजनीति, संस्कृति के अनेक पहलुओं से अवगत भी कराती है,जिससे व्यक्तित्व विकास में अत्यंत सहायता मिलती है। पुस्तकों के महत्व को देखते हुए डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा कि पुस्तके वह साधन है जिसके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृति एवं समाज के बीच सेतु का निर्माण कर सकते हैं। पुस्तके वह मित्र होती हैं जो हर परिस्थिति तत्काल में सहायक होती है, और यही कारण है कि अनेक लोग गुरुवाणी, हनुमान चालीसा अभी अपने पास रखते हैं।

वर्तमान युग डिजिटल युग कहलाता है अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रिंट मीडिया के स्थान पर अपने पैर जमा लिए हैं। इस डिजिटल युग में इंटरनेट का महत्व काफी बढ़ गया है। पहले हम बचपन में चंदा मामा, नंदन, बालभारती और अन्य किताबों से ज्ञान से लेकर मनोरंजन तक प्राप्त करते थे। आज इंटरनेट के बढ़ते बाजार की दिशा में युवक पुस्तकों को विभिन्न साइटों मैं खंगाल कर पढ़ लेते हैं। अब डिजिटल किताबें भी आ गई है साथ ही डिजिटल लाइब्रेरी भी धीरे-धीरे विकसित हो रही है। पर कई कंपनियां विविध किताबों को साइट पर प्रकाशित कर बच्चों के पढ़ने के लिए उपलब्ध करा रही हैं। इससे बड़ी संख्या में बच्चे पढ़ कर लाभान्वित हो रहे हैं। इस दिशा में भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा डिजिटल कार्यक्रमों के अंतर्गत ई शिक्षा तथा ई पुस्तकों के पुस्तकालयों के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही पठन सामग्रियां बच्चों की जिज्ञासा को शांत करने का काम कर रही है। डिजिटल किताबों तथा पुस्तकालयों से यह लाभ है कि देश विदेश में किसी भी भाग में रहकर लोग अपनी इच्छा के अनुसार पुस्तकों पत्रिकाओं आदि को पढ़ सकते हैं। इंटरनेट अब अध्ययन का सुलभ साधन बन गया है। पर दूसरी तरफ इससे कुछ नुकसान भी हो रहे हैं, उचित मार्गदर्शन वाली किताबें न पढ़कर भ्रामक पुस्तकों का अध्ययन कर अपने को दिग्भ्रमित कर रहे हैं और इससे बच्चों का भविष्य भी प्रभावित हो रहा है। इसके लिए छोटे बच्चों को अपनी निगरानी में इंटरनेट से किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना अन्यथा दिगभ्रमित साहित्य बच्चों की मानसिकता पर विकृत प्रभाव डाल सकता है।इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि पुस्तकें ज्ञान देने के साथ मार्गदर्शन तथा चरित्र निर्माण का सर्वोत्तम साधन है। पुस्तकों से राष्ट्र की युवा कर्ण धारों को नई दिशा दी जा सकती है तथा एकता और अखंडता का संदेश देकर एक महान और सशक्त राष्ट्र की पृष्ठभूमि रखी जा सकती है।

संजीव ठाकुर

संपादकीय

वह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है

यह धरती, यह आकाश, यह ब्रह्मांड अपने आप में न जाने कितने रहस्य छुपाए हुए हैं। कितनी बड़ी विडंबना है कि हम अपनी पृथ्वी को अभी सही ढंग से समझ नहीं सके और बाह्य जगत के रहस्यों को जानने के लिए लालायित रहते हैं। मनुष्य अंतरिक्ष के अन्य पिंडों पर जीवन की तलाश कर रहा है और जहां जीवन मौजूद है उसे तहस नहस करने पर तुला हुआ है। वह कभी चांद पर जीवन की संभावना तलाशता है तो कभी मंगल पर पानी की खोज। बड़े बड़े टेलिस्कोप लिए बैठा है किसी नई दुनिया की खोज में। जैसे उसके सपने इस दुनिया में नहीं उसी दुनिया में पूरे होने हों। वह रहस्य, वह रोमांच बयान नहीं किया जा सकता, जब उसे ऐसी किसी दुनिया का पता चलता है। वह उस बच्चे की तरह मचल उठता है, जिसे उसके पसंदीदा खिलौने मिल गए हों। ऐसी ही खुशी भारतवंशी वैज्ञानिक निक्कू मधुसूदन को उस समय प्राप्त हुई जब उन्होंने अपनी हालिया अंतरिक्ष खोज से पूरी दुनिया में तहलका मचा दिया। सौरमंडल से 120 प्रकाशवर्ष दूर एक बाह्यग्रह K2_ 18b पर जैविक गतिविधि के मजबूत संकेत पाए गए हैं। निक्कू मधुसूदन के नेतृत्व वाले एक दल ने जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप की सहायता से उस ग्रह पर डाइमिथाइल सल्फाइड और डाइमिथाइल डाइसल्फाइड जैसे रासायनिक यौगिकों का पता लगाया, जो पृथ्वी पर केवल जीवित प्राणियों विशेषकर समुद्री शैवाल द्वारा उत्पादित होते हैं। यह खोज न केवल खगोल विज्ञान और जैव-खगोल विज्ञान के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम है, बल्कि मनुष्य के मन में वर्षों से दबे उस प्रश्न के उत्तर की ओर बढ़ा हुआ एक कदम है जिसमें बार बार उसके मस्तिष्क के पटल पर प्रश्न उभरता था कि क्या हम ब्रह्मांड में अकेले हैं? यद्यपि अनेक सनातन ग्रंथों में वर्णित "त्रिलोक"शब्द इस बात की पुष्टि करता था कि पृथ्वी के अतिरिक्त भी अन्य दो लोक हैं, जहां जीवन संभव है। परन्तु विज्ञान की कसौटी पर इन ग्रंथों को मिथक कहकर नकार दिया जाता था। अब जब मनुष्य एक नई दुनिया के विषय में जानकारी प्राप्त करने की ओर बढ़ रहा है तो कहीं न कहीं सनातन ग्रंथों में वैज्ञानिकता की पुष्टि होने की संभावना बढ़ रही है। निक्कू मधुसूदन का जन्म 1980 में भारत में हुआ। उनकी शैक्षिक यात्रा की शुरुआत वाराणसी के प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी बीएचयू) से हुई, जहां उन्होंने बी.टेक की डिग्री हासिल की। इसके बाद, उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका का रुख किया और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT) से भौतिकी में मास्टर और डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। MIT में उनके गुरु प्रोफेसर सारा सीगर, जो बाह्यग्रह अनुसंधान की अग्रणी वैज्ञानिक हैं, ने उनके करियर को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में, निक्कू मधुसूदन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में खगोल भौतिकी और बाह्यग्रह विज्ञान के प्रोफेसर हैं। आओ बात करें उस ग्रह की जिसे K2-18b नाम दिया गया है। यह एक बाह्यग्रह है, जो पृथ्वी से लगभग 120-124 प्रकाश वर्ष दूर है। यह ग्रह सिंह राशि में स्थित एक ठंडे लाल बौने तारे K2-18 के चारों ओर चक्कर लगाता है। इस ग्रह की खोज पहली बार 2015 में केपलर स्पेस टेलीस्कोप के डेटा के आधार पर की गई थी। यह एक "सब-नेपच्यून" ग्रह है, जिसका आकार पृथ्वी से बड़ा लेकिन नेपच्यून से छोटा है। इसका द्रव्यमान पृथ्वी से 8.6 गुना और व्यास 2.6 गुना है। यह ग्रह अपने तारे के "हैबिटेबल जोन"में स्थित है, अर्थात वह क्षेत्र जहां तरल पानी के अस्तित्व की संभावना होती है। जिसके कारण वहां जीवन की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। मधुसूदन और उनकी टीम ने 2021 में "हाइसीन" (Hycean) ग्रहों की अवधारणा प्रस्तुत की थी। हाइसीन हाइड्रोजन और ओसियन दो शब्दों को जोड़कर बना है। अर्थात उन्होंने उन ग्रहों पर फोकस किया जिन पर हाइड्रोजन और ओसियन दोनों हों, क्योंकि ऐसे ग्रहों पर जीवन की संभावनाएं अधिक होती हैं।

इस खोज का आधार नासा का जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) है, जिसे दिसंबर 2021 में लॉन्च किया गया था। यह टेलीस्कोप अपनी उन्नत अवरक्त (infrared) तकनीकों के कारण बाह्यग्रहों के वायुमंडल का अध्ययन करने में अभूतपूर्व सक्षमता रखता है। जब K2-18b अपने तारे के सामने से गुजरता है, तो तारे का प्रकाश ग्रह के वायुमंडल से होकर गुजरता है। इस प्रक्रिया में, वायुमंडल में मौजूद गैसें प्रकाश की कुछ तरंगदैर्ध्य को अवशोषित कर लेती हैं, जिससे एक विशिष्ट "स्पेक्ट्रम" बनता है। इस स्पेक्ट्रम का विश्लेषण करके वैज्ञानिक वायुमंडल में मौजूद रासायनिक यौगिकों की पहचान कर सकते हैं। मधुसूदन की टीम ने इस तकनीक, जिसे ट्रांसमिशन स्पेक्ट्रोस्कोपी कहते हैं, का उपयोग करके छड़ और DMDS के संकेतों का पता लगाया। DMS का पता लगना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि पृथ्वी पर यह गैस केवल जीवित प्राणियों, मुख्य रूप से समुद्री शैवालों द्वारा उत्पादित होती है। इस गैस की उपस्थिति K2-18b पर जैविक गतिविधि की संभावना को दर्शाती है। हालांकि, नासा और मधुसूदन ने इस खोज को पूरी तरह से पुष्ट करने के लिए और अधिक अवलोकनों की आवश्यकता पर जोर दिया है। वर्तमान में, DMS का सिग्नल "थ्री-सिग्मा"स्तर पर है, जिसका अर्थ है कि यह सिग्नल के यादृच्छिक होने की संभावना केवल 0.3% है। खगोल विज्ञान में, किसी खोज को निश्चित मानने के लिए "फाइव-सिग्मा"स्तर की आवश्यकता होती है, इसलिए इस दिशा में और शोध की जरूरत है।

मधुसूदन ने इस खोज को "खगोल विज्ञान और जैव-खगोल विज्ञान में एक परिवर्तनकारी क्षण"करार दिया है। उनकी टीम का मानना है कि K2-18b पर एक गर्म सागर हो सकता है, जो जीवन से "परिपूर्ण"हो। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह जीवन की पुष्टि नहीं है, बल्कि एक मजबूत संकेत है, जिसे और जांच की आवश्यकता है। मधुसूदन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, "जीवन की खोज का दावा समय से पहले करना किसी के हित में नहीं है।"यह सावधानी वैज्ञानिक समुदाय में एक सामान्य प्रथा है, क्योंकि अतीत में भी कई बार ऐसी खोजें गलत साबित हुई हैं, जैसे कि 2018 में शुक्र के वायुमंडल में फॉस्फीन की उपस्थिति का दावा। इस खोज का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह हाइसीन ग्रहों की अवधारणा को और मजबूती प्रदान करता है। मधुसूदन ने 2021 में प्रस्तावित किया था कि हाइसीन ग्रह, जो सब-नेपच्यून श्रेणी में आते हैं, जीवन की खोज के लिए सबसे उपयुक्त उम्मीदवार हो सकते हैं। ये ग्रह अपने आकार और वायुमंडलीय संरचना के कारण चट्टानी ग्रहों की तुलना में वायुमंडलीय अवलोकन के लिए अधिक सुलभ हैं। K2-18b पर DMS और DMDS का पता लगना इस सिद्धांत के अनुरूप है, जिससे भविष्य में ऐसे और ग्रहों का अध्ययन करने की प्रेरणा मिलती है।

इस खोज ने वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय और आम जनता में उत्साह पैदा किया है। निश्चित ही निक्कू मधुसूदन की यह उपलब्धि भारत के लिए गर्व का विषय है। IIT-BH से अपनी यात्रा शुरू करने वाले इस वैज्ञानिक ने न केवल वैश्विक मंच पर भारत का नाम रोशन किया है, बल्कि युवा वैज्ञानिकों के लिए भी एक प्रेरणा स्थापित की है। उनकी यह खोज भारतीय वैज्ञानिक समुदाय की क्षमता और वैश्विक विज्ञान में उनके योगदान को दर्शाती है। इस वैज्ञानिक उपलब्धि पर जितना भी गर्व किया जाए कम है, क्योंकि यह इस अवधारणा को पुष्ट करेगी कि हम ब्रह्मांड में अकेले नहीं हैं। परन्तु एक प्रश्न मन में बार बार दस्तक दे रहा है कि पृथ्वी से लगभग 120 प्रकाशवर्ष दूर किसी ग्रह पर जीवन मिल भी जाए तो क्या? एक स्वस्थ मनुष्य यदि अपने जीवन में एक भी दिन बीमार न पड़े तो शायद वह अपने जीवनकाल में 120 वर्ष जी सके। परन्तु जिस ग्रह पर प्रकाश की गति से जाने में ही 120 वर्ष लग जाएं तो क्या वहां जाना संभव हो सकेगा। शायद नहीं। गुरुदत्त साहब और साहिर याद आ गए उनसे क्षमा याचना के साथ कि "वह सपनों, सितारों और ख्वाबों की दुनिया, पल पल उठते सवालों की दुनिया, कुछ उल्टे सीधे जवाबों की दुनिया, वह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है? वह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है?"

बलदेव राज भारतीय

पोप फ्रांसिस के लिए झुका तिरंगा

ईसाइयों के जगतगुरु पोप फ्रांसिस के सम्मान में भारत का राष्ट्रिय ध्वज 3 दिन के लिए झुका देखकर मैं भ्रम में पड़ गया हूँ कि भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए संघर्षरत संगदिल लोगों की सरकार का दिल अचानक दरिया कैसे हो गया कि भारत में पोप फ्रांसिस के निधन पर 3 दिन का राष्ट्रिय शोक घोषित कर दिया गया।भारत में तो इन दिनों ईसाई हों या मुसलमान या जैन सभी कि खिलाफ एक अघोषित शीत युद्ध चल रहा है। पोप फ्रांसिस का का 21 अप्रैल को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया. उनके लिए भारत ने 22 से 24 अप्रैल तक तीन दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की है। मुमकिन है की ऐसा अमेरिका को खुश करने कि लिए किया गया हो। पोप फ्रांसिस को न मैंने कभी देखा और न मिला ,लेकिन टेलीविजन के पर्दे पर वे जब भी दिखे एक आकर्षक धार्मिक नेता की तरह ही नजर आये । उनके चेहरे से दया,करुणा ही झलकती दिखाई दी,उन्हें कभी उत्तेजित होते हुए नहीं देखा गया। पोप फ्रांसिस रोमन कैथोलिक ईसाई समाज के सबसे बड़े धार्मिक गुरु थे। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक पोप फ्रांसिस रोमन कैथोलिक समुदाय के 266 वे और सोसाइटी ऑफ जीसस (जेसुइट ऑर्डर) के पहले पोप थे, दक्षिणी अमेरिका से पहले पोप थे, तथा 8वीं शताब्दी के सीरियाई पोप ग्रेगरी तृतीय के बाद यूरोप के बाहर जन्मे या पले-बढ़े दूसरे पोप थे।अर्जेंटीना के बोनस आइरिस में जन्में पोप फ्रांसिस की भी ईश्वर में आस्था एक बीइमारी की गिरफ्त में आने के बाद बढ़ी । ये बात 1958 की है।वे 1969 में पहली बार पादरी बने और फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। पोप फ्रांसिस 2013 में तत्कालीन पोप के इस्तीफे के बाद उनके उत्तराधिकारी बनाये गए। आप जानते ही हैं कि पोप की हैसियत सिर्फ एक धार्मिक नेता की ही नहीं होती बल्कि वे विश्व राजनीति में एक कूटनीतिज्ञ की तरह भी किरदार अदा करते है। पोप फ्रांसिस प्रगतिशील और दक्षिणपंथ विरोधी नेता के रूप में उभरे । उन्होंने अनेक विवादास्पद रिश्तों और प्रवासियों के मुद्दों पर चीन जैसे देशों से मुठभेड़ की। पोप फ्रांसिस हमेशा प्रवासियों के हितों की रक्षा को सभ्य समाज का कर्तव्य मानते थे । उन्होंने इस मुद्दे पर अमरीकी नीतियों का भी विरोध किया। मुझे लगता है कि पोप फ्रैंसिस फ्रांसिस का पूरा जीवन लॉर्ड और चर्च की सेवा में समर्पित रहा। पोप फ्रांसिस ने दुनिया को हमेशा साहस, प्यार और हाशिए के लोगों के पक्ष में खड़ा रहने के लिए प्रेरित किया। एक मायने में कहें तो पोप फ्रांसिस लॉर्ड जीसस के सच्चे शिष्य थे। पोप फ्रांसिस को कैथोलिक चर्चों में सुधार के लिए भी जाना जाता है. इसके बावजूद पोप परंपरावादियों के बीच भी लोकप्रिय थे. फ्रांसिस दक्षिण अमेरिका (अर्जेंटीना) से बनने वाले पहले पोप थे। पोप फ्रांसिस ईस्टर संडे को ही वेटिकन में सेंट पीटर्स स्क्वेयर पर अपने भक्तों के सामने प्रकट हुए थे। हुए थे।

पोप फ्रांसिस को मैं कोरा धार्मिक नेता नहीं मानता क्योंकि उन्हें चुनाव के दौरान उन्हें रूढ़िवादियों और सुधारकों का जबरदस्त समर्थन मिला। पोप ने आलोचनाओं की परवाह किये बिना यौन मामलों में रूढ़िवादी और सामाजिक मामलों में उदारता दिखाई । पोप को उनके समर्थक उन्हें लोगों से जुड़ने, क्यूरिया (वेटिकन नौकरशाही) में सुधार लाने, वेटिकन बैंक में भ्रष्टाचार को समाप्त करने और चर्च में बाल यौन शोषण रोकने के संकल्प के कारण खासा पसंद करते थे। पोप बनने के चार साल बाद हुए सर्वेक्षणों से पता चला कि पोप की लोकप्रियता कैथोलिक और अन्य धर्मों के बीच बहुत ज़्यादा है. सोशल मीडिया एक्स पर उन्हें डेढ़ करोड़ से भी ज़्यादा लोग फ़ॉलो करते हैं। कई मुद्दों पर सीधा दखल न देने के कारण वेटिकन के अंदर और बाहर उनके विरोधियों की संख्या भी काफी रही। आप माने या न मानें किन्तु मुझे पोप फ्रांसिस हमेशा गांधीवादी लगे । उनका जीवन सादा और उच्च विचारों का था। एक बार की बात है कि पोप फ्रांसिस वेटिकन लौटते समय इतालवी राजधानी के मध्य में पादरी वर्ग के लिए बने एक होटल में रुके । ये होटल पोप क लिए निशुल्क था किन्तु उन्होंने अपना बिल चुकाने पर ज़ोर दिया, इससे उनकी शैली की छाप पोप पद पर तुरंत पड़ गई। पोप ने उस विशाल पेंटहाउस अपार्टमेंट को त्याग दिया, जिसे पोप कई शताब्दियों से इस्तेमाल कर रहे थे। वह वेटिकन गेस्टहाउस के एक छोटे से सुइट में रहने लगे। पोप फ्रांसिस ने पोप के ग्रीष्मकालीन निवास कासल गंडोल्फो को भी त्याग दिया था। पोप फ्रांसिस मुझे इसलिए भी आकर्षित करते रहे क्योंकि वे कोरे धार्मिक भाषणों तक ही सीमित नहीं रहे । उन्होंने सामाजिक सरोकारों को भी रेखांकित किया। उन्होंने मुक्त बाजार अर्थशास्त्र पर सवाल उठाए. उन्होंने कहा कि चर्च को समलैंगिक लोगों के लिए राय बनाने के बजाय उनसे माफी मांगनी चाहिए.। उन्होंने अन्य बातों के अलावा यूरोपीय प्रवासी हिरासत केंद्रों की तुलना नज़रबंदी शिविरों से की। कभी-कभी पोप फ्रांसिस की झलक मुझे भारत की द्वारिकापीठ के शंकराचार्य रहे स्वामी स्वरूपानद जी और उनके उत्तराधिकारी स्वामी अविमुक्तेश्वरानद में भी दिखाई देती है। पोप फ्रांसिस इस साल

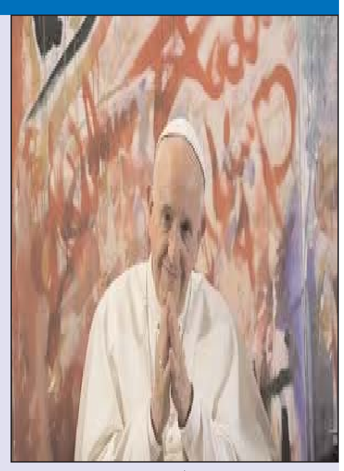

2025 के बाद भारत दौरे पर आने वाले थे। इसके लिए भारत की तरफ से पोप फ्रांसिस को आधिकारिक तौर पर निमंत्रण दिया जा चुका था ,लेकिन भारत यात्रा से पहले ही वे अनंत ।यत्रा पर निकल गए।पोप फ्रांसिस भारतीय संत परम्परा से भी खासे प्रभावित थे । उन्होंने पिछले साल संत श्री नारायण गुरुकी खुलकर प्रशंसा की थी। । पोप फ्रांसिस ने तब कहा था कि संत नारायण गुरु का सार्वभौमिक मानव एकता का संदेश आज बहुत प्रासंगिक है ,क्योंकि दुनिया में हर तरफ और हर जगह नफरत बढ़ रही है। पोप ने ये बातें तब कहीं थीं, जब केरल के एर्नाकुलम जिले के अलुवा में श्री नारायण गुरु के सर्व-धर्म सम्मेलन के शताब्दी समारोह के मौके पर धर्मगुरुओं का सम्मेलन हुआ था। पोप ने तब वेटिकन में भी जुटे धर्मगुरुओं और प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए ये बातें कही थीं। मानवता के इस महान प्रहरी को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

राकेश अचल

मोदी की सऊदी अरब यात्रा

कभी सऊदी अरब पाकिस्तान का सबसे अच्छा मित्र माना जाता था। वह हर साल पाकिस्तान को अरबों डालर की मदद देता रहा। पाकिस्तान को जब भी कर्ज या कूटनीतिक समर्थन की जरूरत पड़ती तो सऊदी अरब सबसे पहले आगे आता था। कई बार संयुक्त राष्ट्र में कश्मीर मसले पर भी सऊदी ने पाकिस्तान के स्टैंड का समर्थन किया था लेकिन अब दृश्य पूरी तरह से बदल चुका है। सऊदी अरब और अन्य कई अरब देश भारत के अच्छे-खासे मित्र बन चुके हैं। भारत के सऊदी के साथ रिश्ते बहुत पुराने हैं लेकिन पिछले कुछ वर्षों में दोनों देशों के रिश्तों में प्रगाढ़ता आई है। अरब देश दुनिया के उन क्षेत्रों में शामिल हैं जिनके पास तेल, ऊर्जा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है। इन देशों में राजनीतिक व्यवस्था और विकास के बीच बहुत जटिल संबंध हैं। विकास की बात करें तो वह भी कई सामाजिक, आर्थिक और भू-राजनीतिक कारकों से प्रभावित होता है। अरब देशों में अधिकांश सरकारें राजशाही पर आधारित हैं लेकिन अब बहुत कुछ बदलता हुआ दिखाई दे रहा है। अरब देशों में राजशाही की युवा पीढ़ी दुनिया को नए नजरिए से देख रही है। सऊदी अरब जैसे देश अब दुनिया को साथ लेकर चल रहे हैं। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के नेतृत्व में भारत और सऊदी के बीच संबंधों को बहुत गहराई मिली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो दिन में सऊदी अरब के दौरे पर जा रहे हैं। यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब अमेरिका और ईरान परमाणु कार्यक्रम पर समझौते के लिए आगे बढ़ चुके हैं। पश्चिम एशिया में हमास-इजराइल संघर्ष के कारण तनाव की स्थिति बनी हुई है। प्रधानमंत्री की यह यात्रा अगले महीने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सऊदी अरब यात्रा से पहले हो रही है। यह यात्रा भारत में वक्फ कानून को लेकर चल रहे विवाद के बीच हो रही है। प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को लेकर समझौते हो सकते हैं। इसमें सऊदी

सेना को भारतीय सेना की ओर से प्रशिक्षण देना भी शामिल है। पिछले दो वर्षों में 80 सऊदी नौसैनिकों को भारत में ट्रेनिंग दी गई और दोनों देश समुद्री व्यापार मार्गो और वैश्विक चैक प्वाइंट्स की सुरक्षा भी मिलकर कर रहे हैं। भारत और सऊदी अरब में हाल के वर्षो में रक्षा सहयोग तेजी से बढ़ा है। दोनों देशों के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास, प्रशिक्षण और रक्षा व्यापार बढ़ रहा है। दोनों की रक्षा साझेदारी में बड़ा घटनाक्रम बीते साल देखने को मिला, जब दोनों देशों के बीच पहली बार संयुक्त थल सेना अभ्यास हुआ। दोनों देशों की नौसेना के भी दो संयुक्त अभ्यास हो चुके हैं। प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर भी नियमित रूप से दोनों मुल्कों में बातचीत हो रही है। भारत बीते कुछ समय से सऊदी अरब की रक्षा सामग्री का एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता बनकर उभर रहा है। सऊदी अरब में 25 लाख से भी ज्यादा भारतीय काम करते हैं। सऊदी अरब को भारत से न केवल तकनीकी पेशेवर लोगों की सेवाओं की जरूरत है, बल्कि उन्हें कुशल श्रमिकों की भी जरूरत पड़ती है। भारत अपने नागरिकों के हितों को भी देखता है क्योंकि भारत को प्रवासी भारतीयों से काफी अधिक विदेशी मुद्रा हासिल होती है। मोहम्मद बिन सलमान सऊदी अरब के डिफेक्टी शासक माने जाते हैं। विजन बी 2030 के तहत उन्होंने देश को तेल आधारित अर्थव्यवस्था से विविध क्षेत्रों में ले जाने का लक्ष्य रखा है। इस योजना में भारत एक प्रमुख साझेदार के रूप में उभरा है। इसलिए मोहम्मद बिन सलमान ने अपनी पिछली भारत यात्रा के दौरान निवेश के कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे। सऊदी अरब भारत का पांचवां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत सऊदी अरब का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान सऊदी अरब से भारत का आयात 31.42 बिलियन अमेरिकी डालर तक पहुंच गया और सऊदी अरब को निर्यात 11.56 बिलियन अमेरिकी डालर का था, 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार 42.98 बिलियन अमेरिकी डालर था, जिसमें भारतीय निर्यात 11.56 बिलियन अमेरिकी डालर और आयात 31.42 बिलियन अमेरिकी डालर था। भारत से सऊदी अरब को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में इंजीनियरिंग सामान, चावल, पैट्रोलियम उत्पादन, रसायन, वस्त्र, खाद्य उत्पाद, सिरेमिन टाइलें शामिल हैं। जबकि भारत के लिए सऊदी अरब से आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं कच्चा तेल, एलपीजी, उर्वरक, रसायन, प्लास्टिक और इसके उत्पाद आदि हैं। सऊदी अरब 2023-24 के लिए भारत का तीसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल और पैट्रोलियम उत्पाद सोर्सिंग गंतव्य बना रहा। सबसे बड़ी बात यह है कि आतंकवाद के खिलाफ हिन्द महासागर में सभी के हितों की रक्षा के लिए दोनों देशों के विचार समान हैं। सऊदी अरब ने अब तक भारत में वक्फ कानून को लेकर चल रहे विवाद पर सार्वजनिक रूप से कोई टिप्पणी नहीं की है। अब तक प्रधानमंत्री मोदी की विचारधारा अरब के इस्लामिक देशों से संबंध बढ़ाने में कोई बाधा नहीं बनी है। कई अरब देश प्रधानमंत्री को अपने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित कर चुके हैं। भारत और सऊदी में करीबी संबंधों को लेकर पाकिस्तान की चिंताएं बढ़ी हुई हैं। क्योंकि भारत की भूमिका बढ़ने से पाकिस्तान की क्षेत्रीय भूमिका लगातार सिमट रही है। प्रधानमंत्री की यात्रा ऊर्जा, निवेश, सुरक्षा और क्षेत्रीय सहयोग जैसे अहम क्षेत्रों में साझेदारी की ओर आगे ले जाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

संसद और सर्वोच्च न्यायालय

भारतीय लोकतान्त्रिक ढांचे में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और चुनाव आयोग चार ऐसे स्तम्भ हैं जिन पर पूरी व्यवस्था टिकी हुई है। इनमें से न्यायपालिका व चुनाव आयोग सरकार का हिस्सा नहीं हैं जबकि चुनी हुई विधायिका सरकार का गठन करती है और चुनाव आयोग चुने जाने के लिए हर पांच साल बाद स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव कराकर देश की सरकारों के गठन के लिए आधारभूमि तैयार करता है। चुनाव आयोग भारत के सभी राजनैतिक दलों का निगेहबान होता है। भारत की राजनैतिक प्रशासन प्रणाली की बागडोर आम जनता के हाथ में रहती है क्योंकि देश का आम मतदाता ही अपने एक वोट के अधिकार का इस्तेमाल करके विभिन्न राजनैतिक दलों को बहुमत के आधार पर सरकार बनाने का अवसर प्रदान करता है। अतः हम कह सकते हैं कि लोकतन्त्र में आम मतदाता सबसे ऊपर और स्वयंभू होता है। हमारे संविधान निर्माताओं ने जिस प्रकार यह व्यवस्था की है वह अनूठी इस वजह से है क्योंकि देश में राजनैतिक दलों की सरकारों की जिम्मेदारी संविधान के अनुसार काम करने की ही है। संविधान निर्माताओं ने न्यायपालिका व चुनाव आयोग को सरकार का अंग इसीलिए नहीं बनाया जिससे राज्यों से लेकर केन्द्र तक में सरकारें केवल संविधान के अनुरूप ही कार्य करें जिसकी गारंटी स्वतन्त्र न्यायपालिका के माध्यम से उन्होंने तय की। न्यायपालिका को दी गई इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए उन्होंने संविधान में यह व्यवस्था भी कर दी कि न्यायपालिका किसी भी मुद्दे पर पूर्ण न्याय कर सके। इसके लिए उन्होंने संविधान में बाकायदा अनुच्छेद भी बनाया।आम जनता के लिए यह काफी है कि न्यायपालिका और चुनाव आयोग सीधे संविधान से ताकत लेकर ही अपना कार्य करते हैं और किसी भी राजनैतिक दल के शासन से निरपेक्ष रहते हुए लोकतन्त्र की पवित्रता व पारदर्शिता को बनाये रखते हैं। बेशक संसद लोगों द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों का समुच्य होती है मगर स्वतन्त्र भारत में ऐसे भी मौके आये हैं जब न्यायपालिका व विधायिका के सम्बन्धों के बीच तनाव रहा है। पहली बार 70 के दशक में तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी के दौर में यह देखने को मिला था। तब यह बहस छिड़ी थी कि संसद और सर्वोच्च न्यायालय में से कौन बड़ा है? 1974 में जब सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने केशवानन्द भारती के मुकदमे में यह फैसला दिया कि संसद संविधान के मूल ढांचे में परिवर्तन नहीं कर सकती तो बड़ा स्पष्ट था कि कोई भी सरकार सामान्य परिस्थितियों में नागरिकों के मूल अधिकारों से छेड़छाड़ नहीं कर सकती जबकि सरकार को संसद के माध्यम से नये कानून बनाने व पहले से लागू कानूनों में संशोधन करने का अधिकार था। इन्दिरा जी केशवानन्द भारती के मुकदमे के फैसले से सन्तुष्ट नहीं थी जिसकी वजह से उन्होंने एक बार यह भी कह दिया था कि न्यायपालिका को अपने निर्णय सरकारी नीतियों को देखते हुए करने चाहिए। निश्चित रूप से उनका यह मत न्यायपालिका को परोक्ष रूप से प्रभावित करने वाला था। मगर उनके इस मत का देश की जनता ने स्वागत नहीं किया। इसका कारण यही था कि न्यायपालिका का कर्त्तव्य हमारे संविधान में निर्दिष्ट है जो कहता है कि न्यायपालिका सभी आग्रहों व पूर्वाग्रहों से निस्पृह रहते हुए अपने फैसले देगी।न्यायपालिका को इससे मतलब नहीं होता कि किस पार्टी की सरकार सत्तारूढ़ है। वह केवल संविधान के प्रति उत्तरदायी है। मगर भाजपा के एक बड़बोले लोकसभा सदस्य निशिकान्त दुबे फरमा रहे हैं कि अगर न्यायपालिका को ही कानून भी बनाना है तो संसद व विधानसभाओं पर ताला ठोक दिया जाना चाहिए। बिना किसी शक के संसद का काम कानून बनाना है मगर सर्वोच्च न्यायालय का काम संविधान के अनुसार पूरे देश में शासन देखने का है। इसी वजह से तो वह सरकार का अंग नहीं है। मगर राज्यपालों के बारे में विशेषतः तमिलनाडु के राज्यपाल श्री आर. एन. रवि की कारगुजारियों के बारे में तमिलनाडु की सरकार की याचिका पर फैसला देते हुए कहा कि श्री रवि वहां की विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों पर कुंडली मारकर नहीं बैठ सकते और उन्हें तीन महीने के भीतर यथापारित विधेयकों को सहमति देनी ही होगी क्योंकि विधानसभा जो भी विधेयक पारित करती है उसे जमीन के मतदाताओं की सहमति प्राप्त होती है। राज्यपाल को संविधान के तहत यह अधिकार प्राप्त है कि वह विधेयक को अपनी किसी आपत्ति के साथ वापस सरकार को भेज दें। मगर पुनः उसके यथास्वरूप में विधानसभा में पारित होने के बाद उन्हें अपनी सहमति देनी ही होगी और इसके बाद वह विधेयक को राष्ट्रपति की सहमति के लिए भी नहीं भेज सकते हैं। ऐसा वह पहली बार उनके पास भेजे गये विधेयक को राष्ट्रपति की सहमति के लिए ही भेज सकते हैं। साथ ही सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रपति से भी कहा कि वह भी तीन महीने के भीतर विधेयकों का निपटारा करें। मगर निशिकान्त दुबे तो सारी हदें तोड़कर तब आगे निकल गये जब उन्होंने कहा कि आज-कल देश में जो गृह युद्धों की परिस्थितियां बनी हुई हैं उनके पीछे देश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

ओबरा में फूटा गुस्सा बंद खदान बनी मासूम की कब्र, सुरक्षा व्यवस्था पर उठे तीखे सवाल

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा, सोनभद्र। सोमवार का दिन ओबरा क्षेत्र के बिल्ली चढ़ाई इलाके के लिए एक और गहरा सदमा लेकर आया। बकरी चराने गई लगभग 18 वर्षीय पूनम गौड़, जो बिल्ली चढ़ाई पर अपने परिवार के साथ रहती थीं, मूल रूप से फाफड़ा कुंड क्षेत्र की निवासी थीं। वह एक बंद पड़ी खदान में फिसलकर लगभग 150 फीट नीचे जा गिरीं और उनकी दर्दनाक मौत हो गई। इस हृदयविदारक घटना ने न केवल पूनम के परिवार को अथाह दुख में डुबो दिया है, बल्कि इलाके में मौजूद असुरक्षित बंद खदानों के प्रति लोगों के गुस्से को भी चरम पर पहुंचा दिया है। पूनम गौड़, लालमन गौड़ की तीसरी संतान थीं। तीन बेटियों और एक बेटे के परिवार में वह अपने माता-पिता की लाडली थीं। उनके पिता, जो अपनी रोजी-रोटी के लिए बिल्ली चढ़ाई पर रहते थे, निजी क्षेत्र में काम कर अपना जीवन यापन करते थे। परिवार में खुशी का माहौल था क्योंकि जल्द ही उनके विवाह की तैयारियां चल रही थीं। लेकिन विधि के विधान को कुछ और ही मंजूर था और उनकी असामयिक मृत्यु ने पूरे परिवार पर दुखों का पहाड़ तोड़ दिया है। पिता लालमन का करुण क्रंदन घटनास्थल पर मौजूद हर व्यक्ति की आंखें नम कर गया। यह दुखद घटना सोमवार दोपहर करीब 3:00 बजे घटी। जैसे ही यह हृदयविदारक समाचार क्षेत्र में फैला, शोक की लहर दौड़ गई और देखते ही देखते सैकड़ों ग्रामीण घटनास्थल पर जमा हो गए। अपनी बेटी के साथ हुए इस भयानक हादसे की खबर सुनकर पिता लालमन बदहवास हालत में मौके पर पहुंचे। खदान की अत्यधिक गहराई और उसमें उतरने के लिए किसी सुरक्षित मार्ग का अभाव बचाव कार्य के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया था। इसके बावजूद, छह साहसी ग्रामीणों ने अपनी जान की परवाह किए बिना मानवता का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया। वे पहाड़ी के किनारे बने एक संकरे और खतरनाक रास्ते से होते हुए खदान में उतरे। अथक प्रयासों और मुश्किलों

का सामना करने के बाद वे पूनम के निष्प्राण शरीर तक पहुंचने में सफल रहे और उसे ऊपर निकाला। पूनम के कोमल शरीर पर कई गंभीर चोटें आई थीं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, उनके सिर, हाथ, पेट और सीने में गहरी चोटें थीं, जो उनकी तत्काल मृत्यु का कारण बनीं। पूनम का सांवला रंग और गोल चेहरा अब हमेशा के लिए शांत हो गया। घटना के समय उन्होंने हरे रंग का सूट और पायजामा पहना हुआ था।

घटना की सूचना मिलते ही ओबरा थाने के उप निरीक्षक राम सिंह यादव और सतीश कुमार सिंह भी तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे। और इस दुखद घड़ी में पत्रकार सिंह भी घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने शव को खदान से निकालने में ग्रामीणों की हर संभव सहायता की और स्थिति को नियंत्रित किया। पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। इस दुखद घटना ने पूरे ओबरा क्षेत्र को गहरे सदमे में डाल दिया है। हर कोई इस मासूम युवती की असामयिक मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त कर रहा है और पीड़ित परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट कर रहा है। लेकिन इस शोक के साथ-साथ लोगों में गहरा आक्रोश भी व्याप्त है। स्थानीय निवासियों का स्पष्ट आरोप है कि खनन माफियाओं द्वारा अंधाधुंध खनन करने के बाद इन खदानों को जानबूझकर असुरक्षित छोड़ दिया जाता है। न तो खदानों के किनारों पर कोई सुरक्षा दीवार बनाई जाती है और न ही उन्हें किसी प्रकार की घेराबंदी से सुरक्षित किया जाता है। ग्रामीणों का कहना है कि ऐसी घोर लापरवाही के कारण आए दिन न केवल इंसान बल्कि बेजुबान जानवर भी इन खदानों का शिकार होते रहते हैं। लोगों का यह भी कहना है कि खनन करने वालों ने इन खदानों से अथाह धन कमाया, लेकिन इन्हें वापस भरकर क्षेत्र को सुरक्षित बनाने की कोई जहमत नहीं उठाई। जबकि सरकारी कागजों में खनन के बाद खदानों को भरने का स्पष्ट आदेश दिया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर इसका कोई अनुपालन नहीं होता है। इस दर्दनाक घटना ने एक बार फिर क्षेत्र में मौजूद इन खतरनाक और असुरक्षित बंद खदानों की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर और तीखे सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय निवासियों ने प्रशासन से पुरजोर मांग की है कि ऐसी सभी खतरनाक खदानों को तत्काल प्रभाव से सुरक्षित किया जाए या उन्हें स्थायी रूप से बंद कर दिया जाए, ताकि भविष्य में किसी और मासूम को अपनी जान न गंवानी पड़े। लोगों का कहना है कि यह महज एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना नहीं है, बल्कि प्रशासन और खनन माफियाओं की आपराधिक लापरवाही का प्रत्यक्ष परिणाम है, जिसकी कीमत एक गरीब परिवार को अपनी बेटी खोकर चुकानी पड़ी है। पूनम की मौत न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि पूरे गांव के लिए एक अपूरणीय क्षति है। अब यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि प्रशासन इस हृदयविदारक घटना से कोई सबक लेता है या नहीं और क्षेत्र में मौजूद अन्य असुरक्षित खदानों के खिलाफ क्या ठोस कार्रवाई करता है।

संक्षिप्त खबरें

विमलोक ने यूपीएससी परीक्षा में लहराया परचम

रूद्रपुर, देवरिया। नगर पंचायत मदनपुर के मठिया तिवारी निवासी रमेश तिवारी के होनहार पुत्र विमलोक तिवारी ने यूपीएससी परीक्षा में परचम लहराकर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। मंगलवार को आये परीक्षा परिणाम में उन्हें 554 वीं रैंक मिली है। समाचार सुनकर पूरे परिवार सहित गांव खुशी से झूम रहा है। विमलोक शुरू से कुशाग्र बुद्धि के रहे। उनकी स्कूली शिक्षा गोरखपुर में तथा स्नातक इलाहाबाद में हुआ। दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद वहीं कालेज में असिस्टेंट प्रोफेसर हुए। लगातार तैयारी करते रहने के फलस्वरूप सफलता अर्जित किया। चेयरमैन प्रतिनिधि छोटेलाल निगम, मन्मथ त्रिपाठी, सागर मोदनवाल, मदनपुर चेयरमैन प्रतिनिधि अली आजम, प्रियेश शुक्ला, आलोक तिवारी आदि ने बधाई दी है। विमलोक ने अपनी सफलता का श्रेय पिता रमेश तिवारी और माता शीला को दिया है।

बंशी चन्द इंटर कॉलेज चिलवा को हिंदी माध्यम के साथ अंग्रेजी माध्यम से पठन पाठन का मिला अनुमति

गोलाबाजार गोरखपुर। गोला क्षेत्र स्थित बंशी चन्द इंटर कॉलेज चिलवा में कक्षा छह से लेकर बारहवी तक पठन पाठन कार्यक्रम हिंदी में होता था। लेकिन जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा निर्देशित प्रावधानों के अंतर्गत वर्तमान सत्र वर्ष 2025 /26 से हिंदी माध्यम केसाथ साथ अंग्रेजी माध्यम से भी पठन पाठन की अनुमति प्रदान की गई है। इस व्यवस्था से क्षेत्र के अभिभावकों में काफी हर्ष व्याप्त है। उक्त आशय की जानकारी विद्यालय के प्रधानाचार्य अरविंद कुमार दुबे द्वारा दिया गया।। विद्यालय के संरक्षक रणविजय चन्द, प्रधानाचार्य अरविंद कुमार दुबे, सहित समस्त शिक्षक गण, क्षेत्र के सभी सम्मानित गणमान्य लोगों ने इस उपलब्धि पर शासन एवम प्रबंध तंत्र को बधाई के साथ शुभकामनाएं दिया है।

चरित्र निर्माण का प्रथम सोपान है स्काउट गाइड प्रशिक्षण

कौशल हस्तकला राष्ट्र निर्माण की भावना विकसित किया जाता है

खजनी गोरखपुर- स्काउट गाइड प्रशिक्षण द्वारा चरित्र निर्माण का प्रथम सोपान होता है साथ ही साथ इस प्रशिक्षण से स्काउट व गाइडों में साहचर्य,आपसी भाईचारा,प्रथम उपचार,एक दूसरे का सहयोग तथा स्वस्थ आदतों का विकास किया जाता है उक्त बाते डॉ.के .पी. चौरसिया प्राचार्य वीर बहादुर सिंह पी .जी. कॉलेज हरनही द्वारा प्रशिक्षण शिविर का ध्वज फहरा कर शुभारंभ करते हुए शिविरार्थियो को संबोधित करते हुए कहा इस अवसर पर स्काउट गाइड प्रशिक्षक सूरज चंद्रा, शिवाकुमार एवं पूजा सिंह ने शिविर के शुभारंभ में प्रशिक्षित करते हुए बताया कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण में प्रशिक्षुओ को सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान के बीच समायोजन करना सिखाया जाता है तथा अन्य उपयोगी कौशल हस्तकला राष्ट्र निर्माण की भावना विकसित किया जाता है इस अवसर पर संस्था के क्रॉफ्स विभाग की अध्यक्ष रोली सिंह , अरुण कुमार सिंह एवं B.Ed के स्काउट गाइड प्रशिक्षु मौजूद रहे।

वाल्मीकि समाज में बढ़ रही घटनाओं से पनपा आक्रोश

अलीगढ़। महर्षि वाल्मीकि सेना के प्रदेश अध्यक्ष राहुल चेतन के नेतृत्व में वाल्मीकि समाज के लोग,तथा महर्षि वाल्मीकि सेना के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम एक ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा। महर्षि वाल्मीकि सेना के प्रदेश अध्यक्ष राहुल चेतन ने सिटी मजिस्ट्रेट को पढ़कर सुनाया और कहा कि महर्षि वाल्मीकि सेना मांग करती है उत्तर प्रदेश में विगत दिनों से यह देखने में आया है कि दलितों में महादलित वाल्मीकि समाज के लोगों पर प्रदेश भर में कई घटनाएं आत्मा को झंझोड़ देने वाली हुई है।

गोरखपुर- कौड़ीराम कसिहार हाइवे पर दिल दहलाने वाला हादसा- तारा शुक्ल की दर्दनाक मौत, परिवार सदमे में

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- कौड़ीराम के कसिहार हाइवे पर मंगलवार सुबह 10 बजे एक भीषण सड़क हादसे ने सभी को झकझोर कर रख दिया। बेलीपार थाना क्षेत्र के कन्हईल गांव निवासी तारा शुक्ल (पुत्र बद्री नाथ शुक्ल) की तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से मौके पर ही दर्दनाक मृत्यु हो गई। यह हादसा न केवल एक परिवार के लिए त्रासदी बनकर आया, बल्कि तेज रफ्तार और लापरवाही की वजह से होने वाली दुर्घटनाओं की एक और दुखद मिसाल भी सामने लाया।

क्या हुआ उस मनहूस सुबह?

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, तारा शुक्ल

सुबह करीब 9 बजे अपने घर से किसी जरूरी काम के लिए कौड़ीराम की ओर निकले थे। कसिहार हाइवे पर जैसे ही वे सड़क पार कर रहे थे, तभी एक बेकाबू ट्रक ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि तारा शुक्ल का शरीर क्षत-विक्षत हो गया और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। खून से लथपथ सड़क और तारा के निर्जन शरीर का मंजर देखकर वहां मौजूद हर शख्स सन्न रह गया।

गांव में मातम, परिवार बदहवास

हादसे की खबर जंगल की आग की तरह फैली और देखते ही देखते कन्हईल गांव में शोक की लहर दौड़ गई। तारा शुक्ल एक सम्मानित और मिलनसार व्यक्ति थे, जिनका गांव में सभी आदर करते थे। उनके अचानक चले जाने से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। उनकी पत्नी और बच्चे सदमे में हैं, और गांववाले भी इस अपूरणीय क्षति से स्तब्ध हैं।

पुलिस का एक्शन

लेकिन सवाल बरकरार सूचना मिलते ही कौड़ीराम पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।

माता-पिता व ग्रामीणों ने आर्मी में जॉइनिंग के लिए तिलक लगा कर देश की सेवा के लिए भेजा

● गरीब परिवार से निकलकर देश के सुरक्षा के लिए भारतीय सेना में पहली बार में चयनित होने से क्षेत्र में खुशी।

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। माता-पिता व ग्रामीणों ने आर्मी में जॉइनिंग के लिए तिलक लगा कर देश की सेवा के लिए ट्रेनिंग पर भेजा मौजूद रहे साई करो लोग ।गरीब परिवार से निकलकर देश के सुरक्षा के लिए पहली बार में चयनित होने से क्षेत्र में खुशी। विकासखंड रुपईडीह के ग्राम पंचायत तेंदुआ चौखड़िया के निवासी राहुल पुत्र रामसखर के भारतीय सेना में चयनित होने पर क्षेत्र में खुशी की माहौल। माता पिता ने कहा राहुल बचपन से ही बहुत होनहार था जो क्षेत्र में होने वाले आयोजनों में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ बहुत ही होनहार था राहुल ने कहा कि भारतीय सेना में चयनित होने से गर्भ महसूस कर रहा हूं। जिसका पूरा श्रेय माता-पिता बड़े भैय्या राधेश्याम एवं गुरुजनों का रहा प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर तथा उच्च शिक्षा कस्बा के श्री गांधी आदर्श विद्यालय इंटर कालेज खरगुपुर से ग्रहन किया। भारतीय सेना में चयन होने से क्षेत्र के अमरनाथ तिवारी, प्रधान दिनेश कुमार , पूर्व जिला पंचायत गुदगुद मिश्रा,विक्कू मिश्रा दिनेश प्रधान, मगन विहारी, पंडित नान बाबू मिश्रा, शुभम मिश्रा आदि लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

तहसील खजनी में तहसीलदार की कार्यप्रणाली से जनता में रोष, अधिवक्ताओं ने की बार अध्यक्ष से हस्तक्षेप की मांग

स्वतंत्र प्रभात

खजनी (गोरखपुर)- तहसील खजनी में तहसीलदार की कार्यप्रणाली को लेकर आमजन और अधिवक्ता वर्ग में गहरा असंतोष पनप रहा है। अधिवक्ताओं का आरोप है कि तहसीलदार महोदय द्वारा जमानतदारों के सत्यापन कार्य में अनावश्यक विलंब किया जा रहा है, जिससे न्यायिक प्रक्रिया बाधित हो रही है और जिला कारागार में निरुद्ध अभियुक्तों की रिहाई में देरी हो रही है। बार एसोसिएशन के एक सदस्य ने बताया कि कई मामलों में न्यायालय द्वारा जमानतें स्वीकृत हो चुकी हैं, लेकिन तहसील स्तर पर सत्यापन में तकनीकी खामियों और गैर-जिम्मेदाराना

रवैये के चलते जनता को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। एक सप्ताह से अधिक समय से साइट न चलने के कारण इंतखाब खतौनी में बंधक दर्ज नहीं हो पा रहा है, जिससे तहसीलदार सत्यापन आदेश पर हस्ताक्षर नहीं कर रहे।

बार एसोसिएशन खजनी के माननीय अध्यक्ष से अधिवक्ताओं ने आग्रह किया है कि वह स्वयं हस्तक्षेप करते हुए तहसीलदार से वार्ता करें, और परवाने पर हस्ताक्षर करवा कर सत्यापन की प्रक्रिया को सरल बनवाएं। अधिवक्ताओं का कहना है कि साइट चालू होते ही खतौनी में संबंधित प्रविष्टि करा दी जाएगी। जनहित और न्याय प्रक्रिया के सम्मान में, अधिवक्ताओं ने प्रशासन से शीघ्र समाधान की मांग की है, ताकि आम नागरिकों को समय पर न्याय मिल सके। उक्त मामले पर तहसीलदार खजनी से बात किया गया तो स्पस्ट जबाव न देकर बात को काट दिया गया है ,बहरहाल तहसीलदार खजनी का गैर जिम्मेदाराना जबाब मीडिया के सामने आया ।

गमछा विवाद ने लिया खौफनाक रूप- गोरखपुर के परसिया गांव में युवक पर धारदार हथियार से हमला, सिर फटने से हालत गंभीर

स्वतंत्र प्रभात

गोला बाजार /गोरखपुर- गोला थाना क्षेत्र के परसिया गांव में सोमवार रात एक मामूली विवाद ने दिल दहला देने वाली घटना का रूप ले लिया। गमछा मांगने की बात पर शुरू हुआ झगड़ा इतना बढ़ गया कि एक युवक पर धारदार हथियार से हमला कर दिया गया, जिससे उसका सिर फट गया और वह लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। इस घटना ने पूरे गांव में सनसनी मचा दी है।18 वर्षीय शुभम गुप्ता, जो अपने घर के बाहर बैठा था, उसका गमछा गांव के ही एक मुस्लिम युवक ने कथित तौर पर गाली-गलौज करते हुए छीन लिया और भाग गया। शुभम ने जब उसका पीछा किया और

आरोपी के घर तक पहुंचा, तो वहां उस पर धारदार हथियार से ताबड़तोड़ वार किए गए। हमले में शुभम के सिर पर गहरी चोट आई और वह खून से लथपथ हो गया।गंभीर हालत में शुभम किसी तरह गोला थाने पहुंचा और आरोपी के खिलाफ तहरीर दी। हालांकि, समाचार लिखे जाने तक कोई एफआईआर दर्ज नहीं की थी। शुभम के परिजन और ग्रामीण हमलावर की तत्काल गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और गांव में शांति बनाए रखने के लिए स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है। इस घटना ने एक बार फिर छोटे विवादों के हिंसक रूप लेने की खतरनाक प्रवृत्ति को उजागर किया है। ।शुभम की हालत गंभीर बनी हुई है और परिजन उसके ठीक होने की दुआ मांग रहे हैं। यह घटना न केवल एक परिवार के लिए त्रासदी है, बल्कि पूरे समाज के लिए एक चेतावनी भी है कि छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज करने की बजाय समय रहते सुलझाना जरूरी है।

सोनभद्र में फाइलेरिया उन्मूलन के लिए चलेगा विशेष सर्वे, सीडीओ ने दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र- 22 अप्रैल जनपद सोनभद्र में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम को और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है। जिले के चार ब्लॉक - नगवां, चोपन, म्योरपुर, बभनी और राबर्ट्सगंज नगरीय क्षेत्र में एमडीए (मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) अभियान के प्रभाव का आकलन करने के लिए ट्रांसमिशन असेसमेंट सर्वे (टॉस) आयोजित किया जाएगा।इस टॉस सर्वे के सफल क्रियान्वयन के लिए आज मुख्य विकास अधिकारी सोनभद्र जागृति अवस्थी ने विकास भवन स्थित सभागार में संबंधित अधिकारियों के साथ एक बैठक की। बैठक के दौरान उन्होंने अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए।सीडीओ जागृति अवस्थी ने बताया कि टॉस अभियान के तहत 6 से 7

वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की क्यूएफटी (क्विटिफाइड FIlarial एंटीजन टेस्ट) किट के माध्यम से जांच की जाएगी। यह जांच माइक्रोप्लान के अनुसार चयनित विद्यालयों में 1 मई 2025 से 20 मई 2025 के बीच संपन्न कराई जाएगी।उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि चिन्हित सैंपल साइज की रिपोर्ट में 2 प्रतिशत से अधिक बच्चे फाइलेरिया से संक्रमित पाए जाते हैं, तो उन मूल्यांकन इकाइयों/ब्लॉकों में अगले दो वर्षों तक एमडीए अभियान जारी रहेगा। वहीं, यदि संक्रमण दर 2 प्रतिशत से कम रहती है, तो उस ब्लॉक को वैलिडेशन असेसमेंट के लिए भेजा जाएगा। इस प्रक्रिया के सफल होने के बाद यह माना जाएगा कि स्वस्थ व्यक्तियों में माइक्रोफाइलेरिया का ट्रांसमिशन नहीं हो रहा है और उस इकाई को एमडीए मुक्त घोषित कर दिया जाएगा।बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अश्वनी कुमार, अपर/उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, डीसी एमडीएम, उपायुक्त स्वतः रोजगार, जिला मलेरिया अधिकारी, अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नगवां, चोपन, म्योरपुर, बभनी, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी राबर्ट्सगंज अर्बन, डब्ल्यूएचओ के जोनल कोऑर्डिनेटर, डब्ल्यूएचओ के एसएमओ और जिला मलेरिया अधिकारी कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। यह सर्वे सोनभद्र जिले को फाइलेरिया मुक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इसके परिणामों से भविष्य की रणनीतियां निर्धारित करने में मदद मिलेगी।

खजनी में जमीनी विवाद ने लिया खूनी रंग- लाठियों की बरसात, गांव बना रणक्षेत्र, चार घायल

● रावत डाड़ी में पुरानी रंजिश ने मचाया तांडव

पुलिस ने संभाला मोर्चा, सीसीटीवी में खंगाल रही रही फुटेज

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- खजनी थाना क्षेत्र के रावतडाड़ी गांव में सोमवार देर शाम पुराने जमीनी विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। चार महीने पुरानी रंजिश की चिंगारी ने गांव को रणक्षेत्र में तब्दील कर दिया, जहां गडेश यादव और देव व्रत यादव के गुटों के बीच जमकर लाठियां चलीं। इस खूनी टकराव में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हुए, जबकि एक को मामूली चोटें आईं।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, रास्ते को लेकर चार महीने पहले भी दोनों पक्षों में झड़प हो चुकी थी। सोमवार को विवाद फिर भड़का, और देखते ही देखते सड़क पर लाठियों की बरसात शुरू हो गई। दोनों पक्षों के समर्थक जुट गए, जिससे गांव में दहशत फैल गई।खजनी पुलिस ने तत्काल मौके पर पहुंचकर स्थिति को काबू में किया और घायलों को नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। थानाध्यक्ष अर्चना सिंह ने बताया, "एक पक्ष से गडेश यादव और दूसरे पक्ष से धर्मदेव व देव ब्रत गंभीर रूप से घायल हैं। मामला पुराने विवाद से जुड़ा है। सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है, और दोषियों पर कड़ी कार्रवाई होगी।"पुलिस ने गांव में गश्त बढ़ा दी है और शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए कड़े कदम उठाए जा रहे हैं। घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल है, लेकिन पुलिस का कहना है कि स्थिति अब नियंत्रण में है।आगे की जांच जारी- पुलिस विवाद की जड़ और हमलावरों की सटीक भूमिका तलाश रही है। स्थानीय लोग घटना से सहमे हुए हैं और जल्द कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

आगामी 27 से 30 नवंबर को होने वाले राष्ट्रजागरण गायत्री महायज्ञ पर किया गया विचार विमर्श

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। जिला गायत्री परिवार ट्रस्ट बस्ती की जिला स्तरीय कार्यकर्ता गोष्ठी राजकीय इंटर कॉलेज बस्ती के बहुउद्देशीय हाल में शांतिकुंज हरिद्वार के प्रतिनिधियों द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें आगामी 27 से 30 नवंबर 2025 को जीआईसी कॉलेज के मैदान में होने वाले राष्ट्रजागरण गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण की पावन कथा का कार्यक्रम संबंधी एवं व्यवस्थाओं पर विचार विमर्श किया गया। 1% 20(1)% 20(5) शांतिकुंज से पधारे प्रतिनिधि जयप्रकाश वर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम बस्ती जिले का ऐतिहासिक कार्यक्रम है जिसमें परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के युग निर्माण योजना का समग्र रूप एक साथ मूर्तिमान होगा। वर्ष 2026 में परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा की जन्म शताब्दी है। इस निमित्त युग निर्माण योजना का लक्ष्य मनुष्य में देवत्व का उदय तथा धरती पर स्वर्ग के अवतरण को साकार करने हेतु गायत्री यज्ञ को सद्ज्ञान एवं सत्कर्म के रूप में घर-घर व जन जन तक पहुंचाना है। इस कार्यक्रम के माध्यम से सभी कार्यकर्ता परिजन इस कार्य में सक्रियता से जुट जाए।गोष्ठी में कार्यक्रम की सफलता हेतु मुख्य आयोजन समिति, भोजनालय, आवास, यज्ञशाला, वित्त प्रबंधन, आदि कई महत्वपूर्ण समितियों का गठन किया गया तथा पूरे जिले से आए लगभग 300 से अधिक परिजनों को संकल्प पत्र, प्रचार

सामग्री, रसीद बुक, आदि वितरण किया गया। इस आयोजन में बस्ती के अलावा संतकबीर नगर, गोरखपुर, अयोध्या, गोंडा, महाराजगंज, सिद्धार्थ नगर, आदि जिलों से भी हजारों की संख्या में गायत्री परिजनों के शामिल होने की संभावना है। इसलिए पूर्वांचल क्षेत्र का यह अभूतपूर्व आयोजन बस्ती की पावन धरती पर संपन्न होने जा रहा है। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में जनपद बस्ती की पावन धरती पर पहली बार युवाओं के प्रेरणा स्रोत प्रतिकुलपति-देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज हरिद्वार, परम आदरणीय श्री चिन्मय पंड्या भैया जी व अन्य कई गणमान्य विभूतियां पधार रही हैं। जिनका प्रेरक मार्गदर्शन हम सभी को प्राप्त होगा। इस कार्यक्रम में जिला गायत्री परिवार ट्रस्ट के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी जगराम के साथ आकाश वर्मा, नितेश सिंह, अजय विश्वकर्मा, लालमणि चौधरी, विशाल श्रीवास्तव, मनोज कुमार सिंह, पारसनाथ, अनूप गौड़, ओमप्रकाश लोहिया, रामकमल सिंह, जगदीश शुक्ला, अयोध्या प्रसाद चौधरी, राजन कश्यप, लता सिंह, पुष्पा सिंह, लक्ष्मी, सुनीता सिंह तथा सभी ब्लॉकों के समन्वयक सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ ओबरा नगर में बेखौफ संचालित हो रहे है बिना मान्यता प्राप्त विद्यालय

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा / सोनभद्र- जिला बेसिक शिक्षा विभाग ने मान्यता प्राप्त विद्यालय की लिस्ट जारी करने के बाद भी कई जगहों पर चल रहे हैं बिना मान्यता प्राप्त विद्यालय! बात करे खंड शिक्षा विभाग के चोपन ब्लॉक अंतर्गत ओबरा में कई ऐसे विद्यालय संचालित हो रहे हैं जो पिछले कई वर्षों से बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं , जिनकी मान्यता आज तक नहीं है फिर भी शिक्षा विभाग को चुनौती देते हुए बेखौफ संचालित हो रहे हैं । नए सत्र 2025 एवं 2026 में मान्यता प्राप्त और बिना मान्यता प्राप्त के सभी स्कूलों ने बच्चों के प्रवेश प्रारम्भ कर दिए है अभिभावकों को यह भी जानकारी नहीं है कि कौन मान्यता प्राप्त विद्यालय है? कई ऐसे बिना मान्यता प्राप्त विद्यालय संचालित हो रहे हैं जो अभिभावकों को बहला फुसलाकर अपने स्कूलों में जबरन एडमिशन लेने पर दबाव

डाल रहे हैं। साथ ही शासनादेश की भी धज्जियां उड़ा रहे है, संबंधित अधिकारी भी इनके आगे मूकदर्शक बने बैठे है। जैसा कि पूरे उत्तर प्रदेश में सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ द्वारा अवैध विद्यालयों को बंद कराकर उनमें अध्ययनरत बच्चों को नजदीकी सरकारी विद्यालय में प्रवेश कराने के लिए शिक्षा विभाग को निर्देश दिए गए है। लेकिन फिर भी नगर पंचायत ओबरा में धड़ल्ले से कई ऐसे विद्यालय संचालित हो रहे है जिन्हें नियम कानून से कोई फर्क नहीं पड़ता। जब खण्ड शिक्षा अधिकारी चोपन सुनील कुमार से इस संबंध में जानकारी ली गई तो उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा अवैध विद्यालयों को नोटिस जल्द ही देकर कार्रवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

नया गांव गुलरिया में विधवा की जमीन उसके देवर ने धोखाधड़ी से कर दी बिक्री, महिला ने एसडीएम से की शिकायत

शाहजहांपुर- जनपद के थाना जलालाबाद क्षेत्र के गांव नयागांव गुलरिया निवासी महिला रानी पत्नी रामवीर ने उप जिलाधिकारी जलालाबाद को मंगलवार को प्रार्थना पत्र देकर बताया की उमरिया मंदिर के दक्षिण साइड में उनके खेत की जमीन है। उसे जमीन को उसके देवर गन्नू ने उनका बिना बताए धोखाधड़ी करके करा ली । जिससे भूमि हो गई है। महिला ने उप जिलाधिकारी से शिकायतकर न्याय की मांग की है।

डीजे को लेकर हुई मारपीट, एक युवक का फटा सिर

शाहजहांपुर- जलालाबाद में एक शादी समारोह के दौरान डीजे की आवाज कम करने को कहने पर मेहमान को कुछ लोगों ने बुरी तरह पीट दिया। घटना 20 अप्रैल की है।थाना तिलहर के ग्राम ग्वार निवासी सुरेश अपने फुफेरे भाई प्रेमपाल की बेटी की शादी में गांव धियारिया आया था। दावत के दौरान जब डीजे तेज आवाज में बज रहा था, सुरेश ने इसे कम करने को कहा। इस बात पर कुछ ग्रामीण भड़क गए।आरोपियों ने सुरेश पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। उन्होंने लात-घूंसों से भी मारपीट की। इस हमले में सुरेश का सिर फट गया और शरीर पर कई जगह चोट के निशान बन गए।पीड़ित ने आरोपियों में आर्यन और कृष्णपाल समेत पांच अज्ञात लोगों का नाम बताया है। पुलिस ने सुरेश को मेडिकल परीक्षण के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जलालाबाद भेजा है। साथ ही आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

आरएसएस के सरकार्यवाह व मुख्यमंत्री ने चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ कौशल को किया सम्मानित

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। सम्मान समारोह का आयोजन नेशनल मेडिकोजऑर्गेनाइजेशन अवध एवं गोरक्ष प्रांत तथा श्री गुरु गोरखनाथ सेवा न्यास के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। भारत नेपाल सीमा के वनवासी क्षेत्र के थारू जनजाति में प्रत्येक वर्ष यह कार्यक्रम आयोजित होता है। इसमें श्री गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य सेवा में लखीमपुर नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र व विभिन्न क्षेत्रों में लगातार निशुल्क सेवा प्रदान करने के लिए गोला गोकर्णनाथ स्थित सनशाइन हॉस्पिटल के संचालक डॉक्टर कौशल वर्मा को सिटी मांटेसरी स्कूल ऑडिटोरियम गोमती नगर लखनऊ में सम्मानित किया गय. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होशबोले व कार्यक्रम के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रहे। यह यात्रा वनवासी क्षेत्र में लगातार जमीनी स्तर से सेवा कार्यों में लगी हुई है। श्री गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य सेवा यात्रा इसी प्रकार निरंतर कार्य करती रहे ऐसी कामना की जाती है।

झोपड़ी में लगी आग, घरेलू सामान जलकर हुआ नष्ट दो सिलेंडर फटे पुलिस ने बझाई आग

शाहजहांपुर। लोधीपुल के निकट झुग्गी झोपड़ियां में रह रहे गरीब परिवार रात को सो रहे थे। इसी दौरान किसी अनजान व्यक्ति ने झोपड़ी में आग लगा दी। घर में आग लगी देख महिला ने अपने बच्चों को निकलने का प्रयास किया। मैं रोड से निकल रही पुलिस ने झोपड़ी में लगी आग को देखकर दमकल की गाड़ियों को बुलाया और आग बुझाने का कार्य किया पीड़ित महिला प्रिया ने बताया झोपड़िया में रहे सभी सो रहे थे रात 2:00 बजे अज्ञात युवक ने आग लगाकर फरार हो गया आग लगते हैं घर का सामान जलकर राख हो गया इस दौरान घर में रखें दो सिलेंडर में भी आग लग गई मौके पर पहुंची पुलिस ने फायर ब्रिगेड की गाड़ी को बुलाकर आज को बूझकर गरीब की मदद की जब तक आग बुझाई गई तब तक घर में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया गरीब परिवार के पास खाने को लिए कुछ भी नहीं बचा पहनने के लिए भी सारे कपड़े जल गए गरीब परिवार जिलाधिकारी से मदद की गुहार कर रहा है।

आवश्यकता है

एल बी एस Group आंफ एजूकेशन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कालेज हरदुआ नवाबगंज जिला बरेली में आवश्यकता है वी एड संकाय के शिक्षण कार्य हेतु एन सी टी ई के द्वारा निर्धारित मानक अनुसार विभाग अध्यक्ष प्रवक्ताओं की आवश्यकता है इच्छुक अभ्यर्थी 7 दिनों के अंदर कॉलेज में संपर्क कर सकते हैं।

मो.-9412360790/9675947761
Mail id- Lbscollegevz@gmail.com

गंगा एक्सप्रेसवे की हवाई पट्टी को 27 अप्रैल को वायु सेना को नियंत्रण में देने की तैयारी मे जुटा प्रशासन

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। जनपद के जलालाबाद मे मंगवार दोपहर सीओ अमित चौरसिया ने गंगा एक्सप्रेसवे की हवाई पट्टी का निरीक्षण किया उन्होंने कार पार्किंग, पुलिस ट्यूटी प्वाइंट हवाई पट्टी पर आने जाने वाले रास्ते का किया निरीक्षण किया । वायु सेना 27 अप्रैल को हवाई पट्टी अपने हैंड ओवर करेगी। 2 , 3 मई को वायु सेना के लड़ाकू विमान लैंडिंग का ट्रायल, होगा। हवाई पट्टी के किनारे बास के सहारे जाली दार कपड़े की पांच छ फूट ऊंचाई की बाड लगाई जा रही बैरिकेटिंग । बीते सोमवार को वायु सेना कमांडिंग ऑफिसर मुदित माथुर ने ग्राम चमर पूरा खुर्द पर बनी हवाई पट्टी का निरीक्षण किया था बरेली से आए एयरफोर्स के एरिया कमांडिंग ऑफिसर एम गंगोला ने अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। उन्होंने बैरिकेडिंग सहित अन्य सभी कार्य 26 अप्रैल तक पूरे करा लेने के निर्देश दिए हैं। एसडीएम दुर्गेश यादव ने बताया कि जो कार्य बताए गए हैं, उनमें से अधिकांश पूरे हो गए हैं। फेंसिंग लगाने का काम तेजी से चल रहा है। निरीक्षण में कमांडिंग ऑफिसर कार्य की प्रगति से संतुष्ट दिखे। एसडीएम ने बताया कि शेष कार्य 26 अप्रैल तक पूरे करा लेने के लिए निर्माण कंपनी से कहा गया है, क्योंकि अगले दिन हवाई पट्टी वाले क्षेत्र को सुरक्षा कारणों से वायु सेना अपने नियंत्रण में ले लगी।

पदयात्रा विषयक लोक भारती की योजना बैठक

शाहजहांपुर/ भैंसी नदी के पुवायां विकासखंड क्षेत्र की पदयात्रा विषयक लोक भारती की योजना बैठक को संबोधित किया।यह यात्रा 22 अप्रैल को पीलीभीत जनपद से प्रारंभ होकर 26 अप्रैल को पुवायां विकासखंड में प्रवेश करेगी और 28 अप्रैल को पर्णघाट पर समापन होगा।इस बैठक में विहिप प्रांत उपाध्यक्ष राजीव सिंह, जिलाध्यक्ष के के गुप्ता, भैंसी पुनर्जीवन कार्यकर्ता एवं पूर्व मंडल अध्यक्ष भाजपा विपिन शुक्ल,मंडल अध्यक्ष भाजपा राजेश राजपूत, लोक भारती सह संयोजक लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, बाबा रुद्रदेवानंद , प्रमोद सिंह, उदयराज चौहान, अरविंद मिश्रा सहित भैंसी अभियान से जुड़े अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कृषि भवन सभागार लोधीपुर में किसान दिवस का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर/ जिला कृषि अधिकारी ने अवगत कराया है कि शासन द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुपालन में किसानों की समस्याओं के निराकरण के लिये प्रत्येक माह के तृतीय बुद्धवार को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में किसान दिवस बैठक का आयोजन किया जा रहा है। किसान दिवस बैठक में कृषि क्षेत्र से जुड़े समस्त विभाग के अधिकारी जिसमें सिंचाई, ऊर्जा एवं कृषि उत्पादन शाखा से जुड़े विभाग जैसे- कृषि, उद्यान, सहकारिता, मत्स्य, दुग्ध उत्पादन, पशुपालन, गन्ना एवं रेशम विभागों के अधिकारियों के अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, लीड बैंक मैनेजर तथा इन्श्योरेंस कम्पनी के प्रतिनिधि द्वारा भाग लिया जायेगा। बैठक में एकीकृत रूप से कृषि एवं अन्य विभागों द्वारा संचालित योजनाओं/कृषक वैज्ञानिक संवाद/कृषि निवेशों एवं अन्य उपकरणों पर अनुदान/विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों की चयन प्रक्रिया/विभिन्न विभागों द्वारा दी जाने वाली सुविधाएं/कृषि प्रदर्शनी व मेले आदि की सम्पूर्ण जानकारी सम्बन्धित अधिकारी द्वारा दी जायेगी। माह अप्रैल, 2025 में किसान दिवस बैठक का आयोजन दिनांक 24 अप्रैल, 2025 को कृषि भवन सभागार, कार्यालय उप कृषि निदेशक, शाहजहांपुर, लोधीपुर में अपरान्ह 12:30 बजे से किया जाना है, जिसमें जनपद के कृषक प्रतिनिधि, प्रगतिशील कृषक एवं समस्त सम्बन्धित विभागीय अधिकारी आमंत्रित हैं। अतः जनपद के कृषक प्रतिनिधियों, प्रगतिशील कृषकों एवं जनपद स्तरीय अधिकारियों से अनुरोध है कि उपरोक्त किसान दिवस बैठक में निर्धारित तिथि को ससमय भाग लेने का कष्ट करें।

किडजी एलिमेंट्री स्कूल के बच्चों के साथ पुलिस अधीक्षक ने किया वृक्षारोपण

शाहजहांपुर। विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर पुलिस अधीक्षक शाहजहांपुर द्वारा कारगिल आरसी पार्क ऑफिसर कॉलोनी में किडजी एलिमेंट्री स्कूल के बच्चों के साथ वृक्षारोपण किया गया तथा बच्चो को बताया कि पेड़ हमारे वातावरण को शुद्ध बनाने और ऑक्सीजन प्रदान करने में मदद करते हैं । हमें इनकी रक्षा करनी चाहिए ।इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंध ट्रस्टी अभिनव ओमर रौशनी गुप्ता अशनील सिंह आदि उपस्थिति रहे ।

टेटनस और डिप्थीरिया की बीमारी से बचाने को डॉक्टर मुगीश ने बैठक की

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/क्यों लड़िया के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर मोहम्मद मुगीश ने संक्रामक बीमारियों को रोकने के लिए की बैठक दिया निर्देश सहयोग मांगा प्रभारी ने विकास खंड भदपुरा कार्यालय में खंड विकास अधिकारी के साथ बैठक कर 24 अप्रैल से 10 में तक चलने वाले टीकाकरण अभियान में शिक्षकों आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ग्राम प्रधानों ग्राम पंचायत सचिवों आदि के सहयोग के लिए बैठक की गई। इस टीकाकरण अभियान के तहत कोई भी बच्चा छूट न जाए इसलिए अभियान के तहत टीकाकरण करवा कर टेटनस और डिप्थीरिया जैसी भयंकर बीमारी को रोकने के लिए कमर कसी है साथ ही उन्होंने बताया यह बीमारी होने पर रोगी के उपचार हेतु यहां पर कोई भी दवा एवं संसाधन उपलब्ध नहीं है इसलिए सत प्रतिशत टीकाकरण करवा कर इस महामारी जैसी भयंकर बीमारी को रोका जा सकता है। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी विजय कुमार खंड विकास अधिकारी कमल सिंह चौहान बाल विकास परियोजना की तरफ से नीरज गंगवार और कौन हो स्वास्थ्य विभाग से वीसीपीएम राजेश्वरी एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्य कर्मचारी गण उपस्थित थे

विश्व पृथ्वी दिवस अन्तर्गत हुई निबन्ध व पर्यावरण व नदी संरक्षण प्रतियोगिता

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहाँपुर। जिला गंगा समिति ने प्रभागीय वनाधिकारी नवीन खण्डेलवाल के निर्देशन में वर्क संस्था के सहयोग से ऑल सेन्ट स्कूल, शाहजहाँपुर में विश्व पृथ्वी दिवस मनाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधानाचार्या साक्षी रस्तोगी एवं जिला परियोजना अधिकारी डा0 विनय कुमार सक्सेना ने किया। कार्यक्रम अन्तर्गत विद्यार्थियों के मध्य निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई साथ ही पर्यावरण एवं नदी संरक्षण विषयक सांप-सीढ़ी खेल खिलाया गया जिसमे खेल के साथ-साथ पर्यावरण व नदी संरक्षण के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को समझाया गया। निबन्ध प्रतियोगिता अन्तर्गत द्वैविक शुक्ला ने प्रथम, अर्शी राठौर ने द्वितीय व काव्या वर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया वही पर्यावरण व नदी संरक्षण विषयक सांप सीढ़ी प्रतियोगिता में अर्चित व काव्या विजेता रहे साथ ही मानवी व द्वैविक उप-विजेता रहे। समस्त विजयी प्रतिभागियों को प्रतीक चिन्ह, टी-शर्ट एवं चाचा चौधरी संग गंगा की बात विषयक कामिक्स देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि असिस्टेन्ट प्रोफेसर एस एस कॉलेज डा0 रूपक श्रीवास्तव ने पर्यावरण को बचाने हेतु छोटे-छोटे प्रयासों जैसे बिजली बचाना, जल बचाना, पेड़-पौधों को संरक्षित करना आदि से आरम्भ करने को प्रेरित किया जिससे कि छोटे प्रयासों से बड़ा परिवर्तन लाया जा सके व सम्पूर्ण पृथ्वी को बचाया जा सके। प्रधानाचार्या साक्षी रस्तोगी ने आयोजकगणों का आभार व्यक्त करते हुये युवाओं को अपने-अपने जन्मदिवस पर कम से कम 1 वृक्ष रोपित करने व उसका संरक्षण करने का संदेश दिया। वर्क संस्था के टीम लीडर मोहम्मद रेहान ने वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ सभी को अपना परिवार मानने व सभी के साथ मिलकर पृथ्वी जैसे अमूल्य गृह को बचाने हेतु आगे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया। जिला परियोजना अधिकारी डा0 विनय कुमार सक्सेना ने जिला गंगा समिति से अवगत कराते हुये विभिन्न पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी दिवसों में से विश्व पृथ्वी दिवस को महत्वपूर्ण दिवस बताते हुये समिति द्वारा किये जा रहे कार्यों से अवगत कराया व इस प्रकार के विभिन्न जागरूकता गतिविधियों को जन गंगा व ज्ञान गंगा की महत्वपूर्ण कड़ी बताया। निर्णायक मण्डल कार्यक्रम में विद्यालय समन्वयक तशकीन शगुफ्ता व मोहम्मद फैज़ रहे। विशेष सहयोग विद्यालीय स्टॉफ, मोहम्मद अदीब व मो0 उमैर आदि का रहा। कार्यक्रम का संचालन वर्क संस्था के युवा स्वयंसेवी मोहम्मद फैज़ ने किया।

रसायन नदी किनारे झाड़ियों में छिपी बैठी बाघिन अब खाबड़ में घिरी नजर आ रही है

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। दक्षिणी खीरी वन प्रभाग के महेशपुर वन रेंज क्षेत्र के ग्राम इमलिया अजान में गांव के बाहर सरायन नदी की झाड़ियों में छिपी हमलावर बाघिन को पकड़ने की कवायद पिछले कई दिनों से शुरू कर दी गई। बाघिन को बेहोश कर पकड़ने के लिए गाठित टीमें व चार पहिया वाहन,और मादा हाथिनी डायना, सुलोचना पर सवार होकर नदी के आस पास लगातार कांबिंग कर रहीं हैं। लेकिन वन विभाग को अभी तक कोई कामयाबी नहीं मिल पाई है। हालांकि वन विभाग की टीम ने नदी के किनारे झाड़ियों के आसपास खाबड़ को लगा दिया है। मालूम हो कि गन्ने की फसल समाप्त होने के बाद बाघिन को छिपने के लिए एक ठिकाना सरायन नदी की झाड़ियां बनी हुई हैं। इसी के बीच एक सुरंग टाइप की गहरी खोढ है जो छुपने का सुरक्षित ठिकाना है। अब गन्ना कटने के बाद बाघिन भटकने को मजबूर हो रही है। इधर दुधवा टाइगर रिजर्व से आए एक्सपर्ट डाक्टर दयाशंकर व कर्तानिया घाट के डाक्टर दीपक कुमार की अलग अलग टीमें बाघिन को पकड़ने में जुटी हुई है। डब्लू डब्लू एफ व वन विभाग का संयुक्त कांबिंग अभियान दिन में भी जारी रहता है डब्लू डब्लू एफ के परियोजना अधिकारी दबीर हसन वन विभाग के रेंजर निर्भय प्रताप साही, डिप्टी रेंजर रामनरेश वर्मा, रोहित वन दरोगा श्रीवास्तव, माया प्रसाद,मित्र पाल सिंह तोमर सहित करीब 30 लोगों का स्टाफ बाघिन को पकड़ने मे लगा हुआ है इधर ग्रामीणों की मानें तो बाघिन को पकड़ने के लिए नदी किनारे लगाये गये खाबड़ में बाघिन के एक शावक के फंसने की चर्चा का विषय बना हुआ है। यहां तक कि ग्रामीणो का आरोप है कि जिस शावक को वन विभाग ने पकड़ा है उसको नदी किनारे लगाये गये पिजड़े में रखा गया ताकि बाघिन अपने बच्चे को खोजते हुए आये और लगाये गये पिंजड़े में फंस जाये। हालांकि वन कर्मी इस बात को सिरे से नकार रहे हैं।

गत्ते से भरी चलती हुई डीसीएम में लगी आग, हैदराबाद थाना परिसर मे पहुंचते ही पुलिस ने बुझाई आग

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। थाना हैदराबाद क्षेत्र के गोला-मोहम्मदी मार्ग पर रविवार देर रात गोला की तरफ जा रही गत्ते से भरी चलती डीसीएम में अज्ञात कारणों के चलते आग लग गई। ड्राइवर ने सूझबूझ दिखाते हुए आग से जल रही रही गत्ते भरी डीसीएम को सीधे हैदराबाद थाना परिसर के अन्दर ले जाकर खड़ी कर दी। इस दौरान थाने का स्टाफ जलती हुई डीसीएम को देख कर दंग रह गये। पुलिस ने अपनी दरिया दिली दिखाते हुए मौके पर पहुंच कर समस्त स्टाफ ने आग पर काबू पाया। जिससे बड़ा नुकसान होने से बचा।ए इधर चालक का कहना है कि महेश पुर से जिस समय निकल रही थी उसी समय रात्रि में हाईवे पर शादी पार्टियों में छुटाई जा रही आतिशबाजी की कोई चिंगारी गिरने के बाद आग लगने का अनुमान है।

एडीएम को स्कूलों में अध्यापक नहीं मिले, कराई बच्चों को प्रेयर

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर /अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 अरविंद कुमार ने विकास खंड भावलखेड़ा के कई स्कूलों का औचक निरीक्षण किया, जिसमें उन्हें कई स्कूलों में ताला लगा मिला और कुछ में बच्चे उपस्थित थे, लेकिन अध्यापक नहीं थे। अध्यापकों की अनुपस्थिति में उन्होंने खुद बच्चों को प्रेयर करायी। निरीक्षण के दौरान पूर्व माध्यमिक विद्यालय सिशौवा में 8:25 बजे कोई अध्यापक उपस्थित नहीं मिला, जबकि बच्चे मौजूद थे। इसी तरह पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरसावा में 8:40 बजे कोई अध्यापक नहीं मिला। इसके अलावा कुआं डॉडॉ में 8:05 बजे और पूर्व माध्यमिक विद्यालय फ़तियापुर में 9:00 बजे ताला लगा मिला। फ़तियापुर स्कूल में 11 बजे तक इंतजार करने के बाद भी कोई अध्यापक या बच्चे नहीं आए। ग्रामीणों ने बताया कि स्कूल कभी-कभी खुलता है और प्रधानाध्यापिका महीने में एक-दो बार आती हैं। स्कूल की शिक्षा व्यवस्था बिगड़ गई है और बच्चों का भविष्य खराब हो रहा है। अपर जिलाधिकारी ने बताया कि स्कूलों में अध्यापकों का समय से उपस्थित न होना खेदजनक है और 11 बजे तक ताला लगा पाया जाना अक्षम्य है। उन्होंने रिपोर्ट जिलाधिकारी को सौंपी है और कड़ी कार्रवाई की जा रही है।

राष्ट्रीय बजरंग दल के जिला अध्यक्ष राकेश कनौजिया के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने सौंपा छः सूत्रीय ज्ञाप

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल के जिला अध्यक्ष राकेश कनौजिया के नेतृत्व में सैकड़ो पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने विरोध करने के साथ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला फूंक कर गोला तहसील जाकर महामहिम , राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को संबोधित ज्ञापन एसडीम विनोद कुमार गुप्ता को सोपा गया। सौपे गए 6 सूत्रीय ज्ञापन में पहली मांगमुर्शिदाबाद से पीड़ित हिंदुओं के पलायन को रोका जाए। दूसरी मांग है कि एन आइ ए से मुर्शिदाबाद दंगे की जांच कराई जाए। तीसरी मांग मे ममता बनर्जी की सरकार को बर्खास्त किया जाए। चौथी मांग मे पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाया जाए। पांचवी मांग मृतक हिंदू परिवारों को 20-20 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाए। छठी मांग दंगाइयों पर बड़ा एक्शन लिया जाए साथ ही उनके घरों पर बुलडोजर जैसी कार्रवाई की जाए व हिंदू सुरक्षा के लिए पीएसी फोर्स तैनात की जाए। ज्ञापन सौंपते समय जिला महामंत्री प्रदीप जायसवाल, जिला उपाध्यक्ष मनोज शुक्ला, जिला संयोजक ठा0 पंकज सिंह, जिला मीडिया प्रभारी पंकज शुक्ला,कनिष्ठ जिला उपाध्यक्ष ऋतुराज शर्मा, नगर अध्यक्ष आकाश बजरंगी गोला, नगर उपाध्यक्ष जितेंद्र सनातनी गोला, नगर मंत्री विकास कनौजिया गोला, अंशु वर्मा, राहुल शर्मा, अमन कुमार, आयुष भारती, राहुल भारती, सुमित कनौजिया, अनिकेत कुमार, श्यामू शाह, पवन कुमार, अभिषेक कुमार, संकेत कुमार सहित तमाम पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित थे इस दौरान भाई पुलिस बल तैनात रहा।

जल जीवन मिशन में लापरवाही, टोटी नहीं लगने से सड़कों पर वह रहा पानी, जिलाधिकारी से शिकायत

बंडा/ शाहजहांपुर बंडा क्षेत्र की ग्रामपंचायत ररूआ में जल जीवन मिशन में लापरवाही , टोटी नहीं लगने से सड़कों पर बह रहा पानी , ररूआ निवासी राकेश कुमार वर्मा ने जिला अधिकारी से फोन पर शिकायत , बताया हर घर जल हर घर नल योजना के तहत हमने अपना कनेक्शन करवाया था लेकिन जल जीवन मिशन के ठेकेदार ने कनेक्शन में लगा नीला पाई , ब, जीआई पाइप यह कहकर काट ले गए कि तुम्हारा टोटी लगाएंगे तब फिट कर देंगे लेकिन 6 माह बीत जाने के बाद आज तक जल जीवन मिशन के कर्मचारियों ने टोटी लगवाना उचित नहीं समझा, जिससे पानी रोड पर बह रहा है, आए दिन राह चलते लोगों को निकालने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ,राकेश कुमार ने बताया कि जल जीवन मिशन के तहत टोटी ना लगने से रोड पर पानी बहने की वजह से सरकारी रोडवेज निकलती है, कई बार पलटते बच्ची, बंडा से ररूआ कुआं डांडा मोड पर कोई बड़ा हादसा होने का डर है।

पट्टे की जमीन दिलाने के नाम पर मांगे 70 हजार!

लेखपाल का ऑडियो हुआ वायरल

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर-खीरी। तहसील निघासन में लेखपालों के हौसले इस कदर बढ़े हैं कि उनमें कार्रवाई का कोई डर नजर नहीं आता है। एक लेखपाल ने पट्टे की जमीन पर कब्जा दिलाने के लिए पीड़ित से 70 हजार रुपये और राशन सामग्री की मांग किया। इतना ही नहीं लेखपाल ने उसकी पत्नी और पिता पर भी अभद्र टिप्पणी कर डाली। - उसका ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद हड़कंप मच गया। एसडीएम ने जांच के आदेश दिए हैं। जानकारी मुताबिक, निघासन तहसील के गांव कृपा कुंड मजरा बंगलहा - कुटी निवासी दुर्योधन ने बताया कि उनके पिता पूरन चन्द के नाम 0.405 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि का पट्टा है। पिछले दो वर्षो से वह और उनके पिता भूमि की पैमाइश और कब्जा दिलाने के लिए तहसील कार्यालय के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन आज तक अफसर उसे कब्जा नहीं दिला सके। आरोप है कि लेखपाल श्रीनिवास त्रिपाठी 70 हजार रुपये नकद, राशन और अन्य सामग्री की मांग करते हैं। शिकायतकर्ता का आरोप है कि लेखपाल ने उनकी खाली पड़ी पट्टे की जमीन पर अपने खास चहेतों का कब्जा करा रखा है। इतना ही नहीं, गांव की अन्य सरकारी जमीनों पर भी अवैध कब्जे करवाकर छमाही और सालाना वसूली करते हैं। खास बात यह है कि लेखपाल ऑडियो में तहसीलदार और लेखपाल संघ के अध्यक्ष जगदीश प्रसाद को भी हिस्सा देने की बात कह रहा है। साथ ही युवक की पत्नी और पिता के खिलाफ भी अभद्र टिप्पणी करते हुए उसे सुना जा रहा है। सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद तहसील के अफसरों और लेखपालों में हड़कंप मच गया। एसडीएम राजीव निगम ने वायरल आडियो को संज्ञान में लेकर जांच के आदेश दिए हैं। उधर आरोपी लेखपाल ने कुछ भी कहने से इंकार कर दिया। एसडीएम राजीव निगम ने बताया कि वायरल आडियो की जांच कराई जा रही है। जांच के बाद दोषी मिलने पर लेखपाल के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

बसपा शासन काल में दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक समाज की हुई तरक्की- एडवोकेट सुरेंद्र कुमार आजाद

स्वतंत्र प्रभात

सत्ता व विपक्ष राजनीति के भूखे भेड़िया है हिंदू- मुस्लिम के नाम पर अपनी-अपनी राजनीति चमकाने के लिए आए दिन दंगा फसाद करते रहते हैं, अगर भाजपा नाग है तो सपा- कांग्रेस सांप आजादी के 75 वर्ष बाद भी दलित को घोड़ी चढ़ने पर, गरीब मजदूर को कम करने से मना करने पर उसे जिंदा खेत में चला दिया जाता है, 11-11 साल की बच्चियों के साथ रेप हो रहे हैं दलितों पिछड़ों को मंत्री बनने से, एक साथ शमशान जाने से, दलित के घर खाना खाने से, जातिवाद मिटाने वाला नहीं है शिक्षा स्वास्थ्य और रोजगार की जरूरत है संविधान के नाम पर विपक्ष मजबूत तो हो गया लेकिन सदन में आवाज नहीं उठाता सिर्फ आपस में लड़वाने के लिए ही मंथन करते रहते हैं इसलिए इन सबको सत्ता से बाहर करना है शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, तरक्की, अमन व शांति अगर चाहते हो तो 2027 में बसपा को सत्ता में लाना होगा एडवोकेट सुरेंद्र कुमार आजाद पुरी लगन व मेहनत से बसपा के जनधार को बढ़ाने के लिए गांव -गांव जाकर नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से तमाम पुराने छोटे-बड़े कार्यकर्ताओं को बसपा में कर रहे वापसी एडवोकेट आजाद बसपा के बड़े-बड़े नेताओं के बेहद करीबी माने जाते हैं इसलिए दिन-रात मेहनत करते हैं और कहते हैं कि जब तक बसपा की सरकार नहीं आती है तब तक दिन रात मेहनत करते रहेंगे।

दुष्कर्म के अभियोग में वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

शाहजहाँपुर। पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार अपराध की रोकथाम व अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के निर्देशन में व क्षेत्राधिकारी जलालाबाद के कुशल पर्यवेक्षण में एवं प्रभारी निरीक्षक थाना परौर के नेतृत्व में थाना परौर पुलिस टीम को बड़ी कामयाबी हासिल हुई।वादिनी द्वारा अपनी नाबालिग पुत्री के साथ दुष्कर्म करने के सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर के आधार पर मु0अ0सं0 44/2025 धारा 64 (1) / 333/351(2) 61 (2) ब्न्ह.स. व 3/4 पॉक्सो एक्ट पंजीकृत किया गया था। उपरोक्त मुकदमें में वाछित अभियुक्त आशीष पुत्र राजीव कुमार, नि0 ग्राम बम्हौरा, थाना परौर, को थाना परौर पुलिस टीम द्वारा पकडिया चौराहा थाना परौर क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही करते हुए मा0 न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

विश्व टीकाकरण अभियान के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न

भदोही- दिनांक 22 अप्रैल 2025 को विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी डॉक्टर शिवाकांत द्विवेदी की अध्यक्षता में विश्व टीकाकरण अभियान के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई बैठक में 2 यूनिसेफ बिल गेट्स यूडीएसपी एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी गण उपस्थित रहे मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि डिप्थीरिया के बढ़ते हुए केसों के दृष्टिगत ब्लाकों शहरों व स्कूलों में 24 अप्रैल से 10 मई 2025 तक विशेष टीकाकरण अभियान मनाया जाना है समस्त संबंधित अधिकारी व कर्मचारी गण को निर्देशित किया गया कि वे निर्देशानुसार इस टीकाकरण अभियान को सफल बनाएं।

चोरों ने पत्रकार के घर से उड़ाए लाखों का माल

सुरियावां- क्षेत्र के मेढ़ी में बीती रात पत्रकार अमर बहादुर सिंह के घर में सीढ़ी के रास्ते से घुसकर चोरों ने लाखों का माल उठा लें गये चोरों ने दो दर्जन कीमती साड़ी लाखों रुपए के आभूषण में सोने की बनी कान की बाली,मांग टीका,झाली आदि। चांदी का कमरपेटी व पैंजनी तथा कुछ नगद राशि भी उठा लें गये।इसकी जानकारी जब थाना प्रभारी को दिया गया तों तत्काल थाना प्रभारी मौके पर पहुंच कर मौक़ा मुआयना करके रीपोर्ट दर्ज कर लिया है।और जांच में जुट गए।

प्रजापति समाज का बड़ा ऐलान 2027 विधानसभा चुनाव में हिस्सेदारी नहीं तो वोट नहीं - कृष्ण प्रजापति गोला

मीरजापुर। मथुरा आजादी से लेकर अब तक सभी राजनैतिक दलों ने प्रजापति समाज की वोटों का लाभ लिया है लेकिन बदले में समाज को कोई राजनीतिक हिस्सेदारी नहीं दी आज तक समाज का कोई एक सांसद पूरे देश में नहीं है जिससे प्रजापति समाज काफी नाराज है इस बार पूरे प्रजापति समाज ने फैसला किया है कि आगामी सभी चुनावों में हमे हमारी संख्या के आधार पर राजनीतिक हिस्सेदारी दी जाए यह मांग सभी राजनैतिक दलों से है प्रजापति समाज किसी से बंधा हुआ नहीं है जो दल हमारी मांगों को पूरा करेगा उसी दल को प्रजापति समाज वोट करेगा याद रहे कि उत्तर प्रदेश में सरकारी आंकड़ों के अनुसार कुल आबादी का 4त्र प्रजापति वोटर है और 403 विधानसभा सीटें हैं और अभी तक हमारी हिस्सेदारी शून्य है प्रजापति समाज जाग चुका है बिना हिस्सेदारी के किसी भी दल को कोई वोट नहीं सभी दलों को हिस्सेदारी तह करनी होगी।

हमें गर्व है श्लोक - विधायक अनुराग सिंह

चुनार, मिर्जापुर। सोमवार को चुनार विधायक अनुराग के पुत्र श्लोक सिंह को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सामाजिक सरोकार सेवा भाव से समर्पण रहने पर श्री गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य सेवा यात्रा 5.0 से सम्मानित किया गया। विधायक अनुराग सिंह ने कहा कि यह सम्मान मेरे पुत्र श्लोक सिंह की उपलब्धियों का नहीं बल्कि उन संस्कारों विचारों और सेवा भावना का प्रतिफल है जो उन्होंने जीवन में आत्मसात किए हैं जरूरत मंदों की सहायता करना पीड़ितों के साथ खड़ा रहना और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने का कर्तव्य आजीवन जारी रखने का सन्देश दिया है। उन्होंने कहा कि मेरे पुत्र श्लोक का समर्पण और सेवा पथ पर अडिग रहना हम सभी के लिए प्रेरणा है। सेवा की यह यात्रा यूं ही आगे बढ़ती रहें। श्लोक को विधायक सहयोगी आलोक सिंह, चन्द्रहास गुप्ता, आलोक श्रीवास्तव, बचाऊ लाल सेठ, श्यामधर चतुर्वेदी, ज्योति प्रकाश सिंह, ब्रम्हा नन्द कुशवाहा, अखिलेश मिश्रा, रेनू श्रीवास्तव, रानी सेठ , रागिनी सिंह सहित चुनार नगर के अन्य लोगों ने बधाई दी है।

बीडा पोर्टल एवं मोबाईल ऐप, प्रॉपर्टी मैनेजमेंट सिस्टम एवं ई0एम0डी0 मेनेजमेन्ट सिस्टम (ई-टेण्डर व ई-ऑक्शन) का जिलाधिकारी ने किया शुभारम्भ

स्वतंत्र प्रभात

भदोही :- भदोही औद्योगिक विकास प्राधिकरण बीडा को हाईटेक बनाने व जनसामान्य को त्वरित सुविधा उपलब्ध कराने हेतु मुख्य कार्यपालक अधिकारी बीडा/जिलाधिकारी विशाल सिंह के द्वारा बीडा पोर्टल एवं मोबाईल ऐप, प्रॉपर्टी मैनेजमेंट सिस्टम एवं ई0एम0डी0 मेनेजमेन्ट सिस्टम (ई-टेण्डर व ई-ऑक्शन) का शुभारम्भ किया गया। बीडा भदोही की वेबसाइट ूइपकंईंकवीप.बवउ पर पूर्व में बीडा से सम्बन्धित सामान्य सूचना, टेण्डर एवं विज्ञापन अपलोड किया जाता था। वेबसाईट को और उन्नत कर प्रॉपर्टी मैनेजमेंट सिस्टम, लीगल मैनेजमेंट सिस्टम ग्रीवॉन्स रिडेऊसल सिस्टल व ई0एम0डी0 मेनेजमेन्ट सिस्टम को भी शामिल कर इसे पोर्टल का रुप दिया गया है। प्राधिकरण के विभिन्न योजनाओं में सृजित सम्पत्तियों के आवंटन के बाद विभिन्न मदों में जमा की गयी धनराशि को लेजर एवं पत्रावलियों में अंकित किया जाता था। सम्पत्तियों के प्रबन्धन के लिए सॉफ्टवेयर विकसित कर सम्पत्ति से सम्बन्धित सभी विवरण प्रापर्टी मेनेजमेन्ट सिस्टम पर रखा गया है एवं आवंटियों के सुविधा के लिए बीडा भदोही मोबाईल ऐप विकसित किया गया है जिसे गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। शीघ्र ही यह ऐप आई0ओ0एस0 ऐप स्टोर से भी डाउनलोड किया जा सकेगा। बीडा भदोही मोबाईल ऐप के माध्यम से आंवटी अपने पक्ष में आवंटित सभी सम्पत्तियों से सम्बन्धित विवरण का अवलोकन कर सकेंगे एवं सभी देयता यथा किस्त, सर्विस चार्ज इत्यादि का भुगतान कर सकेंगे। इसके लिए आवंटी को मोबाइल नम्बर आवंटी के पत्रावली में उल्लिखित होना आवश्यक है। पत्रावली में उपलब्ध मोबाईल नम्बर पर ही प्राप्त ओ0टी0पी0 के माध्यम से सभी तरह की कार्यवाही की जा सकेगी। बीडा पोर्टल एवं बीडा भदोही ऐप पर प्राधिकरण से सम्बन्धित सभी सूचनाए, टेण्डर, नोटिस, ऑक्शन इत्यादि से सम्बन्धित विवरण की जानकारी आवंटी एवं जन-सामान्य को प्राप्त हो सकेगी। ई0एम0डी0 मेनेजमेन्ट सिस्टम के माध्यम से प्राधिकरण के द्वारा जारी किया गया टेण्डर एवं ई-ऑक्शन के लिए म्डक् एवं अन्य शुल्क का भुगतान बीडा भदोही के ूइपकंईंकवीप.बवउ पोर्टल एवं बीडा भदोही के मोबाईल ऐप के माध्यम से किया जा सकेगा। प्रापर्टी मेनेजमेन्ट सिस्टम का लाभ आवंटी अपने मोबाईल नम्बर को प्राधिकरण में पंजीकृत करा कर प्राप्त कर सकते है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी विशाल सिंह ने बीडा पोर्टल एवं मोबाईल ऐप, प्रापर्टी मेनेजमेन्ट सिस्टम, ई0एम0डी0 मेनेजमेन्ट सिस्टम तैयार करने वाली संस्था 3 आई कन्सल्टिंग प्राईवेट लि0 के निदेशक सुरेश वर्मा, सी.टी.ओ. विष्णुकान्त मौर्या एवं साफ्टवेयर टीम के आर0 अनिमेश, आर0 आरभ्य, पवन कुमार मौर्या, नैशद मौर्या, शिवम बाजपेयी, सुश्री प्रेरणा भण्डारी को धन्यवाद ज्ञापन किया एवं प्राधिकरण कार्यालय में उप कार्यपालक अधिकारी श्रीमती अनीता देवी, अमन श्रीवास्तव वित्त एवं लेखाधिकारी, अमिताभ रंजन दास मार्केटिंग मैनेजर, आर0डी0भारती का0 अधिशासी अभियन्ता, आदित्य यादव अवर अभियन्ता, प्रदुम्न कुमार सिन्हा अवर अभियन्ता, विनोद कुमार अवर अभियन्ता एवं अन्य बीडा कर्मचारीगण, जिला सूचना अधिकारी डॉ0 पंकज कुमार को बीडा पोर्टल एवं मोबाईल ऐप एवं ई0एम0डी0 मेनेजमेन्ट सिस्टम के शुभारम्भ पर बधाई दी गयी।

संगठन सृजन कार्यक्रम के तहत कार्यक्रम का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

भदोही- जिला कांग्रेस कमेटी भदोही के नेतृत्व में मशाल रोड भदोही स्थित कैम्प कार्यालय पर देर शाम सोमवार को संगठन सृजन कार्यक्रम के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया.. इस अवसर पर जिला अध्यक्ष वसीम अंसारी जी ने कहा कि पार्टी हमारा परिवार है, पार्टी से बड़ा कोई व्यक्तित्व नहीं। संगठन सर्वोपरि है और कार्यकर्ता इस संगठन का आधार स्तंभ है, इसलिए कार्यकर्ता का अपमान किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकाअर्जुन खरगे जी और हमारे नेता राहुल गाँधी जी का स्पष्ट संदेश है कि पार्टी को कमजोर करने वाली 'स्लीपर सेल' नहीं चाहिए। ये संगठन का साख है.. कार्यकर्ता का मान-सम्मान, संगठन को गतिशील बनाना और जनता के मुद्दे उठाना हमारी प्राथमिकता है। इस अवसर पर पूर्व जिला अध्यक्ष डा राजेंद्र कुमार दूबे राजन जी व महिला कांग्रेस जिला अध्यक्ष शबाना खातून जी ने कहा कि किसी भी मजबूत संगठन का निर्माण संपर्क, संवाद, संघर्ष व समन्वय से ही संभव है. नव नियुक्त जिला अध्यक्ष वसीम अंसारी जी लगातार इसी सोच के साथ लगातार आगे बढ़ रहें है।

हम सभी को भी अपनी अपनी जिम्मेदारियां का निर्वहन करना होगा और सकारात्मक के साथ संगठन हित में काम करना होगा. बैठक का संचालन सुरेश गौतम जी ने किया. इस अवसर पर मसूद आलम, मुशीर इक़बाल, त्रिलोकी नाथ बिन्द, सुबूकतगीन अंसारी, नाज़िम अली, शमशीर अहमद, स्वालेह अंसारी, मनोज गौतम,फैयाज अहमद खान उर्फ़ शानू, मो अब्दुल, शक्ति मिश्रा, नितिन सिंह, अनीश शेख,परवेज अंसारी, रामलाल गौतम, ओसामा अंसारी, फ़ाज़िल अंसारी, मोनिश अंसारी, मेराज अहमद, जावेद अहमद, वारिस अली, मो अतस, कौलेश्वर मौर्या, मुजाहिद हसन, शफात इत्यादि लोग उपस्थित रहें।

प्रकृति मीडिया शाला कार्यशाला के अंतिम दिन विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। प्रकृति मीडिया शाला कार्यशाला के अंतिम दिन विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया तथा सभी प्रतिभागी अध्यापको को प्रदान किया गया ईको यूरेका किट । प्रकृति मीडिया शाला के अंतिम दिन सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी भोपाल मे विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।आज के कार्यक्रम की शुरुआत विवसवान जी हेबलकर क्षेत्रीय संगठन मंत्री मध्य पश्चिम क्षेत्र विज्ञान भारती,डॉ.एन के तिवारी कुलपति सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी ,विशेषज्ञ डॉक्टर सुनील दुबे ने दीप प्रज्वलित किया। कुलपति ने विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर सम्बोधित करते हुए कहा कि पृथ्वी हमारी अस्तित्व है,अतः हमे अपने अस्तित्व को बचाने के लिए पृथ्वी को बचाने के लिए संकल्प लेना चाहिए।मुख्य अतिथि विवसवान जी हेंबलकर ने अवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विचारों पर प्रतिभागियों एवं विश्व विद्यालय के बच्चों वार्ता की।कार्यक्रम के समापन सत्र मे सभी 10 प्रदेशो के प्रतिभागी अध्यापको को इको यूरेका किट एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मनित किया गया,जिसमे सुशील कुमार पाण्डेय प्रवक्ता भौतिक विज्ञान गुरु नानक इंटर कॉलेज एवं समन्वयक जिला विज्ञान क्लब मिर्ज़ापुर को इको यूरेका किट, प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया।सुशील कुमार पाण्डेय ने बताया कि हम सभी इस कि ट के माध्यम से जनपद के बच्चों एवं प्रदेश के अध्यापको एवं बच्चों को विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों के लिए प्रायोगिक जानकारी देंगे।

मौजा कुला पहाड़ी में गोचर भूमि को अवैध रूप से दखल करने के विरुद्ध में उपायुक्त को दिया गया आवेदन

पाकुड़, झारखंड- मौजा कुला पहाड़ी 73, खाता संख्या 37 दाग संख्या 15 गोचर भूमि है जिसका उपयोग गांव के ग्रामीणों ने मिलकर पशुधन के चारागाहों के लिए व्यवहार करते आ रहे हैं। उसी जमीन को गांव से बाहर के लोग अमरजीत सिंह पिता कुलदीप सिंह ,बैजनाथ सिंह केडिया एवं देवव्रत चक्रवर्ती ने जमीन को अवैध रूप से जबरदस्ती दखल कब्जा कर घेराबंदी करने को लेकर इनके विरुद्ध में ग्रामीणों ने पाकुड़ उपायुक्त को जांच कर कार्रवाई करने के लिए ग्रामीणों ने लिखकर आवेदन दिया।

श्रीमद्भागवत पुराण का श्रवण करने से आत्म-कल्याण होता है

- सनातन संस्कृति के आदर्शों को जीवन में अपनाना चाहिए
- डॉ भवदेव पाण्डेय शोध संस्थान में भागवत सप्ताह के भण्डारा कार्यक्रम में शामिल होने आए जगद्गुरु रामभद्राचार्य के उद्गार
- 4 घण्टे विलंब से आए जगद्गुरु के दर्शन के लिये उमड़ी भारी भीड़

स्वतंत्र प्रभात

मिर्जापुर। प्रधानमंत्री के नवरत्नों में शामिल जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने श्रीमद्भागवत पुराण की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका अध्ययन, श्रवण एवं मनन के साथ पुराण में बताए गए सदाचरण का अनुशीलन पर चाहिए। उन्होंने कहा कि यह पुराण जीवन को उन्नति की ओर ले जाता है। जगद्गुरु ने यह संदेश नगर के तिवराने टोला स्थित डॉ भवदेव पाण्डेय शोध संस्थान में चल रहे श्रीमद्भागवत सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित भण्डारा प्रसाद वितरण के दौरान 20 अप्रैल, रविवार को दिया। संभल जनपद से चलकर लखनऊ होते हुए मिर्जापुर अपने निर्धारित समय के 4 घण्टे विलंब से रात 10 बजे कार्यक्रम में शामिल हो सके पर जगद्गुरु के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। लगभग 40 मिनट संस्थान में जगद्गुरु रुके। इस बीच 'हर हर महादेव', 'जयश्रीराम' तथा 'जगद्गुरु की जय हो' के नारे लगते रहे। जगद्गुरु आशीर्वाद की मुद्रा में रहे तथा जो भी उनका चरण स्पर्श करने पहुंचा, उसे शुभाशीष दिया। जगद्गुरु का संदेश था।कि सनातन संस्कृति के मूल में आत्म-कल्याण के साथ लोक-कल्याण का भाव सन्निहित है, लेकिन सनातन संस्कृति में बताए गए सद-उपायों के अनुसार जीवन जीना चाहिए। जगद्गुरु ने भंडारे में उनके निमित्त बने सादगीपूर्ण प्रसाद को ग्रहण किया। जगद्गुरु ने सपरिवार पधारे एडीएम (वित्त एवं राजस्व) श्री शिवप्रताप शुक्ल को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक (सिटी) नितेश सिंह, प्रभारी सिटी मजिस्ट्रेट गुलाब प्रसाद भी मौजूद रहे। भँडारे में अपर आयुक्त डॉ विश्राम सहित नगर के गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम संयोजक जेआरडी राज्य विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो शिशिर कुमार पांडेय ने शास्त्री पुल से उनकी आगवानी की। जगद्गुरु अपने रथ से आए थे लेकिन नगर में रथ के आवागमन में कठिनाई के चलते उन्हें अपने वीसी प्रो पाण्डेय की इनोवा से नगर के भीतरी हिस्से में आए।

पानी की समस्या से जूझते ग्राम वासी

स्वतंत्र प्रभात

अहरौरा, मीरजापुर। अहरौरा के वन महाल रामपुर ढबही का है जहां पानी के लिए लोग जदोजहद कर रहे हैं। रामपुर ढबही वही गांव है जहां ऑस्कर अवार्ड से सम्मानित पिंकी स्माइल की वजह से काफी सुर्खियां बटोरी थी। जल स्तर काफी नीचे जाने की वजह से हैंडपंप और कुआं सूख चुका है लोग एक-एक किलोमीटर रास्ता तय करके पानी ला रहे हैं ग्रामीणों का कहना है की अपना गुजर बसर तो थोड़े पानी से हो जाएगा लेकिन पालतू पशुओं को संभालना काफी मुश्किल हो गया है। हर घर नल योजना के तहत ग्राम वासियों को पानी का सुविधा मुहैया कराया गया था लेकिन 3 माह पूर्व राज्यपाल के आने पर आनन फानन में रोड के निर्माण हेतु पटरियौ की भराई के लिए मिट्टी खोदते वक्त जगह-जगह पाइपलाइन को क्षतिग्रस्त कर दिया गया जिसका सूचना देने के पश्चात अब तक जल निगम द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई, ग्रामीणों का कहना है की 1076 पर भी कॉल करके शिकायत किया गया लेकिन ग्रामीणों का दुख दर्द समझने वाला कोई नहीं है। जब संवाददाता द्वारा जल निगम कर्मी से बात करने की कोशिश की गई तो वह पहले बात करने से मना कर दिया फिर बताया की एप्लीकेशन लिखकर भेज दिया गया है पाइप उपलब्ध हो जाने पर बदलवाया जाएगा। लेकिन सवाल ज्यों का त्यों बना हुआ है कि आखिर ग्रामीणों के समस्या का समाधान कब तक होगा। ऑस्कर अवॉर्डी पिंकी स्माइल का कहना है की लगभग 3 महीने से पानी सप्लाई बंद है और गांव का ट्रांसफार्मर भी लगभग 10 दिन से जला पड़ा है कोई शुध लेने नहीं आ रहा है गांव बिना पानी बिना लाइट के अंधेरे में रहने को विवश है कृपया जिम्मेदार अधिकारी संज्ञान लें।

मण्डलायुक्त ने निर्माण परियोजनाओं में भूमि अधिग्रहण एवं भूमि संबन्धी अन्य प्रकरणो के निस्तारण के सम्बंध में अधिकारियों के साथ बैठक कर की गई समीक्षा

- मीरजापुर व सोनभद्र प्रस्तावित चुनार चोपन दोहरीकरण रेल परियोजना में प्रभावित काश्तकारो को मुआवजे का भुगतान कराने का निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। मण्डलायुक्त विन्ध्याचल मण्डल बालकृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयुक्त कार्यालय सभागार में निर्माण परियोजनाओं में भूमि अधिग्रहण एवं भूमि संबन्धी अन्य प्रकरणो के निस्तारण के सम्बंध में समीक्षा बैठक आहूत की गई। बैठक में मण्डल की उन परियोजनाओ की समीक्षा की गयी जिनकी प्रगति भूमि सम्बन्धी प्रकरणो से आच्छादित होने के कारण प्रभावित है। जनपद सोनभद्र मे लोक निर्माण विभाग की सड़को पनारीटोला से चोरपनिया, तिलहर सम्पर्क मार्ग, पटवध से वसुहारी, चोपन महलपुर से परसोई, करगरा से अलार तथा पनारी से करीं बकिया के निर्माण मे वन भूमि पड़ रही है। ओबरा सी ताप विद्युत परियोजना के राख बाध निर्माण परियोजना में 64 हे0 वन भूमि प्रस्तावित है। उप जिलाधिकारी, ओबरा व घोरावल तथा प्रभागीय वनाधिकारी कैमूर एवं ओबरा वन प्रभाग व रेनूकूट वन प्रभाग के उप प्रभागीय वनाधिकारियो को इन प्रकरणो को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित कराने का निर्देश मण्डलायुक्त ने दिया। उन्होंने जनपद मिर्जापुर व सोनभद्र मे निर्माण हेतु प्रस्तावित चुनार चोपन दोहरीकरण रेल परियोजना तथा सोनभद्र मे प्रस्तावित प0 दीनदयाल उपाध्याय प्रयागराज तीसरी रेल परियोजना मे प्रभावित कास्तकारो को मुआवजे का भुगतान तथा भूमि पर रेलवे को त्वरित कब्जा दिलाने हेतु उपजिलाधिकारी मीरजापुर सह विशेष भूमि अध्याप्ति अधिकारी मिर्जापुर, सोनभद्र को निर्देश दिया गया। मण्डलायुक्त ने सोनभद्र के सभी उपजिलाधिकारियो को निर्देशित किया कि वन विभाग को परियोजनाओ में पड़ने वाली भूमि के समतुल्य भूमि उपलब्ध कराने के प्रयोजन से तहसील के लैण्ड बैंक का विवरण तैयार कर एक सप्ताह के अन्दर मुख्य वन संरक्षक व संयुक्त विकास आयुक्त को उपलब्ध करा दिया जाय। ओबरा तापीय विद्युत परियोजना पर राख बाध निर्माण के कार्य में प्रगति लाये जाने हेतु सम्बंधित बिन्दुओ पर आख्या उपजिलाधिकारी ओबरा उप प्रभागीय बनाधिकारी ओबरा व सहायक अभिलेख अधिकारी ओबरा एक सप्ताह के अन्दर भेजने का निर्देश दिया। उन्होंने मुख्य अभियंता विद्युत को निर्देशित किया कि रेलवे लाईन परियोजना प0 दीन दयाल उपाध्याय प्रयागराज मे ग्राम बरौधा मे पोल शिफ्टिंग का कार्य तत्काल कराया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने जनपद सोनभद्र में 11 राजकीय हाईस्कूल व 02 जनजाति छात्रावास के निर्माण हेतु भूमि उपलब्धता एक सप्ताह मे सुनिश्चित कराने के निर्देश उपजिलाधिकारी ओबरा, दुद्धी व राबर्टसगंज को दिया। उन्होंने नगर पंचायत अनपरा व रेनूकूट में पेयजल व सीवरेज की परियोजनाओ में डब्ल्यू0 टी0 पी0 एवं एस0 टी0 पी0 निर्माण हेतु भूमि की उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु प्रस्ताव तैयार कर प्रस्तुत करने हेतु अधिशासी अभियंता जलनिगम मीरजापुर को तथा इस पर प्रभावी कार्यवाही हेतु उप जिलाधिकारी दुद्धी को निर्देश दिया। मण्डलायुक्त ने आम घाट क्रासिंग के पास सम्पार संख्या 03 पर रेल ओवर सेतु तथा विकास खण्ड छानबे मे गंगा नदीपर रामपुर घाट पर पक्के पुल निर्माण मे प्रभावित कास्तकारो को मुआवजा भुगतान व अअंश निर्धारण की कार्रवाई प्राथमिकता पर कराने हेतु उप जिलाधिकारी सदर को निर्देश दिया। उन्होंने गंगा नदी रामपुर घाट पर पक्के पुल निर्माण कार्य मे भदोही जनपद के प्रभावित कास्तकारो की अंश निर्धारण सूची 03 दिनो मे परियोजना प्रबंधक सेतु निगम को उपलब्ध कराने के निर्देश नायब तहसीलदार को दिया। एन0 एच0 135ए पर 04 लेन मीरजापुर बाईपास व गंगा नदी पर सेतु परियोजना पर अभिनिर्णित धनराशि का प्रतिकर भुगतान तेजी से कराये जाने के निर्देश उप जिलाधिकारी सदर को देते हुए एन0 एच0 731बी के फोरलेनिग कार्य प्रतिकर भुगतान में तेजी लाये जाने के निर्देश अपर जिलाधिकारी न्यायिक, भदोही को दिया। बैठक में संयुक्त विकास आयुक्त विन्ध्याचल मण्डल रमेश चन्द्र, अपर जिलाधिकारी न्यायिक भदोही, उप जिलाधिकारी सदर, उप जिलाधिकारी ओबरा, दुद्धी, घोरावल, प्रभागीय वनाधिकारी कैमूर, ओबरा, उप मुख्य परियोजना प्रबन्धक, रेलवे कंट्रक्शन, उ0म0रेलवे उप मुख्य परियोजना, प्रबन्धक, योजना, मुख्य अभियन्ता विद्युत, अधीक्षण अभियन्ता लोक निर्माण विभाग, मण्डलीय अर्थ एवं संख्याधिकारी एवं अन्य कार्यदायी संस्था के अधिकारीगण उपस्थित रहें।

पृथ्वी दिवस पर छात्र, छात्राओं संग ग्रीन गुरु जी ने किया पौध रोपण

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। 22 अप्रैल 2025 को 3584 वें दिन लगातार पौध रोपण के क्रम में खेल क्रान्ति एवं पर्यावरण शुद्धिकरण फाउंडेशन, ट्रस्ट द्वारा संचालित पर्यावरण शुद्धिकरण अभियान के संस्थापक,सचिव , अनिल कुमार सिंह, ग्रीन गुरु जी, मा. मुख्य मंत्री योगी आदित्य नाथ जी द्वारा गंगा सेवक सम्मान से सम्मानित, प्रधानाचार्य, शान्ति निकेतन इण्टर कॉलेज, पचोखरा,मीरजापुर , हिमालय उड बैज, स्काउट, नमामि गंगे,जिला गंगा संरक्षण समिति एवं जिला पर्यावरणीय समिति सदस्य, मीरजापुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जीवन धारा नमामि गंगे फाउंडेशन, बुलंदशहर एवं संयोजक, विंध्याचल मंडल(मीरजापुर), लोक भारती हरियाली अभियान, लखनऊ, सदस्य, जिला ओलम्पिक संघ, मीरजापुर ,ब्रांड अम्बेस्डर तथा ध्वजारोहक स्वच्छता, नगरपालिका परिषद, मीरजापुर द्वारा 01जुलाई 2015 से लगातार प्रति दिन किये जा रहे पौध रोपण के 3584 वें दिन के क्रम में अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस के अवसर पर शान्ति निकेतन इण्टर कॉलेज पचोखरा, मीरजापुर के परिसर में बारहमासी सहजन व महोगनी के पौध का रोपण विद्यालय के शिक्षक, परिचारक तथा छात्र, छात्राओं के साथ प्रधानाचार्य, अनिल कुमार सिंह, ग्रीन गुरु जी ने किया। पौध रोपण के समय गुप्तेश सिंह, दीप नरायन सिंह, अनुज कुमार, प्रदीप सोनकर तथा विद्यालय इको क्लब की सदस्य सीतल, सुधा,गौरी सिंह सपना सिंह, साक्षी नामक छात्राएं व नर सिंह राव, विरजू कुमार व जुबर नामक छात्र साथ मे थे। इस अवसर पर, ब्रांड अम्बेस्डर, मीरजापुर, प्रधानाचार्य, अनिल कुमार सिंह, ग्रीन गुरु जी ने बतलाया कि लगातार प्रति दिन जगह-जगह पौध रोपण का उद्देश्य हरा - भरा रहे धरा, पर्यावरण शुद्ध रहे लोगो मे पौध रोपण व संरक्षण के प्रति जागरूकता लाना है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयं सेवकों ने नगर में किया पथ संचलन

स्वतंत्र प्रभात

चुनार, मिर्जापुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चुनार नगर की ओर से सोमवार को पथ संचलन का आयोजन किया गया। सायंकाल किला ग्राउंड में स्वयंसेवकों को एकत्रीकरण के बाद काशी प्रांत के सामाजिक सद्भाव प्रमुख शिवमूर्ति जी का बौद्धिक पाथेय प्राप्त हुआ। इसके बाद पथ संचलन किला ग्राउंड से भरपुर लाइन, भरपुर, लालदरवाजा, सददूपुर, गोला बाजार, चौक बाजार, सर्राफा बाजार, गंगेश्वरनाथ, बालूघाट आदि मार्गो से होते हुए संतोषी माता मंदिर स्थित किला घाट पर पहुंचा जहां गंगा आरती के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। इस दौरान जिला कार्यवाह रामबालक, जिला प्रचारक आलोक, सह जिला कार्यवाह अमित, नगर संघ चालक गोबिंद, नगर कार्यवाह विवेक, जिला व्यवस्था प्रमुख आलोक जौहरी,जिला संपर्क प्रमुख अवनींद्र सिंह,विधायक सहयोगी आलोक सिंह, विभाग पर्यावरण प्रमुख गोविंद, श्यामधर चतुर्वेदी, रितेश, जिला सामाजिक समरसता प्रमुख शिवकुमार, जिला शारीरिक प्रमुख पवन, नगर संपर्क प्रमुख राकेश श्रीवास्तव, नगर प्रचारक हर्षित, राजेन्द्र प्रसाद प्रजापति, बंशीधर चतुर्वेदी, धीरज जायसवाल, विकास सिंह, सत्येंद्र दुबे, उमाकांत दुबे आदि सहित बड़ी संख्या में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयं सेवक गण वेश में पंक्ति बद्ध अनुशासन के साथ चल रहे थे। संचलन में फूल माला से सुसज्जित वाहन पर भारत माता का चित्र उसके पीछे घोष का दल संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढे चलो आदि संघ के गीतों का धुन बजाते हुए चल रहा था। कस्बा चौकी प्रभारी उदय नारायण कुशवाहा पुलिस बल के साथ, साथ साथ चल रहे थे।

अहंकारी, दुराचारी का भगवान करते है अंत- रोहितानंद

राजापुर, चित्रकूट- नगर पंचायत राजापुर में चल रही श्रीमद्भावगत कथा के चौथे दिन मंगलवार को कथाव्यास रोहितानंद महराज ने श्रीकृष्ण के प्रकटोत्सव की कथा सुनाई। जिसे सुनकर सभी श्रोतागण भाव-विभोर हो गए। कथा व्यास रोहितानंद महराज ने कहा कि जब मथुरा में अत्याचार, अहंकार, द्रोही नीतियां अपनी चरम सीमा पर आ गयी थी, तब देवकीनंदन प्रगट होकर बृजवासियों की रक्षा सुनिश्चित करते हुए संस्कारविहीन अहंकारी राजा कंस का वध कर दिया था। उन्होंने श्रीकृष्ण प्रकटोत्सव की कथा सुनाते हुए कहा कि त्रेता युग में भगवान श्रीराम सूर्य की 12 किरणों की कलाओं के साथ तथा भगवान श्रीकृष्ण चंद्रमा की 16 कलाओं के साथ प्रकट होकर पूर्ण ब्रह्म के रूप में अपनी लीलाओं के माध्यम से समाज को सत्मार्ग पर चलने का एक संदेश दिया था। कहा कि अहंकार, दुराचार करने वाले व्यक्ति का अंत भगवान ने किसी न किसी अवतार में आकर किया है। इस दौरान भगवान श्रीकृष्ण के प्रकटोत्सव की सजीव झाँकी देखकर उपस्थित श्रोतागण हर्षित होकर पूजा अर्चना करते हुए बधाई गीत गाए।

संक्षिप्त खबरें

बालसन चौराहे पर बैटरी ई-रिक्शा में लगी आग, बड़ा हादसा टला!

प्रयागराज। व्यस्त बालसन चौराहे पर आज एक बैटरी चालित ई-रिक्शा में अचानक आग लग गई। घटना के समय ई-रिक्शा खाली था, जिससे किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए आग पर काबू पाने की कोशिश की और फायर ब्रिगेड के पहुंचने से पहले ही स्थिति को नियंत्रण में ले आए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, अचानक धुआं उठता देखा गया और फिर आग भड़क उठी। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट या बैटरी में तकनीकी खराबी माना जा रहा है। स्थानीय प्रशासन ने घटना की जांच के आदेश दिए हैं।

नाइट मार्केट से एक्टिवा स्कूटी चोरी, सीसीटीवी में कैद हुआ चोर

प्रयागराज। सिविल लाइंस थाना क्षेत्र स्थित चंद्रशेखर आजाद पार्क के सामने लगने वाली नाइट मार्केट से करेली निवासी मंसूर अहमद खान की एक्टिवा स्कूटी चोरी हो गई। यह घटना शनिवार की रात की बताई जा रही है, जो पास लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। फुटेज में साफ तौर पर देखा जा सकता है कि एक युवक चाबी लगाकर स्कूटी स्टार्ट करता है और उसे आराम से लेकर चला जाता है। मंसूर अहमद ने इस मामले की ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर दी है। यह कोई पहली घटना नहीं है,16 अप्रैल को भी लीडर रोड स्थित होलसेल दवा बाजार से वाहन चोरी की एक घटना सामने आई थी। लगातार हो रही इन वारदातों से यह साफ हो रहा है कि प्रयागराज में सक्रिय वाहन चोरों के गिरोह पुलिस के लिए चुनौती बने हुए हैं। हालांकि पुलिस लगातार कार्रवाई करते हुए कई वाहन चोरों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है, लेकिन चोरी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। थाना सिविल लाइंस पुलिस मामले की जांच कर रही है और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की पहचान का प्रयास कर रही है।

30 अप्रैल तक करायें ई-केवाईसी न कराई तो राशन कार्ड से कट जायेगी यूनिट- जिलापूर्ति अधिकारी

कौशाम्बी।राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 के अन्तर्गत आने वाले सभी राशनकार्डधारकों के लिये बड़ी चेतावनी सामने आई है। जिलापूर्ति अधिकारी मंगेश कुमार मौर्य ने एक अहम जानकारी साझा करते हुए बताया कि शासन से प्राप्त निर्देशों के तहत जनपद कौशाम्बी के समस्त राशनकार्डधारकों को 30 अप्रैल, 2025 तक अपने राशन कार्ड से जुड़े सभी सदस्यों की ई-केवाईसी कराना अनिवार्य है। यह कार्य सम्बन्धित उचित दर विक्रेता (कोटेदार) की दुकान पर जाकर कराया जा सकता है। जिला पूर्ति अधिकारी ने स्पष्ट किया कि यह अन्तिम समय सीमा है, और इसके बाद कोई अतिरिक्त अवसर नहीं दिया जायेगा। ई-केवाईसी न कराने पर क्या होगा? यदि कोई राशनकार्डधारक निर्धारित समय सीमा तक अपने कार्ड से जुड़े सभी सदस्यों की ई-केवाईसी नहीं कराता है, तो उसकी यूनिट (सदस्य) डिलीट कर दी जायेगी, और वह इस स्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा। इससे न केवल सरकारी राशन मिलने में बाधा आ सकती है, बल्कि पात्रता भी समाप्त हो सकती है। जिला प्रशासन ने सभी कार्डधारकों से अपील की है कि वे समय रहते यह कार्य अवश्य पूरा कर लें, जिससे उन्हें भविष्य में किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। यह कदम सरकार द्वारा पारदर्शिता और पात्र लाभार्थियों को लाभ सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से उठाया गया है।

अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस लाइन्स में ली गई परेड की सलामी

कौशाम्बी।अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी राजेश कुमार सिंह द्वारा पुलिस लाइन्स कौशाम्बी में परेड की सलामी ली गई। निरीक्षण के दौरान परेड में उपस्थित समस्त पुलिसकर्मियों के टर्नआउट का अवलोकन भी किया गया। पुलिस कर्मियों को फिट रहने हेतु दौड़ लगवाई गई। अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा बाद परेड पुलिस लाइन की विभिन्न शाखाओं, मेस, परिवहन शाखा, लाइन परिसर इत्यादि का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। तत्पश्चात अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा उत्तर प्रदेश पुलिस आरक्षी नागरिक पुलिस सीधी भर्ती-2023 के चिकित्सा परिक्षण को निष्पक्ष/पारदर्शिता कराने तथा पुलिस प्रबन्ध व शान्ति/कानून व्यवस्था की तैयारियों का जायजा लिया गया एवं सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गये।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलम्ब समिति की बैठक हुई आयोजित

» **सेवानिवृत्त कर्मचारियों के सभी देयकों का भुगतान समय से कराना सुनिश्चित करें- सभापति**

» **सभी विभाग मृतक आश्रितों के नियुक्ति से सम्बन्धित प्रकरणों को शीघ्रता के साथ करें निस्तारित**

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलम्ब समिति की बैठक सभापति पवन कुमार सिंह के सभापतित्व में सर्किट हाउस, प्रयागराज के सभागार में जनपद कौशाम्बी के अधिकारियों के साथ आयोजित की गई। बैठक में उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलम्ब समिति के सदस्य उमेश द्विवेदी सहित सदस्य डॉ0 के0पी0 श्रीवास्तव, विधायक कोरांव राजमणि कोल, जिलाध्यक्ष भाजपा कौशाम्बी धर्मराज मौर्य, जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी, पुलिस अधीक्षक बृजेश श्रीवास्तव, मुख्य विकास अधिकारी अजीत श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार सहित सभी सम्बन्धित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

समिति द्वारा बैठक के दौरान सभी समस्त कार्यालय में जनवरी 2019 से 31 दिसम्बर 2022 के मध्य सेवानिवृत्ति कार्मिक से सम्बन्धित पेन्शन, ग्रेच्युटी व अन्य देयकों के भुगतान की स्थिति, विभागों में मृतक आश्रित के मामले विगत 03 वर्षो से लम्बित तथा कितने मृतक आश्रित सेवायोजित किये गये, जीपीएफ के भुगतान की स्थिति, वृद्धावस्था-विधवा पेन्शन के मामले विगत 03 वर्षो से लम्बित प्रकरण, किसानों के प्रतिकर से सम्बन्धित मामले विगत 03 वर्षो से जिसमें अधिग्रहण हो गया है, प्रतिकर का भुगतान न किया गया हो, बिजली-पानी से सम्बन्धित मामले जिनकी स्वीकृति मिल जाने के बाद ही विगत 01 वर्ष से लम्बित, भवनों के मानचित्र की स्वीकृति तथा भूमि सिलिंग सम्बन्धित प्रमाण जारी किये जाने के सम्बन्ध में मामले विगत 01 वर्ष से अधिक लम्बित आदि के सम्बन्ध में समीक्षा की गयी।

समिति के द्वारा रामवनगमन मार्ग के निर्माण में काश्तकारों से ली गयी जमीन अधिग्रहण के भुगतान की स्थिति के बारे में जानकारी ली, जिस पर जिलाधिकारी के द्वारा अवगत कराया गया कि लगभग 9600 किसानों/काश्तकारों का भुगतान हो चुका है, शेष बचे किसानों/काश्तकारों का न्यायालय में प्रकरण लम्बित होने के कारण भुगतान की कार्यवाही अभी तक नहीं हो पायी है। न्यायालय से प्रकरण के निस्तारण होने या प्राप्त दिशा-निर्देशों के क्रम में भुगतान की कार्यवाही अविलम्ब पूरी कर ली जायेगी।गृह विभाग में 03 वर्षो से अब तक जनपद में मृतक कार्मिकों के आश्रितों को सेवायोजन प्रदान किये जाने की जानकारी लेते हुए सभापति ने निर्देशित किया कि लम्बित प्रकरणों पर आश्रितो को बुलाकर पत्राचार की कार्यवाही प्रारम्भ की जाये और इसकी समिति बना ली जाये और समय रहते निस्तारण कराया जा सके। स्वास्थ्य विभाग में सेवानिवृत्त कार्मिकों के भुगतान की स्थिति की जानकारी लेने पर मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा सही जानकारी न दिये जाने पर उनको लम्बित पत्रावली के साथ मुख्यालय में उपस्थित होने का निर्देश दिया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी से समिति ने पूंछा कि जनपद में इस वर्ष स्कूलों में बच्चों का दाखिला बढ़ा है या नहीं, जिसपर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा बताया गया कि पिछले वर्ष के मुकाबले अभी तक नये बच्चों का दाखिला कम हुआ है, समिति ने अभियान चलाकर अधिक से अधिक बच्चों का दाखिल स्कूलों में कराये जाने के लिए कहा है। जिला पंचायतराज विभाग के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए समिति ने सफाई कर्मियों के मृतक आश्रित के लम्बित प्रकरणों के बारे में जानकारी ली, जिसपर उन्हें बताया गया कि कुल 18 प्रकरणों में से 12 प्रकरणों का निस्तारण हो चुका है, जबकि 6 मामलों में प्रत्यावेदन ही विभाग को नहीं प्राप्त हुए है, जिसपर सभापति ने पत्राचार के साथ-साथ स्वयं जाकर सम्बन्धित परिवारों से बातचीत कर आगे की कार्यवाही कराये जाने के लिए कहा है। समीक्षा के दौरान स्वास्थ्य विभाग, जिला होम्योपैथ, पशुपालन विभाग, विद्युत विभाग, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, लघु सिंचाई, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, खादी ग्रामोद्योग विभाग में जीपीएफ, मृतक आश्रित, ग्रेच्युटी, नकदीकरण के प्रकरण पर सभापति ने निर्देशित किया कि जिन विभागों के जो भी प्रकरण कार्यालय/उच्च स्तर पर लम्बित है अपने मुख्यालय और महालेखाकार उ0प्र0 से वार्ता कर लम्बित प्रकरणों को जल्द से जल्द निस्तारण कराया जाये तथा मृतक

आश्रितों के प्रकरण पर शैक्षिक योग्यता के आधार पर नियुक्ति की कार्यवाही की जाये। सभापति ने निर्देशित किया कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों के सभी देयकों का भुगतान समय से कराना सुनिश्चित करें, यदि यह पाया जायेगा कि पूर्व सेवानिवृत्त कर्मचारी का देयक लम्बित है और वर्तमान में सेवानिवृत्त कर्मचारियों के देयकों का भुगतान हो गया है तो सम्बन्धित के विरूद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी। सभापति ने सम्बन्धित विभाग के द्वारा संचालित योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी ली। बैठक के अन्त में जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने सभापति व समिति के अन्य सदस्यों को आश्वस्त करते हुए कहा कि समिति के द्वारा बैठक में जो भी दिशा निर्देश दिये गये हैं उसके सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा अक्षरशः अनुपालन कराया जायेगा। बैठक के प्रारम्भ में जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने समिति के सभापति व अन्य सदस्यों का बुके, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया। बैठक का संचालन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉ0 कमलेन्द्र कुमार कुशवाहा द्वारा किया गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता और स्वच्छता का संदेश

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। विश्व पृथ्वी दिवस पर संगम नोज़ पर जिला गंगा समिति, गंगा टास्क फोर्स, गंगा विचार मंच के संयुक्त प्रयास से जन जागरूकता और स्वच्छता श्रमदान के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम में कर्नल सौरभ मल्होत्रा, नमामि गंगे संयोजक अनामिका चौधरी, जिला परियोजना अधिकारी एषा सिंह, सूबेदार सर्वेश तिवारी, निर्मल कांत उपस्थित रहे। कर्नल सौरभ मल्होत्रा ने कहा कि पृथ्वी दिवस का उद्देश्य प्रकृति संसाधनों के संरक्षण हेतु आम जन में जिम्मेदारी की भावना जगाना है। डीपीओ एषा सिंह ने बताया कि इस वर्ष की थीम "हमारी शक्ति, हमारा ग्रह÷ है, जो नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। संयोजक अनामिका चौधरी ने गंगा नदी को स्वच्छ रखने के लिए सभी से सहयोग की अपील की। निर्मलकांत ने फॉरेस्ट कवर बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला, जिससे धरती के तापमान में कमी लाई जा सकती है। सूबेदार सर्वेश तिवारी ने दैनिक जीवन में पर्यावरण अनुकूल कार्यों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में उपस्थित संस्थान एवं स्वच्छ ग्राही के मदद से संगम तट पर जमा हुए प्लास्टिक, कूड़ा और अन्य अपशिष्ट पदार्थों को एकत्रित कर स्वच्छता अभियान चलाया गया तथा स्थानीय जनमानस को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया द्य कार्यक्रम में हवलदार बृजेश, हवलदार मनोज, नायक मुकेश, नायक महेंद्र, सीमा आदि उपस्थित रहे।

भरवारी में रेलवे क्रासिंग पर ओवरब्रिज निर्माण की प्रक्रिया शुरू रेलवे और तहसील प्रशासन की नाप जोख से कस्बे में मचा हड़कम्प

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद के नगर पालिका परिषद भरवारी में रेलवे क्रासिंग पर ओवरब्रिज निर्माण की प्राथमिक प्रक्रिया शुरू हो गई है,रेलवे और तहसील प्रशासन ने रेलवे क्रासिंग के दोनों तरफ अपने मानक के अनुसार नाप जोख शुरू कर दी है,कर्मचारियों के जमीन की नाप जोख किये जाने से कस्बे में हड़कम्प मचा हुआ है।

भरवारी रेलवे क्रासिंग पर लगने वाले जाम से लोग परेशान हैं,इसके लिये कई बार लोग अधिकारियों से मिले और जाम की समस्या से निजात दिलाने की मांग की, वहीं ग्लोबल मानवाधिकार आयोग के रोहित वैश्य ने केन्द्रीय परिवहन मंत्री से मुलाकात कर समस्या से अवगत कराया था, जिसके बाद केन्द्रीय परिवहन मंत्री ने तत्काल आदेश पारित किया और रेलवे ओवरब्रिज निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। इसी प्रक्रिया के तहत छ्रक्रूने कुछ दिनों पूर्व अधिकारियों के साथ रेलवे क्रासिंग भरवारी का निरीक्षण किया था,इसके बाद रेलवे की टेक्निकल विभाग की टीम ने भी सर्वे किया था और जल्द से जल्द जांच रिपोर्ट अधिकारियों को सौंपने की बात कही थी। वहीं मंगलवार को रेलवे और तहसील प्रशासन के कुछ लोगो ने भरवारी कस्बे मे फीता लेकर मकानों को नाप-जोख शुरू शुरू कर दिया तो कस्बे के लोगो में हड़कम्प मच गया, और लोग एक दूसरे से जानकारी लेना शुरू कर दिये,किसका कितना मकान जायेगा इसको लेकर लोगों में दहशत का माहौल बना हुआ है। वहीं दूसरी तरफ सड़क और मकान की नाप करने वाले कर्मचारियों ने बताया कि रेलवे और तहसील प्रशासन के साथ अधिकारियों के निर्देश पर बीच सड़क से दोनों तरफ 9.75 मीटर,9.75 मीटर कुल 19.5 मीटर नापा जा रहा है, अभी मकान के दरवाजे तक नाप की जा रही है,जितना जिसका नाप आ रहा है उसके मकान में लाल कलम से निशान लगाकर लिख दिया जा रहा है,बाकी 9.75 मीटर लिया जायेगा जिसका जितना कम है उतना मकान तोड़ा जायेगा।

इफको नैनो का प्रयोग एक फसल में करके देखे किसानों को फायदा समझने में देर नहीं होगी

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। इफको फूलपुर इकाई की टीम ने गाँव चांदोपारा, हंड़िया में जाकर किसान चौपाल लगाया जिसमें किसानों को धान की फसल पर नैनो यूरिया प्लस एवं नैनो डीएपी के प्रयोग विधि के बारे में बताया। टीम ने छिड़काव की विधि, इसकी मात्रा तथा इसके लाभ के बारे में बताया। वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (इकाई प्रमुख) संजय कुदेशिया ने किसानों से वार्ता की तथा कहा कि नैनो यूर्वरक फसल की पैदावार बढ़ाने में सहायक है अतः इसका अधिक से अधिक प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि जमीन एक हिस्से में नैनो यूरिया प्लस एवं नैनो डीएपी का अवश्य प्रयोग करें तथा अंतर देखे। उन्होने कहा कि आप सभी किसान इसका प्रयोग करें और यदि कोई समस्या हो तो हमारी टीम से सम्पर्क करें, हम तुरंत मदद मुहैया करवायेंगे। किसानों के छिड़काव की समस्या बताने पर कुदेशिया जी ने इस वर्ष धान की फसलों पर ड्रोन से छिड़काव की व्यवस्था इफको की तरफ से निःशुल्क कराने की घोषणा की ।नैनो उर्वरक के बारे में जागरूकता अति आवश्यक है। चौपाल में किसानों ने नैनो यूरिया प्लस एवं नैनो डीएपी के प्रति उत्साह दिखाया। इस दौरान कोर्डेट प्रचार्य डॉ हरिशचन्द्र, जनसम्पर्क अधिकारी स्वयम् प्रकाश, प्रबंधक प्रशिक्षण अनुराग तिवारी, पंकज पांडेय अध्यक्ष इफको इंप्लॉयीज यूनियन, विजय कुमार यादव महामंत्री इफको इंप्लॉयीज यूनियन, राजेश सिंह, अभिषेक पटेल, अजय मिश्रा, अगेय दुबे मौजूद रहे।

पुलिस ने किया चोरी की वारदात का खुलासा मुख्य अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। प्रयागराज थाना सिविल लाइन्स पुलिस, एस0 ओ0 जी0 नगर व सर्विलांस सेल नगर की संयुक्त टीम द्वारा थाना स्थानीय के पंजीकृत मु0अ0सं0 164/2025 धारा 3(5), 331(4),305, 317(2), 317(4), 112(2) बी0एन0एस0 से सम्बन्धित 01 अभियुक्त राकेश कुमार सरोज पुत्र स्व मोहन लाल सरोज निवासी छोटी अख्तियारी कोटिला थाना हथिगवां जनपद प्रतापगढ़ को मुखबिर की सूचना पर आज दिनांक 22.04.2025 को राजापुर कब्रिस्तान गेट के पास थाना क्षेत्र सिविल लाइन्स से गिरफ्तार कर कब्जे से लगभग 50 ग्राम (पीली धातु) व चोरी के सामान को बेचने से प्राप्त 4 लाख 98 हजार रुपये नकद व 01 कार बरामद की गयी। बरामद कार को अन्तर्गत धारा 207 एम0वी0 एक्ट में सीज किया गया । नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है दिनांक-14.04.2025 को वादी अमित कुमार सिंह निवासी सांईधाम अपार्टमेंट 6 A-1 निकट बी0एच0एस0 थाना सिविल लाइन्स जनपद प्रयागराज द्वारा सूचना दी गयी कि अज्ञात व्यक्ति द्वारा उनके फ्लैट का दरवाजा तोड़कर उनके फ्लैट में चोरी कर ली गयी है। उक्त सूचना पर तत्काल अभियोग पंजीकृत करते हुये घटना के सफल अनावरण हेतु पुलिस टीमों का गठन किया गया।

अपराध करने का तरीका- अभियुक्त राकेश कुमार सरोज उपरोक्त द्वारा पूछ-ताछ में बताया गया कि वह अपने साथियों के साथ घूम-घूम कर घरों की रेकी करता रहता है तथा जिन घरों में ताला बन्द रहता है या परिवार कहीं बाहर गया होता है, उन घरों में चोरी की घटनायें करता है।

अंकुर त्रिपाठी बने आईएएस अधिकारी

● यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में 50वें स्थान पर चयनित होकर क्षेत्र का नाम किया रोशन

स्वतंत्र प्रभात

जगदीशपुर अमेठी। विकासखंड जगदीशपुर के कचनांव ग्राम निवासी अंकुर त्रिपाठी ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में 50 वां स्थान लाकर क्षेत्र का नाम रोशन किया। अंकुर त्रिपाठी के आईएएस बनने पर पूरे जनपद से बधाई देने वाले लोगों का तांता लगा रहा। गुरु प्रसाद त्रिपाठी के नाती तथा सुरेंद्र नारायण त्रिपाठी के होनहार सुपुत्र ने आईएएस अधिकारी बनकर क्षेत्र, गुरुजन तथा परिजन का नाम रोशन किया। पूरे क्षेत्र में पूरे जनपद में हर्ष का माहौल है आईएएस अधिकारी अंकुर त्रिपाठी के चाचा ओंकार नाथ त्रिपाठी ने बताया कि पिछले वर्ष आईपीएस अधिकारी के रूप में अंकुर त्रिपाठी का चयन हुआ था, लेकिन अंकुर त्रिपाठी आईपीएस अधिकारी बनकर संतुष्ट नहीं थे उन्हें तो आईएएस बनने की धुन थी और लगन थी थी और लगातार दृढ़ संकल्प के साथ तैयारी कर रहे थे। उनके चाचा ने बताया कि अंकुर त्रिपाठी आईपीएस अधिकारी के रूप में मणिपुर में ट्रेनिंग कर रहे थे लेकिन साथ ही साथ आई एएस की तैयारी कर रहे थे और इस बार उन्हें 50वीं रैंक मिली और आईएएस अधिकारी बनकर अपने सपनों को अपने क्षेत्र परिवार और जनपद के सपनों को साकार करते हुए पूरे देश में नाम रोशन किया। अंकुर त्रिपाठी दो भाई और एक बहन है उनके चाचा ने बताया कि शुरू से ही अंकुर त्रिपाठी का पढ़ाई के प्रति विशेष लगाव था कुछ कर गुजरने का जज्बा था, और उन्होंने शुरुआती पढ़ाई हाई स्कूल की पढ़ाई कुमारगंज डीएबी स्कूल से की, इंटर की पढ़ाई बाल विद्या मंदिर लखनऊ से की और इंटर में टॉप पर रहे, साथ ही साथ गोरखपुर से बीटेक की और बीटेक में भी टॉप पर रहे। इस दौरान मीडिया के माध्यम से क्षेत्र के छात्र और छात्राओं के लिए आईएएस अधिकारी बने अंकुर त्रिपाठी ने अपील की मन लगाकर पढ़ाई करें कोई भी परीक्षा इतनी

कठिन नहीं है कि छात्र एवं छात्राएं अगर मन लगाकर पढ़ाई करें और तैयारी करें तो उसे पास नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि ध्यान केंद्रित करके मन लगाकर टाइम टेबल बनाकर मेहनत के साथ तैयारी की जाए तो देश की बड़ी से बड़ी परीक्षा को पास किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि दृढ़ निश्चय के साथ छात्र-छात्राएं तैयारी करें और अपने तथा अपने परिवार के सपनों को साकार करते हुए क्षेत्र का नाम रोशन करें। फिलहाल अंकुर त्रिपाठी के आईएएस अधिकारी बनने के बाद पूरे जनपद सहित आसपास के कई जनपदों से लोगों ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

दलित समाज को भाजपा ने दिया उनका हक और सम्मान-सूर्य प्रताप शाही

● डॉ भीमराव अंबेडकर का अपमान करने वाले संविधान की पुस्तक लेकर घूम रहे हैं- दिनेश सिंह

बाबा साहेब से जुड़े स्थलों को पंचतीर्थ के रूप में किया गया विकसित

स्वतंत्र प्रभात

गौरीगंज, अमेठी। डॉ आंबेडकर भारत ही नहीं दुनिया के चमकते हुए सितारे हैं।भाजपा की डबल इंजन सरकार डॉ आंबेडकर के सपनों को साकार कर रही है।यह बातें मंगलवार को भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने भाजपा जिलाध्यक्ष सुधांशु शुक्ला की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कही। कहा कांग्रेस ने भारत रत्न तक नहीं दिया।भाजपा सरकार आने पर डॉ आंबेडकर को भारत रत्न मिला।संसद के सेंट्रल हाल में उनका चित्र स्थापित किया।भाजपा ने दलित समाज को उनका हक और सम्मान देने का काम किया है।बाबा साहब ने शाम को समान रूप से शिक्षा देने के लिए संविधान में सम्मिलित किया था उन्होंने कहा था की 14 वर्ष तक सबको बिना भेदभाव के निशुल्क शिक्षा दी जाए लेकिन कांग्रेस की सरकार ने इसको कभी भी लागू नहीं किया जब अटल जी के नेतृत्व में सरकार आए तब बाबा साहब के सपनों को सरकार करके सर्व शिक्षा अभियान के तहत बाबा साहब का सपना पूरा किया।उन्होंने कार्यकर्ताओं से भाजपा द्वारा डॉ आंबेडकर के सम्मान और दलित समाज के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को जन- जन के बीच पहुंचाने का आवाह्न किया।वही उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार दिनेश सिंह ने कहा बाबा साहब आदर्श, संघर्ष व योगदान भारत के लोगों को हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।यह भी कहा भारतरत्न डॉ अम्बेडकर दुनिया के हर पीड़ित,शोषित की आवाज थे। कांग्रेस ने डॉ आंबेडकर को अपमानित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। बाबा साहब को सबसे ज्यादा अपमानित करने वाली कांग्रेस आज संविधान की पुस्तक लेकर घूम रहे हैं उनको अपने गिरेबान में झांक कर भी देखना चाहिए इसके लिए भी हमें समाज को सजग रखना है बाबा साहब का अपमान करने वाले लोगों के झांसे में नहीं आना है। भाजपा जिलाध्यक्ष सुधांशु शुक्ला ने स्वागत भाषण

दिया। कहा कार्यकर्ता विपक्ष के भ्रम व झूठ फैलाने का तथ्यों के साथ पर्दाफाश करे। कार्यक्रम संयोजक जिला उपाध्यक्ष भवानी दत्त दीक्षित के संचालन में मंचासीन अतिथियों ने समेत 10 लोगों को सम्मानित किया।समापन भाषण जिला पंचायत सदस्य राम कृष्ण भारती ने दिया। उन्होंने आएं हुए लोगों का धन्यवाद व आभार प्रकट किया।भाजपा प्रवक्ता चन्द्रमौलि सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि गोष्ठी में प्रमुख रूप से पूर्व जिलाध्यक्ष दुर्गेश त्रिपाठी, पूर्व विधायक चंद्रप्रकाश मिश्रा मटियारी, उपमा सरोज जिला उपाध्यक्ष, गिरीश चंद्र शुक्ला जिला उपाध्यक्ष, प्रभात शुक्ला जिला मंत्री, अरुण मिश्रा सह मीडिया प्रभारी, समेत बड़ी संख्या में दलित समाज के बुद्धिजीवी और दलित समाज के अन्य लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

छात्रों ने पर्यावरण सम्बन्धी समस्या और उनके निवारण मॉडल बना कर प्रस्तुत किये

स्वतंत्र प्रभात

करारी, कौशाम्बी। करारी कस्बा स्थित डॉ0 रिज़वी स्प्रिंगफील्ड स्कूल में मंगलवार को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया। जिस अवसर पर छात्रों ने मॉडल और प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रदूषण, जंगल की कटाई आदि सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा की और विश्व को धरा को बचाने के अन्य तरीके स्लोगन के माध्यम से बताए। इसमे बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बच्चों को कम से कम एक वृक्ष लगाने का निर्देश दिया। विद्यालय के कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के बच्चों ने पीपीटी के माध्यम से पर्यावरण से सम्बन्धित समस्या और उनके निवारण सम्बन्धी अपने विचार प्रस्तुत किये। इसके बाद कक्षा छटवीं से आठवीं तक के छात्रों ने प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रदूषण एक गम्भीर समस्या और उसके निवारण हेतू आने विचार प्रस्तुत किये इसके बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य धर्मेन्द्र पाण्डेय ने छात्र छात्राओं को पृथ्वी को प्रदूषण से बचने के लिए 11 सूत्रीय तरीके बताए उन्होंने बताया कि प्रतिबन्धित प्लास्टिक और पॉलिथीन का

इस्तेमाल न करें, परिवार में खुशियों के हर मौके पर कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएं, घर और बाथरूम की सफाई में एसिड का इस्तेमाल न करें बल्कि बायो क्लीनर का इस्तेमाल करें। अपनी गाड़ियों की समय से मरम्मत कराएं ताकि कार्बन उत्सर्जन कम हो, प्रदूषण जांच नियमित कराएं। डीजी जेनसेंट के बजाए बिजली के लिए सोलर ऊर्जा स्टोरेज को प्राथमिकता प्रदान करें। बाग बगीचे में गिरी पत्तियों और घर से निकले कचरे को आग न लगाए बल्कि उससे हरित खाद बनाएं। घर में टपकने वाले प्रत्येक नल को ठीक कराएं। बिना वजह पीने वाले पानी को बर्बाद न करें। घर में आरओ प्लांट से निकलने वाले पानी को एकत्र कर उसे दूसरे कार्यो में इस्तेमाल करें। बारिश के जल को संरक्षित करने का प्रयास करें,उसका इस्तेमाल करें, अन्यथा भूमिगत रिचार्ज बढ़ाए। फसलों में खरपतवार प्रबंधन और कीट प्रबन्धन में जैविक कीटनाशक का इस्तेमाल करें। संकल्प ले कि प्रकृति को क्षति पहुंचाने वाली कोई भी गतिविधि नहीं करेंगे। इसके बाद सभी छात्र छात्राओं को एक पेड़ लगाने का निर्देश दिया। इस मौके पर मो0 आरिफ़, बिन्ते ज़हरा महफूज़ आलम, मो0 साजिद आदि अध्यापक सहित छात्र छात्राएँ मौजूद रहे।

दिव्यांग मोबाइल कोर्ट का किया गया आयोजन

● दिव्यांग जनों को मोबाइल कोर्ट में मिला न्याय, 74 दिव्यांग जनों ने पहुंचकर राज्य आयुक्त को बताई अपनी समस्या

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी। दिव्यांग जनों की समस्याओं के निराकरण हेतु तहसील गौरीगंज के सभागार में उत्तर प्रदेश के राज्य आयुक्त दिव्यांगजन प्रोफेसर हिमांशु शेखर झां की अध्यक्षता में दिव्यांग मोबाइल कोर्ट का आयोजन किया गया, जहां बड़ी संख्या में दिव्यांग जनों ने उपस्थित होकर अपनी समस्याओं से अधिकारियों को अवगत कराया। इस अवसर पर जिलाधिकारी संजय चौहान, मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल, उपायुक्त दिव्यांगजन शैलेंद्र कुमार सोनकर भी उपस्थित रहे। आयोजित इस दिव्यांग मोबाइल कोर्ट में जनपद अमेठी के कुल 74 दिव्यांग जनों ने पहुंच कर राज्य आयुक्त के समक्ष अपनी समस्याएं प्रस्तुत की, दिव्यांग जनों द्वारा उठाई गई प्रमुख समस्याओं जैसे आवास, शौचालय, भूमि विवाद, पुलिस संबंधी कार्यवाही हेतु, पेंशन, मोटराइज्ड ट्राई साइकिल, बिजली बिल, स्वास्थ्य विभाग संबंधित कुल 105 मामले पंजीकृत कराए गए, सभी मामलों के समाधान के लिए राज्य आयुक्त ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को जांच कर त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही दिव्यांग जनों को आदेश की प्रति भी उपलब्ध कराई गई। इस अवसर पर राज्य आयुक्त ने कहा कि यह दिव्यांग मोबाइल कोर्ट दिव्यांग जनों के लिए न्याय की पहुंच को सुगम बनाने की एक महत्वपूर्ण पहल

है राज्य आयुक्त की टीम जनपदों में जाकर दिव्यांग जनों की समस्याओं की सुनवाई करती है और मौके पर ही उनका समाधान करने का प्रयास करती है। इस अवसर पर उक्त के अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अंशुमान सिंह, जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी नरेंद्र कुमार पांडे, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ राजेश द्विवेदी, अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी शैलेंद्र कुमार, सहायक श्रमायुक्त गोविंद यादव सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

करतार सिंह पौनिया को फिर से मानवाधिकार परिषद का राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव नियुक्त किया

टूण्डला– मानवाधिकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रशान्त गिरी ने करतार सिंह पौनिया निवासी सुजात नगर कोटकी टूण्डला फिरोजाबाद को राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव नियुक्त किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रशान्त गिरी का कहना है कि करतार पौनिया अपनी आगे की टीम भी बनायेंगे। करतार सिंह पौनिया को राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव वनाये जाने पर हर्ष ब्यक्त किया। हर्ष ब्यक्त करने वालो में शहजाद खान, गौरव यादव, दीपक सिंह पौनिया, जीतकमल सिंह सोलंकी, ब्रजमोहन सिंह सिसोदिया आदि लोगों ने हर्ष व्यक्त किया।

हिरणपुर मवेशी हाट की होगी सैरात बंदोबस्ती, खुले डाक से होगी नीलामी

पाकुड़, झारखंड– हिरणपुर स्थित सरकारी मवेशी हाट की सैरात बंदोबस्ती को लेकर जिला प्रशासन ने बड़ा निर्णय लिया है। उपायुक्त के पत्राचार पर आयुक्त, संथाल परगना, दुमका से हटिया डाक करने की सहमति प्राप्त हो गई है, जिसके आधार पर मवेशी हाट की नीलामी खुले डाक (ओपन डाक) के माध्यम से की जाएगी। ज्ञात हो कि वित्तीय वर्ष 2016-17 से मवेशी हाट की डाक राशि 44 लाख रुपये निर्धारित होने के कारण कोई भी इच्छुक व्यक्ति इसे लेने को आगे नहीं आ रहा था। लेकिन जिला प्रशासन के प्रयासों और आयुक्त की सहमति से अब इस हाट के लिए न्यूनतम सुरक्षित राशि 16,40,420 रुपये निर्धारित की गई है। यह राशि एक वर्ष के लिए प्रभावी होगी। प्रशासन द्वारा तय न्यूनतम राशि के आधार पर इच्छुक व्यक्तियों को ओपन डाक प्रक्रिया के तहत भाग लेने का अवसर मिलेगा, जिससे हाट के सुचारु संचालन की उम्मीद की जा रही है।

बढ़ती गर्मी को देखते हुए थाना प्रभारी ने किया ठंडा पानी की व्यवस्था

ठाकुर गंगटी, झारखंड– इन दिनों गोड्डा जिला ओर साहेबगंज जिला सहित झारखंड राज्य के कई जिले में भीषण गर्मी की शुरूआत हो चुकी है और लोग यहां-वहां धूप से अपने आपको बचाते हुए नजर आते है। गर्मी में सबसे अधिक हालात खराब पेयजल से होती है क्योंकि आमजन को पीने के लिए ठंडे पानी की व्यवस्था कहीं नजर नहीं आती है। वहीं इस गर्मी को देखते हुए ठाकुर गंगटी थाना प्रभारी पंकज कुमार सिंह आगे आये और उनके द्वारा स्वंय के व्यय पर थाना परिसर में आमजनों को ठंडा पानी उपलब्ध हो सके इसके लिए प्याऊ खुलवाया गया। वहीं जो लोग सक्षम होते है वह बोतल खरीदकर ठंडे पानी से अपनी प्यास तो बुझा लेते है लेकिन सबसे अधिक परेशानियों का सामना गरीब तबके के लोगों को करना पड़ता है जिनके पास अपनी प्यास ठंडे पानी से बुझाने के लिए पैसे नहीं होते है। इन सभी समस्याओं को देखते हुए ठाकुर गंगटी थाना प्रभारी पंकज कुमार सिंह के द्वारा घड़ा में ठंडे पानी की व्यवस्था की गई। और उनके द्वारा अन्य पुलिस कर्मियों को आदेश दिया गया कि जैसे ही घड़ा में पानी खत्म होगा।तुरंत उसमें ठंडा पानी भर दिया जाना है।। उन्होंने कहा कि मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। इसलिए यहां पर आने जाने वाले सभी लोगों के लिए ठंडे पानी की व्यवस्था की गई है।

चौकीदार नियुक्ति के दस्तावेज़ सत्यापन का उपायुक्त ने किया निरीक्षण

साहेबगंज, झारखंड– सिद्धो कान्हू सभागार भवन में चौकीदार की नियुक्ति के तहत दस्तावेज़ सत्यापन का कार्य चल रहा है। इस प्रक्रिया का उपायुक्त हेमंत सती ने निरीक्षण किया और सभी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने अभ्यर्थियों से बातचीत कर उनकी समस्याएं जानी और पदाधिकारियों को निर्देश दिए कि सत्यापन कार्य पारदर्शी और सुचारु ढंग से किया जाए। उपायुक्त ने मौके पर मौजूद कर्मचारियों से कहा कि कोई भी गड़बड़ी या लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि सभी अभ्यर्थियों को समय पर जानकारी मिले और उन्हें कोई असुविधा न हो। दस्तावेज़ सत्यापन के लिए बड़ी संख्या में अभ्यर्थी पहुंचे थे, जिन्हें कतारबद्ध तरीके से बुलाया जा रहा था। उपायुक्त ने सभी पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि नियुक्ति प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता बरती जाए ताकि योग्य उम्मीदवारों को ही अवसर मिले। सत्यापन प्रक्रिया अगले कुछ दिनों तक जारी रहेगी।

समय पर ऋण चुकाना जरूरी- लोन चुकाने से बनती है अच्छी क्रेडिट हिस्ट्री - लीड बैंक प्रबंधक

●सुपौल में MFIN द्वारा माइक्रोफाइनेंस जागरूकता कार्यक्रम आयोजित, महिलाओं से समय पर भुगतान की अपील

स्वतंत्र प्रभात

सुपौल– भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा मान्यता प्राप्त एनबीएफसी-एमएफआई (NBFC-MFI) कंपनियों के लिए शीर्ष नियामक संस्था माइक्रोफाइनेंस इंडस्ट्री नेटवर्क (MFIN) के तत्वावधान में सोमवार को सुपौल जिला समाहरणालय स्थित लहटन चौधरी सभागार में एक माइक्रोफाइनेंस जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिले के लीड बैंक प्रबंधक अमित कुमार ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि, "अच्छी क्रेडिट रिपोर्ट तभी बनती है जब लोन का भुगतान समय पर किया जाए। इससे भविष्य में ग्राहकों को फिर से ऋण लेने में आसानी होती है, जिससे उनका आर्थिक और सामाजिक जीवन बेहतर बनता है।"

महिलाओं से विशेष अपील

नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक (DDM) मो. नयाज ने माइक्रोफाइनेंस कंपनियों द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए खास तौर पर महिलाओं से अपील की कि वे अपनी आवश्यकता और भुगतान क्षमता को ध्यान में रखकर ही लोन लें और उसे समय पर चुकाएं।

27 माइक्रोफाइनेंस कंपनियां कार्यरत

कार्यक्रम में MFIN के रीजनल हेड संजय कुमार ने बताया कि सुपौल और समस्तीपुर जिले में कुल 27 माइक्रोफाइनेंस कंपनियां सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं, जो सभी आरबीआई द्वारा विनियमित हैं। उन्होंने कहा, "वित्तीय साक्षरता किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऐसे कार्यक्रमों के

माध्यम से हम लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं।"उन्होंने यह भी बताया कि हाल के दिनों में कुछ अमान्य व्यक्तियों द्वारा भ्रामक प्रचार किया गया है, जिससे जनता में भ्रम की स्थिति बनी है। ऐसे में यह जागरूकता कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हो गया है।

शिकायतों के लिए हेल्पलाइन नंबर उपलब्ध

वरिष्ठ उप समाहर्ता (बैंकिंग) द्वारा नागरिकों को जानकारी दी गई कि यदि उन्हें किसी प्रकार की शिकायत या समस्या हो, तो वे अपने ऋण दस्तावेज में दिए गए शिकायत निवारण नंबर

या MFIN के टोल-फ्री नंबर पर संपर्क कर सकते हैं। साथ ही, जिला प्रशासन को भी विधिवत सूचना देने की अपील की गई।

डिजिटल धोखाधड़ी से बचाव पर चर्चा

कार्यक्रम के दौरान डिजिटल धोखाधड़ी से बचाव के उपायों पर भी विस्तार से चर्चा की गई। सभी विशेषज्ञों ने लोगों से सतर्क रहने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना संबंधित संस्थाओं को देने का आग्रह किया। यह कार्यक्रम MFIN द्वारा एल एंड टी फाइनेंस लिमिटेड के सहयोग से आयोजित किया गया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ ने पृथ्वी दिवस पर पर्यावरण संरक्षण को लेकर किया जागरूक

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़, झारखंड– झालसा रांची के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ के तत्वाधान में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ शेष नाथ सिंह के निर्देश पर डीएलएसए सचिव रूपा वंदना किरो के मार्गदर्शन में पाकुड़ प्रखंड के अंजना उच्च विद्यालय पृथ्वीनगर में विश्व पृथ्वी दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित की गई। उक्त कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी समीर अल्फ्रेड मुर्मू ने बताया कि प्रकृति से यदि हम छेड़ छाड़ करेंगे तो संतुलन बिगड़ जाएगा और पृथ्वी पर जीना मुश्किल हो जाएगा इसलिए हम संकल्प ले कि नदी , जंगल , अथवा प्रकृति से किसी भी प्रकार का छेड़ छाड़ न करे। संरक्षण करे ताकि जीवन संभव हो सके। और स्वस्थ हरियाली वातावरण हम सब रह सके। वहीं कार्यक्रम में लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के डिप्टी चीफ संजीव कुमार मंडल सहायक गंगाराम टुडू ने संयुक्त रूप से जागरूक की। बताया कि हर साल 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। यह दिन पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने

और लोगों को प्रकृति के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए मनाया जाता है ।लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया। इस आयोजन ने लोगों को पर्यावरण की रक्षा करने और एक स्वस्थ भविष्य के लिए काम करने के महत्व के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करते हुए कहा लोगों द्वारा कई प्रकार से प्रदूषण के बढ़ावा को रोकना जरूरी, पॉलीथिन का इस्तेमाल न करने, पेड़ पौधे लगाए स्वच्छ और हरियाली बनाए, जल का दुरूपयोग न करें जल संरक्षण कर पृथ्वी को संतुलित वातावरण बनाए रखने में हम सभी का योगदान का होना अत्यंत जरूरी है। पेड़ पौधे के कट जाने से आज अत्यंत गर्मी जैसे समस्या उत्पन्न हो रही। समेत संरक्षण को लेकर कई महत्वपूर्ण बिंदु पर चर्चा की गई। मौके पर पीएलवी अमूल्य रत्न रविदास, एजारूल शेख समेत ग्रामीण उपस्थित रहे।

मोटरसाइकिलों की टक्कर में दो घायल, मो कयूम ने घायलों को पहुंचाया अस्पताल

बरही, झारखंड– बरही थाना क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति आवासीय विद्यालय मोड़ के समीप रविवार को एक सड़क हादसे में दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। कोरियाडीह निवासी विकास प्रसाद और दुलमाहा निवासी रोशन राम की मोटरसाइकिलें आमने-सामने टकरा गईं, जिससे दोनों सड़क पर गिरकर घायल हो गए। घटना के समय वहां से गुजर रहे अल्पसंख्यक कल्याण महासमिति के अध्यक्ष मो. कयूम ने घायलों को अपने निजी वाहन से बरही अनुमंडलीय अस्पताल पहुंचाया। वहां दोनों का प्राथमिक उपचार कराया गया। साथ ही मो. कयूम ने तत्काल उनके परिजनों को भी सूचना दी। स्थानीय लोगों ने मो. कयूम के इस मानवीय कार्य की सराहना की।

एनएच 327ई बना हादसों का अड्डा, प्रशासन की अनदेखी से बढ़ा खतरा

स्वतंत्र प्रभात

सुपौल – जिले से गुजरने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग 327ई (एनएच 327ई) इन दिनों हादसों का गवाह बनता जा रहा है। खासतौर पर रात के समय इस सड़क पर भारी मालवाहक वाहन, ट्रक और हाईवा बेतरतीब तरीके से खड़े कर दिए जाते हैं, जिससे सड़क मार्ग संकरा हो जाता है और दुर्घटनाओं का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार इस सड़क पर गंभीर हादसे हो चुके हैं, जिनमें लोगों की जान तक जा चुकी है। बावजूद इसके, संबंधित प्रशासन की ओर से कोई ठोस और स्थायी समाधान अब तक नहीं निकाला गया है। रात के समय ट्रैफिक की निगरानी में कमी का लाभ उठाकर चालक मनमानी करते हैं और अपने वाहनों को कहीं भी खड़ा कर देते हैं। यह स्थिति खासतौर पर दोपहिया और चारपहिया वाहन चालकों के लिए जानलेवा बन रही है।

स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से मांग की है कि इस मार्ग पर नियमित गश्त की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और अवैध रूप से खड़े वाहनों पर कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि हादसों पर लगाम लगाई जा सके। इस विषय में जब प्रभारी थानाध्यक्ष राहुल कुमार से बात की गई, तो उन्होंने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए गश्ती दल को निर्देशित किया गया है। एनएच 327ई पर अवैध रूप से खड़े वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। सड़क सुरक्षा के लिहाज से यह जरूरी हो गया है कि प्रशासन तत्काल प्रभाव से कार्रवाई करे और इस मार्ग पर निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए, जिससे आम लोगों की जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

शादी के दिन उठी भाई की अर्थी, हल्दी के बाद रिश्तेदारों को छोड़कर घर लौटते वक्त सड़क हादसे में गई भाई की जान,मातम में बदला माहौल

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज। थाना क्षेत्र के मुख्य बाजार में एक ऐसी हृदयविदारक घटना सामने आई जिसने हर किसी को स्तब्ध और गमगीन कर दिया। जिस घर से सोमवार की रात एक बहन की डोली उठनी थी,उसी घर से उसके शादी के दिन भाई की अर्थी उठी।नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड 18 निवासी व्यवसायी रमेश गुप्ता का पुत्र गोलू कुमार (18 वर्ष) और जागुर वार्ड 11 निवासी रामधनी यादव का पुत्र मुकेश कुमार (22 वर्ष) बीती रविवार देर रात एक दर्दनाक सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए। गोलू,अपनी बहन की शादी के हल्दी रस्म में शामिल मेहमानों को बोलेनो कार से पिपरा छोड़कर रात करीब डेढ़ बजे घर लौट रहा था। तभी थाना क्षेत्र के लालपट्टी धर्मकांटा के पास उनकी तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े एक हाईवा ट्रक नंबर बीआर जेएच 4 ए 09722 से जा टकराई।टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और सेफ्टी एयरबैग भी फट गया। टकराने की आवाज सुनकर आसपास के लोग घटनास्थल पर पहुंचे और दोनों घायलों को गंभीर स्थिति में अस्पताल

पहुंचाया। सूचना पर परिजन भी तुरंत पहुंचे।अस्पताल के डॉक्टरों ने दोनों की नाजुक हालत को देखते हुए उन्हें तुरंत रेफर कर दिया। गोलू को परिजन सुपौल के एक निजी अस्पताल ले गए,जहां से उसे सिलीगुड़ी रेफर किया गया। लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद रविवार संध्या सिलीगुड़ी में डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जैसे ही इसकी सूचना घर पहुंची,पूरे परिवार पर मानो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। शादी का घर चंद मिनटों में मातम में तब्दील हो गया। गोलू की बहन की शादी सोमवार को होनी थी।हल्दी,मेहंदी समेत सभी रस्में पूरी हो चुकी थीं। घर सज चुका था,टेंट लगे थे,बारात आने को तैयार थी। लेकिन गोलू की मौत की खबर ने माहौल को गहरे शोक में डुबो दिया। दुल्हन को रिश्तेदारों द्वारा रविवार देर संध्या सुपौल ले जाया गया,जहां पहले से तय एक होटल में सोमवार रात उसका विवाह संपन्न कराया जाता जिसमें दुल्हन के माता-पिता,चाचा-चाची समेत परिवार का कोई भी सदस्य शामिल नहीं होने का निर्णय लिया गया था,लेकिन सोमवार को शादी के दिन विद्वान पंडित और पुरोहितों ने ढाई महीने बाद विवाह कराने का निर्णय दुल्हन के परिवारों को दिया। फिर दुल्हन को बिना शादी के सुपौल से वापस सोमवार को लाया गया।इस हृदयविदारक घटना ने न केवल एक घर की खुशियों को मातम में बदला,बल्कि पूरे क्षेत्र के लोगों को शोक में डुबो दिया।हर आंख नम थी,हर मन व्यथित हो गया।

सुपौल में लूटपाट के दौरान युवक की गोली मारकर हत्या

28 हजार रुपये लूटकर बदमाश फरार

●मृतक परिवार का एकमात्र कमाऊ सदस्य था

आक्रोशित लोगों ने किया सड़क जाम

स्वतंत्र प्रभात

सुपौल। जिले के लौकहा थाना क्षेत्र अंतर्गत बरुआरी पंचायत स्थित गंगापट्टी में रविवार शाम एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई। गैस गोदाम के पास तीन अज्ञात अपराधियों ने लूटपाट के दौरान एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी। मृतक की पहचान परसरमा गांव निवासी मोहम्मद जहांगीर (उम्र लगभग 40 वर्ष) के रूप में हुई है। मिली जानकारी के अनुसार, मोहम्मद जहांगीर परसरमा गांव में मकान की छत की ढलाई कर 28 हजार रुपये लेकर अपने घर गंगापट्टी लौट रहे थे। उसी दौरान बाइक सवार तीन अज्ञात बदमाशों ने उन्हें रास्ते में घेर लिया और लूटपाट शुरू कर दी। विरोध करने पर अपराधियों ने

उन पर गोली चला दी, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर भेजा पोस्टमार्टम के लिए

घटना की सूचना मिलते ही लौकहा थाना अध्यक्ष आलमगीर अंसारी मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल सुपौल भेजा। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ शुरू की है। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज की भी जांच की जा रही है।

एसपी ने लिया घटनास्थल का जायजा

घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधीक्षक (एसपी) शैशव यादव खुद मौके पर पहुंचे और मामले की जांच कर रहे अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने जल्द से जल्द अपराधियों की गिरफ्तारी का भरोसा दिलाया है।

गांव में पसरा मातम, परिजनों पर टूटा दुखों का पहाड़

मोहम्मद जहांगीर परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे। उनके पीछे चार बेटे और एक बेटी हैं। उनकी असमय मृत्यु से पूरा परिवार सदमे में है। गांव में शोक की लहर है और हर आंख नम है।

सड़क जाम कर लोगों ने किया प्रदर्शन, पुलिस वाहन में तोड़फोड़

एसपी के लौटने के बाद स्थानीय लोग गहरे आक्रोश में आ गए। परिजन और ग्रामीणों ने शव के साथ सड़क जाम कर प्रदर्शन शुरू कर दिया। टायर जलाकर हंगामा किया गया। इसी बीच डायल 112 की पुलिस गाड़ी मौके पर पहुंची, लेकिन गुस्साए लोगों ने पुलिस टीम पर हमला कर दिया।पुलिस कर्मी किसी तरह वहां से निकलने में सफल रहे, लेकिन पुलिस वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया गया।इसके बाद एसपी शैशव यादव दोबारा घटनास्थल पर पहुंचे और प्रदर्शनकारियों को समझाकर शांत कराया। उनके आश्वासन के बाद स्थिति सामान्य हो सकी।

सरकारी पक्की नाली का निर्माण नहीं किये जाने से रोड पर पानी बहने पर टोले बासियों में दिखी नाराजगी

पाकुड़िया/पाकुड़/झारखण्ड– पाकुड़िया प्रखण्ड के खाकसा पंचायत के पंचायत मुख्यालय ग्राम खाकसा स्थित भारतीय स्टेट बैंक पथ में मुडरा मोहल पीसीसी सड़क से जाहेर थान तक रोड पर प्रतिदिन पानी बहने से ग्रामीणों के आवागमन में कठिनाई होने की बात कही जा रही है। बताया जाता है कि पानी बहते रहने से पथ कीचड़मय हो जाता है जिससे गंदगी फैलने के कारण कीटाणुओं की वृद्धि होने का अनुमान लोगों को हो रहा है। यद्यपि इस टोले की दूसरी ओर पक्की नाली है परन्तु निर्मित पक्की नाली की पूरी सफाई वर्षा के पूर्व नहीं की जाने से पथ पर गंदगी फैल सकती है। आये दिन पाकुड़िया प्रखण्ड के कई पंचायतों में बड़े पैमाने पर वित्त आयोग निधि से पक्की नाली एवं गार्डवालों का निर्माण किया गया है जिसकी उपयोगिता थी ही नहीं। लोगों का मानना है कि सरकारी राशि का उपयोग स्थल का निरीक्षण तथा उपयोगिता को देखते हुए करना चाहिए ताकि राशि का सदुपयोग जन हित में हो सके।

बिना हेलमेट-लाइसेंस के वाहन चलाना पड़ा महंगा, एक दिन में काटा गया 74 हजार लाख रुपये का चालान

●त्रिवेणीगंज में पुलिस की सख्ती से मचा हड़कंप 68 वाहनों पर हुई कार्रवाई

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज (सुपौल)– ट्रैफिक नियमों की अनदेखी अब वाहन चालकों पर भारी पड़ने लगी है। बुधवार को त्रिवेणीगंज थाना क्षेत्र में चलाए गए विशेष वाहन चेकिंग अभियान के दौरान पुलिस ने 68 से अधिक दोपहिया चालकों पर कार्रवाई की। इनमें अधिकतर चालक बिना हेलमेट, वैध ड्राइविंग लाइसेंस और अन्य जरूरी दस्तावेजों के वाहन चला रहे थे। थानाध्यक्ष रामसेवक रावत ने

बताया कि ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। डीएसपी आवास के समीप विशेष रूप से चेकिंग अभियान चलाया गया, जिसमें भारी संख्या में ऐसे चालक पकड़े गए जो नियमों की अनदेखी कर रहे थे।अभियान के दौरान पांच सौ से लेकर पांच हजार रुपये तक का चालान काटा गया, जिससे कुल वसूली राशि एक लाख दो हजार रुपये तक पहुंच गई। थानाध्यक्ष ने बताया कि विशेषकर युवाओं में ट्रैफिक नियमों को लेकर लापरवाही तेजी से बढ़ रही है, जिसे नियंत्रित करने के लिए थाना क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में नियमित और सघन वाहन जांच अभियान जारी रहेगा। उन्होंने वाहन चालकों से ट्रैफिक नियमों का पालन करने और हेलमेट, लाइसेंस जैसे जरूरी दस्तावेज साथ रखने की अपील की।

दुधपनिया में भव्य कलश यात्रा निकाली गई, श्री शिव शक्ति सह हनुमत प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का हुआ शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात

बरही, झारखंड– बरही प्रखण्ड के ग्राम दुधपनिया करियातपुर में आयोजित श्री शिव शक्ति सह हनुमत प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की शुरुआत सोमवार को भव्य कलश यात्रा के साथ हुई। धार्मिक उल्लास और आस्था से ओतप्रोत इस यात्रा में सैकड़ों श्रद्धालुओं की भागीदारी देखी गई, जिसमें महिला श्रद्धालु कलश सिर पर धारण कर गाजे-बाजे के साथ यात्रा में शामिल हुईं। पूरा वातावरण जय श्रीराम और हर हर महादेव के जयकारों से गूंज उठा। कलश यात्रा में जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, मुखिया संघ अध्यक्ष विजय यादव, जीप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता, मुखिया मनोज कुमार, पूर्व पंसस राजकुमार रविदास जैसे गणमान्य लोग विशेष रूप से उपस्थित रहे। महोत्सव के मुख्य जजमान गोगल प्रजापति, गणेश साव एवं विजेश्वर साव सपरिवार विधिपूर्वक पूजा-अर्चना कर आयोजन की शुरुआत की। वैदिक

मंत्रोच्चार और धार्मिक अनुष्ठानों के बीच श्रद्धालुओं ने पूरे श्रद्धा और समर्पण भाव से पूजा में भाग लिया। इस कलश यात्रा ने क्षेत्र में सामाजिक समरसता और धार्मिक एकता का उदाहरण पेश किया। कलश यात्रा में उपमुखिया संतोष प्रजापति, चन्दन केशरी, नंदकिशोर कुमार, निरंजन केशरी, पूजा कमिटी अध्यक्ष अर्जुन पंडित, सचिव नारायण राणा, कोषाध्यक्ष राजकुमार राणा, उपाध्यक्ष गणेश साव, शिव कुमार प्रजापति समेत सैकड़ों श्रद्धालु सम्मिलित हुए। पूरे आयोजन के सफल संचालन में पूजा कमिटी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

नालंदा खुला विश्वविद्यालय का 17वां दीक्षांत समारोह संपन्न, 53 स्वर्ण पदक विजेताओं में 42 बेटियाँ

●मो जहांगीर अंसारी को जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन में मिली एमए की उपाधि

स्वतंत्र प्रभात

बरही– पटना स्थित सम्राट अशोक कन्वेंशन सेंटर के बापू सभागार में नालंदा खुला विश्वविद्यालय का 17वां दीक्षांत समारोह भव्य रूप से संपन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार के राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति महामहिम आरिफ मोहम्मद खान ने शिरकत की। समारोह की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. रविंद्र कुमार द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत करने से हुई। उन्होंने जानकारी दी कि इस वर्ष कुल 16,212 छात्रों ने 53 विभिन्न संकायों में परीक्षा में भाग लिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में महामहिम राज्यपाल ने नालंदा खुला विश्वविद्यालय के शैक्षणिक प्रयासों की सराहना की और इसे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारत के लिए एक मील का पत्थर बताया। उन्होंने कुलपति डॉ. रविंद्र कुमार, प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल. चार्टर, इग्नू के पूर्व कुलपति डॉ. नागेश्वर राव, कुलसचिव डॉ. समीर कुमार शर्मा तथा विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद, विद्या परिषद, वित्त समिति, शिक्षकगण, पदाधिकारीगण, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं मीडिया प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया। इस अवसर पर कुल 53 स्वर्ण पदक विजेताओं को सम्मानित किया गया, जिनमें 42 बेटियों ने स्वर्ण पदक प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया।

महामहिम राज्यपाल ने इसे सामाजिक बदलाव की दिशा में एक सकारात्मक संकेत बताया और कहा कि यह परिवर्तन भारत को एक विकसित और समरस समाज की ओर ले जाएगा। उन्होंने कहा कि शिक्षित बेटियाँ आने वाले समय में सफलता की नई ऊँचाइयाँ छूएंगी। दीक्षांत समारोह में हजारीबाग निवासी मो. जहांगीर अंसारी को जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन में एम.ए. की उपाधि प्रदान की गई, वहीं मूसर्रत जहां को मास्टर इन एजुकेशन की डिग्री मिली। इस उपलब्धि पर ऑल इंडिया मोमिन कॉन्फ्रेंस के सभी पदाधिकारियों और शिक्षा जगत से जुड़े अनेक लोगों ने उन्हें बधाई दी। बधाई देने वालों में विनय कुमार सिंह, पंकज कुमार गुप्ता, नागेश्वर सिंह, मो. फिरोज, मो. मुजाहिर, मो. मंसूर आलम, पंकज कुमार ओझा, स्वदेश कुमार ओझा, सरिता कुमारी, ललन कुमार ओझा, पूर्व जिला अध्यक्ष कांग्रेस ई. मो. आबिद अंसारी, सलीम रजा अंसारी आदि शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

ससुराल से बेटे संग रहस्यमयी तरीके से लापता हुई महिला, परिजनों में मचा हड़कंप

जौनपुर। लाइन बाजार थाना क्षेत्र के अंतर्गत अली खानपुर से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां रूमा देवी (24 वर्ष) अपने सात वर्षीय पुत्र कार्तिक के साथ ससुराल से अचानक लापता हो गई। घटना 17 अप्रैल की रात की बताई जा रही है। परिजनों ने काफी खोजबीन की, लेकिन महिला और उसके बेटे का अब तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। पीड़ित संदीप कुमार, जो रोज़गार के सिलसिले में महाराजगंज में एक दुकान पर कार्यरत हैं, को 18 अप्रैल की सुबह इस घटना की जानकारी मिली। वह तत्काल घर लौटे और स्वयं भी हर संभावित स्थान पर तलाश की, यहां तक कि पत्नी के मायके मीरपुर, थाना पवई, जिला आजमगढ़ भी गए, लेकिन कहीं से कोई जानकारी नहीं मिली। इस घटना से संदीप और उनका परिवार बेहद डरे और सहमे हुए हैं। अब संदीप कुमार ने थाने में प्रार्थना पत्र देकर पत्नी और बेटे की तलाश की गुहार लगाई है। स्थानीय पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। वहीं ग्रामीणों और परिजनों के बीच इस रहस्यमयी गुमशुदगी को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं भी हो रही हैं।

मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के तहत मिशन मोड में किया जा रहा है पशु पक्षियों का वितरण

पाकुड़, झारखंड- मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना 2024-25 के तहत अनुदान प्राप्त लाभुकों को मिशन मोड पर पशु, पक्षी उपलब्ध कराया जा रहा है। इस संबंध में जिला पशुपालन पदाधिकारी डॉ0 अनिल कुमार सिन्हा ने बताया की उपायुक्त के निर्देशानुसार आगामी 15 मई तक अनुदान प्राप्त लाभुकों को शत-प्रतिशत पशु-पक्षी उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी क्रम में जिले में प्रतिदिन अलग-अलग प्रखंडों में बकरी पालन, मुर्गी पालन, सूकर पालन एवं आदि से संबंधित लाभुकों को गुणवत्तापूर्ण पशुधन उपलब्ध कराया जा रहा है।

भगवान ब्रह्मा की पूजा करने से जीवन में बनी रहती है मंगलमयता- स्वामी शक्तिदेव महराज

चित्रकूट- पृथ्वी पर धर्म की हानि होने पर धर्म की रक्षा के लिए स्वयं सर्वोच्च दिव्य शक्ति निराकार परम ब्रह्म ओंकार भगवान अवतरित होते है। भगवान ब्रह्मा ने रविवार के दिन ओंकार भगवान से सृजन की शक्ति प्राप्त कर सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी। इसके चलते भगवान ब्रह्मा की पूजा के लिए रविवार ईष्ट दिन है। यह बात धर्मनगरी आए स्वामी शक्तिदेव महराज कुरड़ी वाले ने मंगलवार को श्रद्धालुओं से कहीं। उन्होंने बताया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार के दिन भगवान ब्रह्मा ने ओंकार महायज्ञ ओंकार महामंत्र से सम्पूर्ण किया और उन्हें सृष्टि सृजन की शक्ति प्राप्त हुई थी। विश्व में एकमात्र भगवान ब्रह्मा सिद्ध पीठ भगवान ब्रह्मा मंदिर कुरुक्षेत्र में है। यहां प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान ब्रह्मा रथ यात्रा निकाली जाती है। भगवान ब्रह्मा द्वारा धर्मक्षेत्र की भूमि सत् से कीलित है। सत् भाव से लोक कल्याणी सात्विक साधनाएं, यहां निर्विघ्न पूर्ण होती हैं। ऐसे में इस भूमि के सर्वप्रथम ईष्ट देव भगवान ब्रह्मा की पूजा करने से उनकी आत्मा वेदों का ज्ञान स्वतः होने लगता है और जीव को जीवन में सदैव मंगलमयता की प्राप्ति होती है। साथ ही जीव की रक्षा श्री ब्रह्मा कवच द्वारा होती है। जिससे जीव भौतिक क्षेत्र व धर्म क्षेत्र में हमेशा विजयी होता है। इस मौके पर सदर विधायक अनिल प्रधान, चित्रकूट प्रेस क्लब अध्यक्ष सत्यप्रकाश द्विवेदी, ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रेमस्वरूप मिश्रा, चित्रकूट के पूर्व विधायक नीलांशु चतुर्वेदी, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, वरिष्ठ पत्रकार गणेश गुप्ता आदि मौजूद रहे।

व्यापार मंडल की सभी इकाइयों की कार्यकारिणी भंग करने की घोषणा

● नई कार्यकारिणी गठन की प्रक्रिया जल्द शुरू होगी - विवेक सिंह

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। 22 अप्रैल 2025 को भारतीय उद्योग व्यापार मंडल जौनपुर के जिलाध्यक्ष विवेक सिंह ने एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए संगठन की जिला इकाई, नगर इकाई, जिला युवा इकाई, नगर युवा इकाई सहित सभी तहसील और बाजार इकाइयों की कार्यकारिणी को भंग कर दिया। जिलाध्यक्ष विवेक सिंह ने बताया कि यह निर्णय संगठनात्मक प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के लिए लिया गया है। उन्होंने कहा कि व्यापार मंडल का उद्देश्य व्यापारियों के हितों की रक्षा करना और संगठन को सशक्त बनाना है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सभी इकाइयों का

पुनर्गठन किया जाएगा।

संगठनात्मक प्रक्रिया का होगा पालन

विवेक सिंह ने स्पष्ट किया कि नई कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया जल्द ही शुरू की जाएगी। इस प्रक्रिया में सभी सदस्यों से परामर्श लिया जाएगा और योग्यता, अनुभव, तथा संगठन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्राथमिकता दी जाएगी। जिलाध्यक्ष ने यह भी आश्वासन दिया कि नई कार्यकारिणी में सभी क्षेत्रों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाएगा।

व्यापारियों में नई ऊर्जा का संचार

इस घोषणा के बाद व्यापारियों के बीच नई ऊर्जा और उम्मीद का माहौल देखा जा रहा है। व्यापार मंडल के सदस्यों का कहना है कि यह कदम संगठन की कार्यक्षमता को बढ़ाने में सहायक होगा।

पुनर्गठन का उद्देश्य

विवेक सिंह ने कहा, "हमारा उद्देश्य व्यापारियों के मुद्दों को सुलझाना और उनके अधिकारों की रक्षा करना है। नई कार्यकारिणी के गठन के बाद संगठन की कार्यशैली में सुधार होगा और हम बेहतर तरीके से व्यापारियों की सेवा कर सकेंगे।"

आगामी कदम

जिलाध्यक्ष ने यह भी जानकारी दी कि नई कार्यकारिणी के गठन से पहले संगठन के सदस्यों की बैठकें आयोजित की जाएंगी। इसमें सभी सदस्यों की राय ली जाएगी और उनके सुझावों के आधार पर नई टीम का गठन किया जाएगा। संगठनात्मक बदलावों को लेकर व्यापार मंडल के सदस्यों के बीच उत्सुकता का माहौल है। सभी को उम्मीद है कि नई कार्यकारिणी व्यापारियों के हितों को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाएगी।

पृथ्वी दिवस पर संप्रेक्षण गृह में जागरूकता कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण चित्रकूट के तत्वावधान में राजकीय संप्रेक्षण गृह किशोर, चित्रकूट में मंगलवार को 'विश्व पृथ्वी दिवस' के अवसर पर एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम "पृथ्वी बचाओ" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किशोर संवासियों और स्टाफ में पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत करना और पृथ्वी के संरक्षण के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राविधिक वालियर एवं योगाचार्य संजय कुमार ने किया। उन्होंने समस्त संवासियों और उपस्थित स्टाफ को संबोधित करते हुए कहा कि इस वर्ष हम 55वां पृथ्वी दिवस मना रहे हैं। उन्होंने बताया कि पृथ्वी ब्रह्मांड की सबसे अनमोल वस्तु है, क्योंकि इसी में जीवन के लिए आवश्यक तत्व जैसे ऑक्सीजन और पानी उपलब्ध हैं। योगाचार्य संजय कुमार ने चिंता जताई कि मानव द्वारा किए जा रहे गलत कार्यों के चलते पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो रहे हैं। उन्होंने पृथ्वी को बचाने के लिए जल संरक्षण, तेल का कम उपयोग, हरित ऊर्जा को अपनाने, अपशिष्ट और प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने पर जोर दिया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. अभिषेक मिश्रा ने संवासियों को संबोधित करते हुए कहा, "हमारा शरीर जिन पाँच तत्वों से बना है, उनमें पृथ्वी तत्व सबसे महत्वपूर्ण है। हम सब पृथ्वी की संतान हैं और इसकी सुरक्षा हमें मां की तरह करनी चाहिए।"कार्यक्रम में सहायक अधीक्षक वीर सिंह, सहायक अध्यापक राजीव कुमार सिंह, परामर्शदाता दीपक शर्मा, अनुका गुप्ता, कमल सिंह सहित संस्था के समस्त संवासी और स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर पृथ्वी को बचाने का संकल्प लिया और पर्यावरण के संरक्षण हेतु सकारात्मक प्रयास करने की शपथ ली। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अधिकारियों ने इस तरह के जागरूकता अभियानों को निरंतर जारी रखने की बात कही, ताकि भावी पीढ़ी एक सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण में जीवन जी सके।

ग्रामोद्योग इकाइयों को मिलेगा पुरस्कार, आवेदन 30 अप्रैल तक

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट। जनपद के ग्रामोद्योग क्षेत्र में कार्य कर रही उत्कृष्ट इकाइयों को प्रोत्साहित करने के लिए शासन ने एक अहम कदम उठाया है। खादी ग्रामोद्योग पुरस्कार योजना के अंतर्गत उन उद्यमियों को सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस संबंध में जिला ग्रामोद्योग अधिकारी राजेन्द्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं - मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम एवं खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग द्वारा संचालित प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित होकर जो उद्यमी स्वयं के स्रोतों से अपनी इकाई की

स्थापना कर चुके हैं, उन्हें इस योजना का लाभ मिलेगा। राजेन्द्र कुमार ने बताया कि ऐसी इकाइयां जो वित्तीय वर्ष 2025-26 से तीन वर्ष पूर्व स्थापित की गई हों एवं वर्तमान में लगातार सफलता पूर्वक संचालित हो रही हों, उन्हें इस योजना के अंतर्गत पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उनके कार्यों की सराहना के साथ-साथ अन्य नवोदित उद्यमियों को प्रेरणा देने का कार्य करेगा। इन इकाइयों का चयन शासन द्वारा गठित समिति द्वारा किया जाएगा, जो उनके उत्पाद की गुणवत्ता, बिक्री एवं नवाचार क्षमता जैसे मापदंडों के आधार पर निर्णय लेगी। उन्होंने बताया कि इच्छुक उद्यमी 30 अप्रैल 2025 तक किसी भी कार्य दिवस में जिला ग्रामोद्योग अधिकारी कार्यालय, विकास भवन, सोनेपुर-चित्रकूट में उपस्थित होकर निर्धारित प्रारूप पर अपना आवेदन पत्र जमा कर सकते हैं। आवेदन पत्र निर्धारित प्रारूप में ही मान्य होंगे, जिसकी पुष्टि कार्यालय से की जा सकती है। उद्यमियों से अपील की है कि वे इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाएं और समय से आवेदन कर शासन द्वारा दिए जाने वाले इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए अपनी दावेदारी प्रस्तुत करें।

संत निरंकारी मिशन द्वारा मानव एकता दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- आध्यात्मिकता ही मानव एकता को मजबूती दे सकती है तथा मानव को मानव के निकट लाकर आपसी प्रेम और सौहार्द का वातावरण बना सकी है। इसी मन्तव्य से सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता जी के आशीर्वाद से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'मानव एकता दिवस' का आयोजन 24 अप्रैल को होगा। भारतवर्ष के प्रत्येक ब्राँचों में श्रद्धालु भक्त सम्मिलित होकर बाबा गुरबचन सिंह जी एवं मिशन के अनन्य भक्त चाचा प्रताप सिंह जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगें और उनके महान जीवन से प्रेरणा लेगें। यह जानकारी देते हुए स्थानीय मीडिया सहायक उदय नारायण जायसवाल ने बताया कि 24 अप्रैल को मानव एकता दिवस के दिन मड़ियाहूं पड़ाव स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन पर जोन स्तरीय रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ है। इस शिविर में रक्तदान करने के लिए जनपद के 43 ब्रांचो से श्रद्धालु भक्त शामिल होंगे। जिसका समय प्रातः 9:00 बजे से 1:00 बजे तक है। इसके अतिरिक्त जनपद के सभी ब्रांचो पर सत्संग का भी आयोजन होगा।

इस रक्तदान शिविर में रक्त संग्रहित करने हेतु जिला अस्पताल (सदर) के प्रशिक्षित डाक्टर एवं टीम सम्मिलित होंगी। साथ ही देश के अन्य राज्यों में भी आयोजित रक्तदान शिविरों में स्थानीय अस्पतालों के डाक्टर एवं नर्स रक्त संग्रहित करने हेतु इस सेवा को निभाने के लिए तत्पर रहेंगे। संत निरंकारी मंडल के सचिव समाज कल्याण विभाग के प्रभारी आदरणीय श्री जोगिंदर सुखीजा ने जानकारी देते हुए बताया कि सतगुरु की असीम कृपा से इस वर्ष भी संपूर्ण विश्व के लगभग 500 से अधिक स्थानों पर संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वाधान में रक्तदान शिविर का व्यापक स्तर पर आयोजन किया जाएगा। जैसा कि सर्वविदित ही है कि युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी समाज कल्याण के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। प्रत्येक भक्त के जीवन को वास्तविक रूप में एक व्यावहारिक दिशा प्रदान की जिसके लिए मानवता उनकी सदैव ही ऋणी रहेगी। निश्चित रूप में लोक कल्याण हेतु चलाया जा रहा यह अभियान निरंकारी सतगुरु की प्रदत्त सिखलाइयो को दर्शाते हुए एक दिव्य संदेश प्रेषित कर रहा है जिससे हर प्राणी प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को कृतार्थ कर रहा है।

डोभी की बेटी आस्था सिंह ने आईएएस परीक्षा में 61वां स्थान प्राप्त कर रचा इतिहास

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- डोभी क्षेत्र की बेटी आस्था सिंह ने अपने पहले ही प्रयास में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) परीक्षा में 61वां स्थान प्राप्त कर न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे जनपद का नाम रोशन किया है। उनकी इस उपलब्धि से क्षेत्र में हर्ष का माहौल है। उनके पैतृक गांव कुशहा (कनौरा) में बधाई देने वालों का तांता लग गया है।

शैक्षिक यात्रा और प्रारंभिक जीवन

आस्था सिंह, बृजेश कुमार सिंह और शालिनी सिंह की पुत्री हैं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा भोपाल से हुई और उसके बाद हरियाणा के पंचकुला में उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिए वे दिल्ली के

प्रतिष्ठित श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स गई, जहां उन्होंने बी.कॉम ऑनर्स में टॉप किया। उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दिल्ली के गवर्नर द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

पेशेवर करियर और उपलब्धियां

आईएएस परीक्षा में अपनी सफलता से पहले आस्था हरियाणा सरकार के पंचकुला कार्यालय में पीसीएस (असिस्टेंट टैक्सेशन ऑफिसर) के पद पर कार्यरत थीं। इस दौरान उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी उन्हें सम्मानित किया।

परिवार और प्रेरणा स्रोत

आस्था का परिवार शिक्षा और समाज सेवा में अग्रणी रहा है। उनके पिता बृजेश कुमार सिंह और माता शालिनी सिंह दोनों एमएससी डिग्रीधारी हैं। उनके दादा स्वर्गीय रामाश्रे सिंह एक प्रसिद्ध समाजसेवी और भाजपा किसान मोर्चा के मंडल अध्यक्ष थे। उनकी बड़ी बहन आंचल सिंह बीटेक कर नौकरी कर रही हैं।

गांव और क्षेत्र में उत्साह

आस्था की सफलता की खबर से उनके गांव कुशहा (कनौरा) में उत्सव जैसा माहौल बन गया। उनके परिवार और ग्रामीणों ने इसे क्षेत्र के लिए गौरव का क्षण बताया। उनकी सफलता यूपीएससी की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन गई है।

संदेश और प्रेरणा

आस्था सिंह ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और परिवार के सहयोग के साथ-साथ अपनी कड़ी मेहनत और अनुशासन को दिया है। उन्होंने क्षेत्र के युवाओं से अपील की कि वे बड़े लक्ष्य तय करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए पूरी लगन से प्रयास करें। आस्था सिंह की इस सफलता ने न केवल डोभी बल्कि पूरे जौनपुर जिले को गर्व महसूस कराया है। उनके इस प्रयास से यह साबित होता है कि यदि इच्छाशक्ति और दृढ़संकल्प हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर पाकुड़ न्यायालय परिसर में पीडीजे शेष नाथ सिंह की अध्यक्षता में वृक्षारोपण का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड, झारखंड- झालसा रांची के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ के तत्वाधान में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ शेष नाथ सिंह की अध्यक्षता में विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर न्यायालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित की गई। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पेड़ पौधे का होना उसके महत्व को ध्यान में रखते हुए दस पेड़ गुलमोहर, कदम, समेत कई फलदार छायादार पौधों का रोपण प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ शेष नाथ सिंह, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय सुधांशु कुमार शशि, स्थाई लोक अदालत के अध्यक्ष अशोक कुमार शुक्ला, अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम कुमार क्रांति प्रसाद, अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी संजीत कुमार चंद्रा, सचिव रूपा बंदना किरो, अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी विशाल मांझी, अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी सदिश उज्जवल बेक, न्यायालय कर्मी समेत पैरा लीगल वॉलिंटियर्स ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने को लेकर भाग लिया । सभी न्यायिक पदाधिकारी ने वृक्षारोपण करते हुए प्रत्येक नागरिक को पेड़ पौधे लगाने की अपील की। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए प्राकृति की संरक्षण करना हम सभी का जिम्मेवारी है।

जिला अधिकारी बाढ़ से प्रभावित होने वाले जनपद के लगभग 105 गांव की निगरानी के लिए अधिकारी तैनात करने के लिए आदेश

● कम्युनिकेशन प्लान तैयार करें तथा अति संवेदनशील गांव पर विशेष सतर्कता बरते।

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिला अधिकारी बाढ़ से प्रभावित होने वाले जनपद के लगभग 105 गांव की निगरानी के लिए अधिकारी तैनात करने के लिए जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया है। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनपद स्तरीय बाढ़ स्टीयरिंग ग्रुप की बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने निर्देश दिया है कि बैराज से छोड़े जाने वाले पानी के समय पर सतर्क निगाह रखें, बाढ़ प्रभावित गांव की कम्युनिकेशन प्लान तैयार करें तथा अति संवेदनशील गांव पर विशेष सतर्कता बरते। उन्होने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि समस्त आवश्यक वस्तुओ का टेण्डर का कार्य एक सप्ताह के भीतर पूर्ण कर लिया जाय। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को निर्देशित किया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में सभी सीएचसी/पीएचसी को सक्रिय रखें, मेडिकल कैंप लगाने की व्यवस्था रखें तथा प्रत्येक बाढ़ चौकी पर स्वास्थ्य कर्मी तैनात करें। इस दौरान सांप काटने पर लगने वाले इंजेक्शन तथा अन्य जीवन रक्षक दवाएं, क्लोरीन की गोलियां, ओआरएस घोल की समुचित व्यवस्था रखें। उन्होंने पशुपालन विभाग को निर्देशित किया कि समय से भूसा एवं चारे की व्यवस्था सुनिश्चित करें तथा बाढ़ के समय में लगने वाले पशुओं के टीका की आपूर्ति सुनिश्चित कराएं। साथ ही अस्थायी गोशालाओं के लिए स्थल चिन्हित कर लें।

समीक्षा में उन्होंने पाया कि जनपद की दो तहसीलें बस्ती सदर एवं हर्रैया के लगभग 105 गांव बाढ़ से प्रभावित होते हैं। जिले में कुल 16 तटबंध है, जिनके मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य बाढ़ खंड प्रथम द्वारा किया जाता है। उन्होंने दोनों उप जिलाधिकारी को निर्देशित किया है कि वह अपने-अपने क्षेत्र के तटबंधों का निरीक्षण करके रिपोर्ट दें ताकि समय से उनकी मरम्मत कराई जा सके। उन्होने यह भी निर्देश दिया है कि नाव में लाइफ जैकेट उपलब्ध हो तथा संचालन करने व्यक्ति का नाम व मोबाइल नम्बर लेकर सूची तैयार किया जाय। बाढ के समय छोटी डोगी (नाव) का संचालन ना किया जाय। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी सार्थक अग्रवाल, एडीएम प्रतिपाल सिंह चौहान, सीएमओ डा. राजीव निगम, डीडीओ अजय कुमार सिंह, पीडी राजेश कुमार, उप जिलाधिकारी मनोज प्रकाश, शत्रुध्न पाठक, रश्मि यादव, अधीक्षण अभियन्ता विद्युत मनोज कुमार, भूमि संरक्षण अधिकारी डा. राज मंगल चौधरी, डीसी मनरेगा संजय शर्मा, डीपीआरओ रतन कुमार, अधिषासी अभियन्ता बाढ खण्ड प्रथम दिनेश कुमार एवं संबंधित विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

पृथ्वी की रक्षाकरना हमारा नैतिक कर्तव्य - प्रो. ध्रुवसेन सिंह

●नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ना होगा- प्रो. वंदना सिंह

विश्व पृथ्वी दिवस 2025 के अवसर "हमारी शक्ति, हमारा ग्रह"विषयक ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,जौनपुर, उत्त रप्रदेश के अंतर्विषयक ऊर्जा एवं जल शोध संस्थान,भू एवं ग्रहीय विज्ञानविभाग एवं लोक दायित्व, आज़मगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पृथ्वी दिवस 2025 के अवसर "हमारी शक्ति, हमारा ग्रह " विषयक ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ के भू विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. ध्रुवसेन सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति प्रकृति की रक्षा का संदेश देती है. सभी ग्रहों में पृथ्वी पर ही जीवन है. इस ग्रह को मानव के क्रियाकलापों सेही सबसे बड़ा खतरा है. पृथ्वी के अलावा कोई ऐसा ग्रह नहीं है जो हमारे घर की तरह हो इसकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है. उन्होंने कहा कि हम पानी बना नहीं सकते तो निरंतर प्रदूषित करने का अधिकार नहीं है. भारत मेंनदियों को माँ का दर्जा दिया गया. इसके किनारे सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ है. उन्होंने जल, वायु और स्थल मंडल को प्रदूषण मुक्त रखने के सुझाव दिए. उन्होंने कहा किप्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ाना होगा. यह जीवाश्म ईंधन कीतुलना में एक बेहतर विकल्प है और प्रदूषण से मुक्ति दिलाएगी।

अध्यक्षी यसंबोधन में कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने कहा कि हम न केवल अपने विचारों में बदलावलाएं, बल्कि अपने कार्यों,शोध और नवाचारों मेंभी बदलाव लाएं ताकि हम पृथ्वी को एक संवेदनशील,स्वच्छ और सतत दिशामें आगे बढ़ा सकें. उन्होंने कहा कि हम एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर सकते हैं जो नकेवल आज के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित और टिकाऊ है. उन्होंनेकहा कि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर,पवन, औरजल विद्युत की ओर तेजी से बढ़ना होगा. वक्तालोक दायित्व, आजमगढ़ के संयोजक पवनकुमार सिंह ने कहा कि धरती का बुखार बढ़ रहा है. धरती को पौधों की हरी चुनरी से ढकनाहोगा और उसके माथे पर पानी की पट्टी लगानी होगी. उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरामें सूर्य की उपयोगिता की बेहतर समझ थी उसे देव कहा गया. आज सूर्य की इस ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ा कर पृथ्वी को सुरक्षित रख सकते है. इससे कोई प्रदूषण नहीं होता है. डीएएडी, प्राईम फेलो कोलोन विश्वविद्यालय, जर्मनी के डॉ. आशीष कुलकर्णी ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने वैज्ञानिक दृष्टि से प्रकृति को देखा और उसके संरक्षण के सन्देश भी दिए.उन्होंने उच्च दक्षता के सोलर सेल बनाये जाने पर व्याख्यान दिया. कहा कि आने वाले समय में सौर ऊर्जा भविष्य है. अंतर्विषयक जल एवं ऊर्जा अनुसंधान केन्द्र शोध के संयोजक प्रो. गिरिधर मिश्र ने अतिथियों का स्वागत एवं विषय प्रवर्तन किया. वेबिनारका संयोजन डॉ. शशिकांत यादव,संचालन डॉ. धीरेन्द्र चौधरी एवं धन्यवाद् ज्ञापन डॉ.दिग्विजय सिंह राठौर ने किया. इस अवसर पर प्रो. मानस पाण्डेय, प्रो. राम नारायण,प्रो. देव राज, डॉ.श्याम कन्हैया सिंह, डॉ. जान्हवी श्रीवास्तव, डॉ. पुनीत धवन, डॉ.जगदेव, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अन्नू त्यागी,डॉ. मनोज पाण्डेय, डॉ नितेश जायसवाल समेत अन्य ने प्रतिभाग किया।

दुकानों में भीषण आग लगने से लाखों का नुकसान

स्वतंत्र प्रभात

अलीगढ़। थाना बन्नादेवी क्षेत्र के सारसौल फल मंडी में अचानक तीन दुकानों में भीषण आग लग गई और उग्र रूप् धारण करते हुये आस-पास की दुकानों को भी आगोश में ले लिया आग लगने से लाखों का सामान जलकर राख हो गया। दमकल की गाड़ियों ने बमुश्किल आग पर काबू पाया। सारसौल फल मंडी में सराय सुल्तानी निवासी इरशाद की विशाल फ्रूट कंपनी के नाम से दुकान है। रात दुकान से अचानक धुंआ उठता हुआ देखा गया। फिर अचानक आग लग गई। देखते ही देख आग विकराल हो गई, पड़ोस की दो दुकानों को भी अपनी चपेट में ले लिया। इसी दौरान वहां पर दुकान पर फल और अन्य माल भी उतारा जा रहा था। आग लगने पर इकट्ठे हुए लोग सूचना पर दुकान स्वामी के अलावा थाना बन्नादेवी पुलिस व दमकल की टीम पहुंच गई। समाचार लिखे जाने तक आग पर पूरी तरह से काबू नहीं पाया जा सका था। बन्ना देवी के अग्निशमन अधिकारी संजीव कुमार ने बताया कि दुकान में शार्ट-सर्किट से आग लगना माना जा रहा है, कोई जनहानि नहीं हुई है। आग से हुए नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

शारदा नहर में दिखा महिला का शव इलाके में मचा हड़कंप, तेज़ बहाव में बहा शव

सीतापुर- जनपद सीतापुर के तालगांव थाना क्षेत्र के जीता मऊ गांव के पास शारदा सहायक नहर में एक महिला का शव तैरता हुआ मिला। स्थानीय ग्रामीणों ने शव को पानी में बहते देखा और इसका वीडियो बना लिया वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया बड़ी संख्या में लोग घटनास्थल पर जमा हो गए। वीडियो में साफ दिखाई दे रहा है कि महिला का शव नहर की तेज धारा में बह रहा है ग्रामीणों की सूचना पर तालगांव थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की तलाश की लेकिन पानी के तेज बहाव के कारण शव नहीं मिल सका शव न मिलने से यह मामला संदिग्ध प्रतीत हो रहा है। पुलिस ने आसपास के थाना क्षेत्रों को भी सूचित कर दिया है पुलिस का कहना है कि अगर शव मिलता है तो जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी!

संक्षिप्त खबरें

कानपुर में सट्टेबाजी लगवाने वाला सट्टेबाज गिरफ्तार

कानपुर। इस समय आईपीएल क्रिकेट टूर्नामेंट चल रहा है ऐसे में सट्टेबाजी बढ़ जाती है। इसी क्रम में आज थाना बजरिया कमिश्नरेट कानपुर नगर ने एक सट्टेबाज को गिरफ्तार किया है। बताया गया है कि उ0नि0 दिलीप कुमार मिश्र मय हमराह शान्ति व्यवस्था डियूटी व रोकथाम जुर्म जरायम चैकिंग व्यक्ति, वाहन अन्दर इलाका क्षेत्र मे मामूर थे कि अभियुक्त गुलफाम पुत्र महताब मुन्नापुरवा थाना बजरिया कानपुर नगर उम्र करीब 29 वर्ष सार्वजनिक स्थान खातून वाली गली मुन्नापुरवा थाना बजरिया कानपुर नगर पर सट्टा ले दे रहा था । अभियुक्त के पास से 7 अदद सट्टा पर्ची व कुल 965 रुपए बरामद हुआ एवं अभियुक्त गुलफाम को गिरफ्तार किया गया है ।

पृथ्वी दिवस पर जनपद में क्यूआर कोड फॉर फ्लोरा गतिविधि का हुआ सफल आयोजन

प्रतापगढ़। जनपद में 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस के अवसर पर जनपद प्रतापगढ़ के समस्त परिषदीय विद्यालयों में इको क्लब फॉर मिशन लाइफ कार्यक्रम के अंतर्गत 'क्यूआर कोड फॉर फ्लोरा 'गतिविधि का आयोजन किया गया। इस अभिनव गतिविधि के अंतर्गत स्कूली बच्चों ने अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यालय परिसर एवं आसपास उपलब्ध पेड़-पौधों की प्रजातियों से संबंधित जानकारी एकत्रित की। तत्पश्चात उन्होंने उस जानकारी को क्यूआर कोड में परिवर्तित कर संबंधित पौधों पर टैग किया। इस प्रक्रिया ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जैव विविधता एवं प्रदूषण नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी उनकी जागरूकता बढ़ाई। जनपद के सभी विद्यालयों में छात्रों एवं शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र सिंह ने बताया कि इस गतिविधि के जियो टैग फोटोग्राफ्स, वीडियो क्लिप्स एवं संपूर्ण विवरण भारत सरकार द्वारा विकसित पोर्टल पर अपलोड किए जा रहे हैं, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रयास की जानकारी साझा की जा सके। यह पहल न केवल बच्चों में वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करती है, बल्कि पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

युवक की मौत, हत्या का आरोप लगाकर काटा हंगामा

अलीगढ़। थाना देहलीगेट क्षेत्र में दोस्तों के साथ स्विमिंग पूल में नहाने गए युवक संदिग्ध परिस्थितियों में की मौत हो गई। परिजनों ने स्विमिंग पूल संचालक पर हत्या करने का आरोप लगाया और उस पर कार्रवाई के लिए मोहल्ला इंदिरा नगर में शव सड़क पर रखकर जाम लगा दिया। मौके पर पहुंचे एसपी सिटी ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई करने और रिपोर्ट दर्ज करने का भरोसा देकर जाम खुलवाया। रवि थाना देहलीगेट क्षेत्र के नगला महताब निवासी हरकेश के पुत्र थे ,शाम करीब चार बजे अपने दोस्तों प्रहलाद, अरुण,निखिल और लल्ला के साथ लोधा के गांव ताजपुर रसूलपुर में चले रहे स्विमिंग पूल में नहाने गए थे। दोस्तों का कहना है कि जब वह बाहर नहीं आए तो उन्हें निकाला, वह बेहोशी की हालत में थे। स्विमिंग पूल मालिक उन्हें एक निजी अस्पताल में लेकर पहुंचा, जहां चिकित्सकों ने रवि को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद स्विमिंग पूल संचालक मौके से भाग खड़ा हुआ। परिजनों का आरोप है कि रवि के साथ मारपीट की गई। लोहे की रॉड से पीटा गया, उसके हाथ तोड़ दिए, शरीर पर चोटों के निशान थे, गला भी दबाया गया। हत्या के बाद शव स्विमिंग में डाल दिया। इनका आरोप है कि किसी ने स्विमिंग ने नहाते हुए वीडियो बनाई थी, जिसे पुलिस ने डिलीट करा दिया। जाम लगाने की सूचना पर दिल्ली गेट थाना पुलिस और एसपी मयंक पाठक मौके पर पहुंच गए और लोगों को समझाकर शांत किया और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस स्विमिंग पूल में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को खंगाल रही है।

इनका कहना है...

एसपी सिटी मृगांक शेखर पाठक का कहना है कि स्विमिंग पूल संचालक के खिलाफ परिजनों ने तहरीर दी है। रिपोर्ट दर्ज करने का आश्वासन देकर जाम खुलवा दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही मौत की सही वजह स्पष्ट होगी। उसकी अनुरूप कार्रवाई की जाएगी।

राजेंद्र कुमारमाटीकला बोर्ड के सेमिनार में कुम्हारों को मिली नि:शुल्क पगमिल मशीनें, खिले चेहरे

● टूल किट्स योजना के तहत सेमिनार में प्रजापति समाज के कारीगरों को दी गईं नि:शुल्क पगमिल मशीन, बढ़ाएंगे रोजगार।

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। उत्तरप्रदेश माटीकला बोर्ड द्वारा सोमवार को बर्रा बाईपास स्थित दिव्यांशी गार्डन में एक दिवसीय मंडल स्तरीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें मंडल के विभिन्न जिलों से प्रजापति समाज के कारीगरों ने भाग लिया। इस सेमिनार में बतौर मुख्य अतिथि उ.प्र. राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य श्रीमती रंजना शुक्ला उपस्थित रहीं। वहीं उ.प्र. खादी महासंघ के अध्यक्ष सुरेश गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माटी उद्यम के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित संस्था सर्वोसार्थ की निदेशक एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की प्रांतीय संयोजक डॉ. बिंदु सिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में माटीकला कारीगरों को मिट्टी के रोजगार को बढ़ावा देने संबंधी कई बातें बताई।

और कानपुर विश्वविद्यालय से फाइनआर्ट के प्रोफेसर जेबी यादव ने कारीगरी की तकनीकी जानकारियां दीं। इस दौरान उत्तरप्रदेश माटीकला बोर्ड द्वारा टूल किट्स योजना के तहत कुम्हारों को नि:शुल्क पगमिल मशीनें वितरित की गईं। जिला/परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग अधिकारी कानपुर नगर अशोक शर्मा के निर्देशन में आयोजित किए गए इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य प्रजापति समाज के लोगों को विभागीय योजनाओं की विस्तृत जानकारी, उनको जागरूक करना और माटी उद्यम को बढ़ावा देने के लिए नई-नई तकनीकियों की जानकारियां देना था। जिसमें वक्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे। सेमिनार में रामकिशोर प्रजापति पुत्र श्रीनारायण प्रजापति लक्ष्मीपुरवा कानपुर, पवन कुमार प्रजापति पुत्र शिव कुमार लक्ष्मीपुरवा, राजेंद्र प्रजापति पुत्र देवता दीन लक्ष्मीपुरवा कानपुर, गंगा प्रसाद पुत्र मोहन लाल बारीगांव/भीतरगांव, ओमप्रकाश पुत्र शिवराज बारीगांव/भीतरगांव कानपुर और जगदीश पुत्र शिवनाथ बिरतियान, मंधना कानपुर आदि को टूल किट्स योजना के अंतर्गत नि:शुल्क पगमिल मशीनें वितरित की गईं। जिससे इन्हें मिट्टी की कारीगरी वाले रोजगार को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

आईटीआई में 24 अप्रैल को होगा कैम्पस इन्टरव्यू का आयोजन

प्रतापगढ़। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के नोडल प्रधानाचार्य आलोक कुमार ने बताया है कि भारत की सबसे बड़ी कार मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी सुजुकी मोटर गुजरात राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान प्रतापगढ़ के परिसर में 24 अप्रैल को आ रही है। उन्होने बताया है कि कैम्पस इन्टरव्यू के अन्तर्गत टर्नर, वेल्डर, फिटर, मशीनिष्ट, इलेक्ट्रीशियन, मोटर मैकेनिक व्हीकल, ट्रैक्टर मैकेनिक, पेन्टर जनरल, वायरमैन, इलेक्ट्रानिक मैकेनिक, सी0ओ0ई0 के अन्तर्गत 2017 से 2024 तक के उत्तीर्ण कर चुके प्रशिक्षार्थियों की आवश्यकता है। कम्पनी में केवल युवक उम्र सीमा 18 से 26 वर्ष, भाग लेकर रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते है। कम्पनी अप्रेंटिस के अन्तर्गत 18300 रूपये से 24550 तक प्रतिमाह भुगतान करेगी। विस्तृत जानकारी के लिये संस्थान के कैम्पस सेल सत्येन्द्र मौर्य टीपीओ एवं अशोक कुमार सहायक टीपीओ से सम्पर्क कर सकते हैं।

महिला से लूट करने वालों को आप्रेशन त्रिनेत्र के तहत पकड़ा

●गैंगस्टर एक्ट में पांच साल की सजा काट कर छूटे हैं अभियुक्त

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। दिनांक 20.04.2025 को थाना नौबस्ता क्षेत्र में रात्रि में एक महिला जो एक कार्यक्रम से वापिस लौट रही थी के पर्स छिनैती की घटना में दो अभियुक्तों को आज गिरफ्तार किया गया है एवं एक और अभियुक्त की तलाश जारी है। आप्रेशन त्रिनेत्र के द्वारा लगाए गए कैमरों से अभियुक्तों की पहचान हुई है। इसकी जानकारी देते हुए डीसीपी साउथ दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि अभियुक्तों के पास से एक बाइक व महिला के पर्स को थाना नौबस्ता पुलिस ऑपरेशन त्रिनेत्र के तहत लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से बरामद किया गया है। प्रकरण में प्रयोग की जा रही बाइक को 20 तारीख को थाना गंगाघाट(उन्नाव जनपद) से तीन अभियुक्त विनय,आशीष व सुशील द्वारा चोरी किया गया था। आशीष व विनय दोनों सगे भाई है ये दोनों पहले भी लूट की घटनाओं में सक्रिय थे। एवं थाना किदवई नगर से गैंगस्टर व अन्य घटनाओं में 2017 में जेल जा चुके है। ये पांच वर्ष की सजा काटकर जेल में से छूट कर आए हैं और इन्होंने फिर वही लूट का गोरखधंधा चालू कर दिया है।

शार्ट सर्किट से कचेहरी में लगी आग पर दमकल ने पाया काबू

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। कानपुर कचहरी परिसर में आज वकीलों के चेंबर के पीछे पड़े कूड़े में शार्ट सर्किट की वजह से आग लग गई। तेज हवाओं से आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। कुछ ही देर में तेज लपटों के साथ धुआ उठने लगा, जिससे कचहरी में अफरा तफरी मच गई। सूचना पर मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने करीब एक घंटे में आग पर काबू पाया। कचहरी परिसर में मस्जिद के पीछे स्थित कंपाउंड के पीछे कूड़े का ढेर पड़ा हुआ है। मस्जिद के पास जर्जर बिजली के तार है, जिनमें आज दोपहर करीब 2 बजे शार्ट सर्किट हुआ। शार्ट सर्किट से कूड़े के ढ़ेर में आग लग गई, कुछ ही देर में खाली पड़े कंपाउंड से ऊंची-ऊंची लपटे उठने लगी। जिससे वकीलों में हड़कंप मच गया। वकीलों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन आग बढ़ती गई। जिसके बाद लोगों ने फायर ब्रिगेड को घटना की जानकारी दी। सीएफओ दीपक शर्मा ने बताया कि कंट्रोल रूम की सूचना पर फायर ब्रिगेड की 2 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया था, आग पर काबू पा लिया गया है।

पुलिस भर्ती की व्यवस्थाओं का किया निरीक्षण

अलीगढ़। एसएसपी संजीव सुमन द्वारा रिजर्व पुलिस लाईन स्थित पुलिस अस्पताल में उत्तर प्रदेश पुलिस आरक्षी सीधी भर्ती-2023 में अभ्यार्थियो के "अभिलेखों की संमीक्षा तथा शारीरिक मानक परीक्षण " प्रक्रिया का निरीक्षण किया गया । प्रक्रिया मे लगे अधिकारियो व कर्मचारियों से वार्ता किया गया व सुचिता को बनाये रखने हेतु निर्देशित किया गया । रिजर्व पुलिस लाइन में बनाये गये स्थल का निरीक्षण किया तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। इस दौरान महोदय द्वारा अभ्यार्थियों की सुविधा हेतु बनायें गये हर एक काउन्टर को चेक किया गया और साथ ही शारीरिक मानक परीक्षण हेतु उपकरणों को दुरुस्त रखने, अभ्यार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा न हों, यह सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया ।

बिहार चुनाव से पूर्व एनडीए बिखर जायेगा - रागिनी नायक

●जब भी भाजपा डरती है ईडी, सीबीआई को आगे बढ़ाती है।

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। कांग्रेस पार्टी की वरिष्ठ नेता, राष्ट्रीय प्रवक्ता रागिनी नायक ने कानपुर में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा है कि एनडीए बिहार चुनाव पहले ही बिखरने की कगार पर है। नितीश कुमार की नेतृत्व क्षमता पर सवाल उठाए जा रहे हैं और पशुपति पारस एनडीए छोड़ रहे हैं। नेशनल हेराल्ड केस में राहुल गांधी और सोनिया गांधी पर चार्जशीट दाखिल होने के बाद भजापा पर वार करते हुए कांग्रेस प्रवक्ता रागिनी नायक ने आज कानपुर में कहा कि दोनों मोटा भाई जिन्होंने देश में भाईचारा को खत्म करने का बीड़ा उठा लिया है। दोनों विचलित हो रहे हैं क्योंकि कांग्रेस पार्टी ने सत्य, संकल्प, और समर्पण से गुजरात में संगठनात्मक विस्तार की कार्यवाही शुरू कर दी है। रागिनी ने कहा कि आपने देखा होगा अहमदाबाद में बहुत ही सार्थक, सकारात्मक बैठक कांग्रेस पार्टी की हुई जिसके बाद सरदार पटेल और महात्मा गांधी के असली विचारों का संचार किया गया।

रागिनी नायक ने कहा कि न सिर्फ गुजरात बल्कि पूरे देश में कांग्रेस जनों में जनता में जुनून और जोश का संचार हुआ है और इसीलिए इन दोनों का विचलित होना लाजिमी है। और नेशनल हैराल्ड केस इनकी हताशा का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि बिहार में चुनाव के लिए एक तरफ राहुल गांधी,खड़गे, लालू प्रसाद यादव, तेजस्वी यादव मीटिंग कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ एनडीए में हलचल मची है। नितीश कुमार की नेतृत्व क्षमता पर सवाल खड़े किए गए हैं। उन्होंने कहा कि जब भी मोदी और शाह परेशान होते हैं तब तब ईडी और सीबीआई को आगे करते हैं। भारतीय जनता पार्टी पर प्रहार करते हुए कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि नवजीवन, नेशनल हेराल्ड और कौमी आवाज अखबार स्वतंत्रता आंदोलन के मुख्य पत्र बन गए थे और अंग्रेज इनसे चिढ़ने लगे थे और आज उनके वंशज उनसे चिढ़ रहे हैं।

आम उत्पादक कृषक एक दिवसीय प्रशिक्षण हेतु 25 अप्रैल तक उद्यान विभाग में करें आवदेन

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने बताया है कि उ0प्र0 राज्य औद्यानिक सहकारी विपणन संघ (हाफेड) लखनऊ द्वारा प्रदेश से आम के विपणन/निर्यात को प्रोत्साहित करने हेतु एपीड़ा नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से निर्यात योग्य आम की उपलब्धता हेतु आम की तुड़ाई पूर्व एवं उपरान्त प्रबन्धन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन निरन्तर कराया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रगतिशील,जागरूक आम उत्पादकों को आम के उत्पादन से लेकर विपणन व निर्यात तक अपनायी जाने वाली विविध नवीनतम तकनीकी व सामयिक जानकारी उपलब्ध करायी जाती है। इसके साथ-साथ हाफेड द्वारा राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद उ0प्र0 के वित्तीय सहयोग से आम के विपणन व निर्यात के प्रोत्साहन हेतु प्रदेश से बाहर अन्य प्रदेशों यथा मुम्बई, पूणे, हैदराबाद, बंगलुरू, कोलकाता आदि प्रदेशों में आम बायर-सेलर मीट कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है जिसमें जनपद के प्रगतिशील आम उत्पादकों को उनके उत्पाद के साथ सीधे निर्यातकों व ट्रेडर्स से समन्वय का अवसर प्राप्त होगा तथा उत्पादकों को विपणन व निर्यात में वृद्धि होगी।जिला उद्यान अधिकारी ने जनपद के इच्छुक प्रगतिशील जागरूक उत्पादकों कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी कटरा रोड प्रतापगढ़ में आम उत्पादन से सम्बन्धित पूर्ण विवरण 25 अप्रैल तक अपना आवेदन उपलब्ध करा दें जिससे एक दिवसीय प्रशिक्षण हेतु सम्बन्धित को सूचित किया जा सके।

प्रधानमंत्री कल कानपुर को देंगे कई सौगातें, सभी तैयारियां पूरी

भूमिगत मेट्रो, दो पावार प्लांट, सौ बैड के अस्पताल सहित कई सौगातें

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। पीएम नरेंद्र मोदी 24 अप्रैल को सीएसए ग्राउंड पर प्रस्तावित जनसभा को आठ फुट ऊंचे मंच से मेट्रो, पनकी और नेवयली पावर प्लांट, सौ बेड का अस्पताल सहित कई सौगातें देंगे। जनसभा का मंच आठ फुट ऊंचा, 64 फुट लंबा तो 32 फुट चौड़ा होगा। भारतीय जनता पार्टी द्वारा इस दिन को उत्सव जैसा माहौल बनाने की तैयारी की जा रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने भगवा रंगों, भाजपा के झंडों एवं स्वागत होर्डिंग्स से इस तरह शहर की गलियां सजाने के निर्देश दिए हैं। कहा कि लगना चाहिए कि समूचा शहर एक उत्सव मना रहा है। श्रेणीबद्ध ब्लॉकों का निर्माण किया जाएगा, जिसमें आवंटित श्रेणी के अनुसार बैठने की सुव्यवस्थित व्यवस्था की जाएगी। संत-महात्माओं एवं बटुकों को अग्रिम ब्लॉकों में विशेष स्थान दिया जाएगा। सभी को दिया जाएगा लंच पैकेट और पानी जनसभा में 40 हजार से अधिक के आने की उम्मीद है। सभी को लंच पैकेट और पानी की बोतल दी जाएगी। पहली बार पानी की बोतल का इंतजाम किया गया है। वहीं, पार्किंग स्थल से लेकर जनसभा स्थल तक भी पर्याप्त मात्रा में पानी और गुड़ का इंतजाम करने का निर्देश दिया गया है। वहीं, जनसभा में 800 से अधिक बस और 1000 से अधिक कार के आने की संभावना है। जिसको लेकर सीएसए में दो स्थानों पर पार्किंग बनाने की तैयारी है। जहां 800 बस और 1000 कार खड़ा करने का इंतजाम होगा। सवा दो घंटे कानपुर में रुकेंगे पीएम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 24 अप्रैल को सवा दो घंटे शहर में रहेंगे। वह चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के खेल मैदान में विशाल जनसभा करेंगे। पीएम मोदी के दौरे को देखते हुए तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। खेल मैदान में जनसभा के लिए बन रहा विशाल पंडाल तैयार हो गया है। पंडाल में 30 ब्लॉक बनाए गए हैं, जिसमें कुर्सियां लगाने का काम चल रहा है। वहीं, सोमवार को एसपीजी के निरीक्षण के बाद मंच बनाने की तैयारी भी शुरू हो गई है। सीएसए कैंपस में पांच हेलीपैड बनाए जा रहे हैं। जिसमें तीन पुराने हेलीपैड की मरम्मत का काम चल रहा है तो दो नए हेलीपैड तैयार किए जा रहे हैं। पीएम मोदी 24 अप्रैल को अपराह्न सवा तीन बजे से सवा चार बजे के बीच जनसभा करेंगे। जनसभा स्थल के ठीक सामने विवि के दूसरे खेल मैदान में पहली बार दो नए हेलीपैड तैयार किए जा रहे हैं। अधिकारियों के मुताबिक इन्हीं हेलीपैड पर प्रधानमंत्री का हेलीकॉप्टर उतरेगा। दूसरे हेलीपैड पर राज्यपाल व मुख्यमंत्री का हेलीकॉप्टर उतर सकता है।

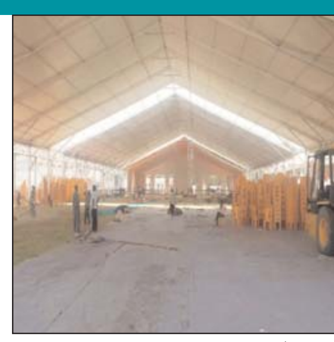

सभी पार्षद सुबह 7 से 9 स्वच्छता अभियान चलाएं - भूपेंद्र चौधरी

●आज मोतीझील स्थित प्रमिला सभागार में भारतीय जनता पार्टी के पार्षदों की हुई महत्वपूर्ण बैठक

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। मोतीझील स्थित प्रमिला सभागार में आज एक आवश्यक बैठक आयोजित की गई। उत्तर प्रदेश भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह, कानपुर-बुन्देलखण्ड क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल व महापौर प्रमिला पांडेय की भूमिका इस बैठक में अहम रही। बैठक में आगामी 24 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के आगमन पर विस्तृत चर्चा हुई। चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित जनसभा में भारतीय जनता पार्टी के कार्यों को जनता तक पहुँचाते हुए अधिक से अधिक संख्या में जनता को सभा तक लाने की अपील की गई। इसके साथ ही भूपेंद्र चौधरी ने सभी पार्षदों से सुबह 7 बजे से 9 बजे के बीच में स्वच्छता का अभियान चलाने को कहा। इस अभियान के तहत सभी पार्षद अपने वार्ड में स्वतंत्रता सेनानियों की मूर्तियों की साफ सफाई करेंगे और सभी लोगों को चावल देकर रैली स्थल पर पहुंचने की अपील करेंगे। इसके साथ ही महापौर प्रमिला पांडे क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल कार्यकर्ताओं के साथ मंगलवार सुबह साढ़े सात बजे कंपनी बाग चौराहे पर मूर्तियों की साफ सफाई और चौराहे साफ सफाई करके स्वच्छता का पैगाम देंगे। महापौर प्रमिला पांडेय के नेतृत्व में भाजपा के समस्त कार्यकर्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विशाल जनसभा को सफल बनाने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

पश्चिम बंगाल के हालात पर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने की बैठक

●हिन्दू समाज पर उत्पीड़न और अत्याचार किसी भी कीमत पर नहीं होगा बर्दाश्त। कुं मनोज भदौरिया

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं पर अत्याचार के खिलाफ अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के सदस्यों का आक्रोश फूट पड़ा। महासभा के सदस्यों ने संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कुं मनोज भदौरिया के नेतृत्व में बैठक की। प्रदेश अध्यक्ष कुं मनोज भदौरिया ने कहा पश्चिम बंगाल में कानून-व्यवस्था की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। लगातार आपराधिक घटनाओं में वृद्धि हो रही है। श्री भदौरिया ने कहा कि हिन्दू समाज का उत्पीड़न और अत्याचार किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार वोट बैंक और तुष्टीकरण की राजनीति कर रही है, इससे समाज का भला होने वाला नहीं है।

पश्चिम बंगाल में जानबूझकर हिन्दू समाज को निशाना बनाया जा रहा है तथा पश्चिम बंगाल में अराजकता की स्थिति है। लूटपाट, आगजनी और हत्या की घटनाएं आए दिन हो रही हैं। वही प्रदेश संगठन मंत्री पंकज राजावत ने कहा कि ममता बनर्जी की सरकार हर मोर्चे पर विफल साबित हो रही है, इसलिए उन्हें सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है। तानाशाह और निरंकुश सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लगाया जाना चाहिए। मंडल अध्यक्ष महेन्द्र तोमर ने आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल सरकार पूरी तरह से विफल हो चुकी है और दंगाइयों को संरक्षण दे रही है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों को खुली छूट दी जा रही है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। इस मौके काफी संख्या में संगठन पदाधिकारी मौजूद रहे।

एक गैंग के सात अभियुक्तों पर गैंगस्टर का मुकदमा दर्ज

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। थाना संग्रामगढ़ प्रभारी निरीक्षक सत्येन्द्र सिंह भदौरिया के नेतृत्व में मंगलवार को सक्रिय एक आपराधिक संगठित गिरोह के गैगलीडर बब्लू उर्फ शेरा पुत्र इकबाल उम्र 28 वर्ष निवासी ममरखापुर थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़,फिरोज पुत्र बबलू हत्था उम्र 23 वर्ष निवासी मिरगढ़वा थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़, तबरेज पुत्र बल्लू उम्र 20 वर्ष निवासी पूरेअली नक्कीपुर थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़,लल्लू पुत्र बल्लू उम्र 37 वर्ष निवासी पूरेअली नक्कीपुर थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़,बिलाल अहमद पुत्र अफताब अहमद उम्र 34 वर्ष निवासी ग्राम अलीगंज थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ, समीर अहमद पुत्र सिराज अहमद उम्र करीब 19 वर्ष निवासी ग्राम पूरेअली नक्कीपुर थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़,प्रियांशू मिश्रा पुत्र स्व0 कृपाशंकर मिश्रा उम्र 26 वर्ष निवासी देवापुर थाना लालगंज जनपद प्रतापगढ के विरूद्ध थाना संग्रामगढ़ में मु0अ0सं0 66/2025 धारा 2/3 उ0प्र0 गिरोबन्द समाज विरोधी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1986 का अभियोग दर्ज किया गया है।अभियुक्त अपने गिरोह के सदस्यों के साथ मिलकर संगठित तरीके से चोरी, नकबजनी करने के अपराधों को कारित किया है । जिसमें 02 अभियुक्त पूर्व से जेल में निरुद्ध है।गैगलीडर बब्लू उर्फ शेरा पुत्र इकबाल व सदस्यों द्वारा थाना मानिकपुर क्षेत्रान्तर्गत ग्राम पूरेबेचूराम पनिगो में वादी के घर का ताला तोड़कर जेवरात, पैसा व सामान चोरी कर लेने के प्रकरण में थाना मानिकपुर पर मु0अ0सं0 134/24 धारा 305(a) बीएनएस थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ पंजीकृत किया गया एवं इस गिरोह के गैगलीडर बब्लू उर्फ शेरा पुत्र इकबाल उपरोक्त व गैंग के सदस्यों के विरुद्ध जनपद के भिन्न - भिन्न थानों में चोरी, नकबजनी, आर्म्स एक्ट जैसे मुकदमों में अभियोग दर्ज है।

डिजिटल मर्डर व फर्जी क्राइम ब्रांच बनकर ब्लैकमेलिंग करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। थाना फतनपुर पुलिस द्वारा एक अभियुक्त को जनपद कानपुर नगर के थाना सचेण्डी क्षेत्रान्तर्गत कैंधा गज्जा पुरवा मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया है।ब्लैकमेलिंग गैंग का पर्दाफाश कर पुलिस ने पूर्व में 05 अभियुक्तों को भी गिरफ्तार किया गया था।प्रतापगढ़ पुलिस ने साइबर अपराधियों के एक ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया था,जो खुद को क्राइम ब्रांच का अधिकारी बताकर लोगों को झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकी देकर वसूली करता था। इस गिरोह के शिकार हुए ज्ञानदास नामक युवक ने मानसिक प्रताड़ना से तंग आकर आत्महत्या कर ली, जिसे पुलिस ने %डिजिटल मर्डर% करार दिया है। मामले की जानकारी होने पर पुलिस अधीक्षक डा.अनिल कुमार ने अपनी स्पेशल टीमों को लगाकर राज का पर्दाफाश किया था और अभियुक्तों को धर दबोचा था। मंगलवार को अन्य 01 अभियुक्त को जनपद कानपुर नगर के थाना सचेण्डी क्षेत्रान्तर्गत कैंधा गज्जा पुरवा मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया है।मृतक ज्ञानदास के भाई प्रेमदास ने पुलिस को दी गई शिकायत में बताया कि अज्ञात लोगों ने उनके भाई को डिजिटल माध्यम से फंसाकर पैसे ऐंठे। बैंक खातों और कॉल डिटेल्स की जांच में सामने आया कि ज्ञानदास ने बार-बार अलग-अलग लोगों को ऑनलाइन भुगतान किया था। ब्लैकमेलरों ने उसे लगातार कॉल कर धमकाया, झूठे मुकदमों और जेल भेजने का डर दिखाकर अवैध वसूली की।जब ज्ञानदास के पास पैसे खत्म हो गए, तो उसने अपने घर के गहने तक गिरवी रख दिए और उधारी लेकर भी आरोपियों के खाते में पैसे ट्रांसफर किए।मानसिक तनाव और आर्थिक शोषण से तंग आकर उसने 30 जनवरी को आत्महत्या कर ली । इस संबंध में थाना फतनपुर में मु0अ0सं0 28/2025 धारा 61 (2)/108/308(5)/318(4)/338/336(3) / 340 (2) बीएन एस व 66डी आईटी एक्ट दर्ज किया गया था।उक्त अभियोग से संबंधित एक अभियुक्त राहुल उर्फ नन्हा पुत्र अछैबर सिंह निवासी बन्दी पुरवा थाना सचेण्डी जनपद कानपुर नगर को जनपद कानपुर नगर के थाना सचेण्डी क्षेत्रान्तर्गत कैंधा गज्जा पुरवा मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया है।

संक्षिप्त खबरें

धरती दिवस के अवसर पर नवचेतना एफपीओ द्वारा 11 पीपल के वृक्ष लगाए गये

सीखड़, विकास खण्ड अन्तर्गत सीखड़ ग्राम पंचायत में स्थित नवचेतना एग्रो सेंटर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड ने धरती दिवस के शुभ अवसर पर एक सराहनीय पहल करते हुए अपने केंद्र परिसर में 11 पीपल के वृक्षों का रोपण किया। ये सभी वृक्ष सड़क चौड़ीकरण कार्यों के दौरान उखड़ने से बचाए गए थे, जिन्हें अब हमारे केंद्र में सुरक्षित रूप से पुनर्स्थापित किया गया है। नवचेतना इस मॉडल को और भी विस्तार देने के लिए उत्साहित है और इसे अपने कार्यक्षेत्र के अन्य गांवों में भी लागू करने की दिशा में कार्य कर रही है। नव? चेतना एफपीओ के सीईओ मुकेश कुमार पांडेय सौरभ ने बताया कि अपने सभी शेयर धारकों, निदेशकों, किसान भाईयो के साथ गांव वासियों को यह संदेश देना चाहते हैं कि वृक्षारोपण न केवल धरती के जीवन को बचाने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह हमारे पूरे पारिस्थिति तंत्र की रक्षा के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। और उन्होंने ने क्षेत्रीय किसान भाई जनता जनार्दन लोगों से आग्रह किया कि इस प्रयास में सहभागी बनें और अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर पृथ्वी को जीवनदायिनी बनाए रखने में अपना योगदान दे। उक्त अवसर पर चन्दमौली पांडेय,रिक्कू पांडेय,अमन मिश्रा सहित नवचेतना के कर्मचारी किसान भाई उपस्थित रहे।

समस्तीपुर में दो बाइक के बीच आमने-सामने हुई भीषण टक्कर, तीन युवकों की मौके पर दर्दनाक मौत

समस्तीपुर में मंगलवार को भीषण सड़क हादसा हो गया। इस हादसे में 3 युवकों की मौत हो गई। घटना अंगारघाट थाना क्षेत्र में समस्तीपुर- रोसड़ा मुख्य पथ पर तुफान चौक के पास की है, जहां दो बाईक में आमने सामने से टक्कर हो गयी। मृतकों की पहचान अंगार घाट थाना क्षेत्र के ढ़िया असाधार राजेश्वर चौक निवासी दिनेश पासवान का बेटा श्रवण पासवान, बेगूसराय खोदावंदपुर थाना के मालपुर गांव निवासी उमेश पासवान का बेटा नीरज कुमार (18) और विभूतिपुर थाना के सुरौली शाहपुर गांव निवासी नीतीश कुमार (16) के रूप में की गई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि दोपहर में गांव के श्रवण कुमार पल्सर से अंगार घाट की ओर जा रहा था। इसी दौरान अंगार घाट की ओर से आ रहे तेज रफ्तार दूसरे बाइक से उनकी सीधी टक्कर हो गई. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों बाइक के परखच्चे उड़ गए। इस हादसे में बाइक पर सवार तीनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। दूसरे बाइक पर नीरज कुमार और नीतीश कुमार सवार थे। जिसके बाद लोगों ने डायल -112 की पुलिस की मदद से समस्तीपुर अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने सभी मृतकों के परिजनों को घटना की जानकारी दे दी है। बताया गया है कि मृतक नीरज और नीतीश के परिजन अभी तक सदर अस्पताल नहीं पहुंचे हैं। इस घटना के संबंध में अंगारघाट थानाध्यक्ष दिव्यज्योति कुमारी ने बताया कि, उन्हें करीब 05:30 बजे में सुचना मिली कि थाना क्षेत्र के तुफान चौक पर दो बाईक सवार युवकों के बीच टक्कर हो गयी है। जिसमें बाईक सवार तीनों युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया है। सुचना मिलने के बाद उन्होंने थाना के वाहन से ही ईलाज के लिए सभी को सदर अस्पताल समस्तीपुर भेजा गया। जहां डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया है। सभी मृतक के घरवालों को सुचना दे दी गयी है तथा शव का पंचनामा तैयार कर पोस्टमार्टम की प्रक्रिया की जा रही है।

शिक्षक संकुल बैठक में ए.आर.पी. को किया गया सम्मानित

हरदोई बावन विकास खंड की न्याय पंचायत बेहटा गोकुल के प्राथमिक विद्यालय पलिया में मासिक संकुल बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्य अतिथि डी.सी. प्रशिक्षण दिलीप शुक्ला एवं एस.आर.जी. आशीष मिश्रा रहे। संकुल बैठक का आरम्भ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में अधिकाधिक नामांकन, जेंडर गैप, स्कूल रेडिनेस कार्यक्रम, शिक्षक संदर्शिका आधारित शिक्षण, निपुण लक्ष्य ऐप एवं दीक्षा ऐप पर विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किए जा रहे सराहनीय प्रयासों एवं विद्यालय को निपुण लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बधाई दी गई। कार्यक्रम का संचालन नोडल न्याय पंचायत संकुल प्रभारी उदय मिश्रा द्वारा किया गया। विद्यालय की इंचार्ज प्रधानाध्यापक रश्मी शुक्ला द्वारा मुख्य अतिथि एस.आर.जी. एवं समस्त ए.आर.पी. को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। बैठक में विद्यालय के समस्त शिक्षक, शिक्षामित्र एवं अन्य विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कलेक्टर ने जिले के दूर-दराज क्षेत्रों से आए लोगों की सुनी समस्याएं

● कलेक्टर कार्यालय में आयोजित हुई जनसुनवाई

स्वतंत्र प्रभात

शहडोल कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने आज कलेक्टर कार्यालय के सोन सभागार में आयोजित साप्ताहिक जनसुनवाई में शहडोल जिले के दूर-दराज क्षेत्रों से आए लोगों की समस्याएं व शिकायतें सुनी तथा निराकरण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। जनसुनवाई में सोहागपुर जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत पिपरिया के सरपंच, उपसरपंच सहित अन्य लोगों ने कलेक्टर को आवेदन देकर बताया कि उनके ग्राम पंचायत पिपरिया के वार्ड क्रमांक 12,13, 14, एवं 15 में लगभग 100 से अधिक घर की बस्ती है। जिसमें बिजली सप्लाई हेतु केवल एक ट्रान्सफर्मर लगा हुआ है एवं सभी घरों में बिजली का कनेक्शन एक ही ट्रांसफर्मर से दिया गया। उन्होंने बताया कि एक ट्रांसफार्मर से उनकी बस्ती के सभी घरों के लिए पर्याप्त मात्रा में बिजली की सप्लाई नहीं कर पा रहा हैं जिस कारण से काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। उनका कहना था कि उनकी बस्ती में एक और ट्रांसफार्मर लगा दिया जाए। जिस पर कलेक्टर ने विद्युत विभाग के अधिकारी की ओर आवेदन प्रेषित कर उचित कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

जनसुनवाई में राहुल प्रजापति, आकाश वर्मन, शनि चौधरी एवं सत्यम वर्मन ने संयुक्त रूप से कलेक्टर को आवेदन हेते हुए बताया कि वे लगभग 18 महीने से जिला जेल के सामने अलग-अलग प्रकार के फूड स्टॉल लगाते आ रहे हैं एवं उनकी आय का एक मात्र साधन फूड स्टॉल ही है, जिससे उनके परिवार का पालन पोषण हो रहा है। उन्होंने बताया कि 09 अप्रैल 2025 को नगरपलिका द्वारा फूड स्टॉल हटाने का निर्देश दिया गया था। जिसके बाद अभी तक हमारा फूड स्टॉल नहीं लगा है। जिस कारण से हमारी आय का साधन ही समाप्त हो गया है एवं परिवार का पालन पोषण करने में काफी समस्याओं का समना करना पड़ रहा है। उनका कहना था कि उन्हें पुनः स्टाल लगाने की अनुमति प्रदान की जाए। जिस पर कलेक्टर ने नगरपालिका अधिकारी की ओर आवेदन प्रेषित कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार कलेक्टर ने जन सुनवाई में अन्य आवेदनों की भी सुनवाई की तथा संबंधित अधिकारियों की ओर आवेदन प्रेषित कर निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई में अपर कलेक्टर श्री सरोधन सिंह, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री अरविंद शाह, डिप्टी कलेक्टर श्री भागीरथी लहरे सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थें।

एम्बुलेंस को सूचना मिलते ही तत्काल मौके पर पहुंची जिससे दोनों बहनों पहुंचाया अस्पताल जहां चल रहा है इलाज

गोंडा। आम जनमानस के लिए वरदान साबित हो रहीं हैं 102/108 एंबुलेंस सेवा रिंकी और पिंकी दो बहनें जो की बेइलिया गाँव की रहने वाली हैं 22/04/2025को सुबह मोटर साइकिल से रुद्रापुर मन्दिर दर्शन करने गई थी द्य मंदिर से वापस आते समय मनकापुर टिकरी मार्ग पर नवाबगंज से तेज रफ़्तार से आ रही पिकअप ने टक्कर मार दी जिससे दोनों बहनों को गंभीर चोटें आई। स्थानीय लोगो ने 108 टोल फ्री नंबर पर काल किया मौके पर पहुची 108 एंबुलेंस यूपी 32ईजी 5085 में उपस्थित इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन माधवानंद ने मरीज की स्थिति को देखते हुए प्राथमिक उपचार करते हुए उन्हे सामुदाइक स्वास्थ्य केंद्र मनकापुर लेकर पहुंचे तो वहां के डाक्टरों ने मरीज की स्थिति को गंभीर देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जिसपर एम्बुलेंस टेक्नीशियन ने तत्परता दिखाते हुए ई आर सी पी की सहायता लेकर मरीज का उपचार करते हुए जिला अस्पताल में भर्ती कराया।

ग्राम पंचायत की खुली बैठक में मारपीट केस दर्ज

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। लोटन कोतवाली क्षेत्र के हरिवंशपुर चौकी अन्तर्गत ग्राम पंचायत ठेठरी के पंचायत भवन पर परिवार रजिस्टर भाग एक से नाम निकालने को लेकर उच्च अधिकारियों के निर्देश पर मंगलवार को हुए खुली बैठक में दो पक्षों में जमकर हुए मारपीट में चार लोग घायल हो गये। विवाद होने के बाद एडीओ पंचायत सदानंद वर्मा, सचिव आशीष कुमार ने बैठक रद्द कर दिया। सूचना पर पुलिस ने दोनों पक्षों से दो लोगों को पकड़ कर कार्रवाई में जुटी हुई है। मिली जानकारी के अनुसार एस एस बी द्वारा चौकी बनाने के 486 एअर जमीन एक्वायर कर लिया। जिसमें एक पक्ष का आरोप है कि लगभग दो करोड़ बीस लाख मिला रुपया मुआवजा मिला। मुआवजा का रुपया अकेले हड़प लिया गया। जबकि उक्त रुपए में दूसरे पक्ष के लोगों का हिस्सा हैं। जिसमें आपस में पैसे को लेकर विवाद चल रहा था। एक पक्ष चाह रहा था कि पैसा हिस्सा न देना पड़े इस लिए दूसरे पक्ष के लोगों का नाम परिवार रजिस्टर भाग एक से नाम कटाने के लिए उच्च अधिकारियों को प्रार्थना पत्र दिया।जिस पर अधिकारियों ने खुली बैठक कर सही जानकारी करने के बाद ही नाम हटाने का निर्देश जारी किया।उसी आदेश के तहत बीडीओ के निर्देश पर 22 अप्रैल को खुली बैठक एडीओ पंचायत व सचिव ने पंचायत भवन में शुरु किया व दोनों पक्षों से अपनी अपनी कागज़ात दिखाने के लिए कहा गया। इतने में दोनों पक्षों में कहा सुनी होने लगी देखते-देखते दोनों पक्ष आपस में भिड़ गये और जमकर मारपीट होने लगा ।जिसमें दोनों पक्षों को मिला कर चार लोग घायल हो गये। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौके से रमजान व समीर को पकड़ कर कानूनी कार्यवाही में जुटी हुई है। उधर विवाद के बाद अग्रिम आदेश तक बैठक स्थगित कर दिया गया। इस मामले में प्रभारी निरीक्षक दिनेश कुमार सरोज का कहना है कि दो लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

पत्रकार जन कल्याण एसोसिएशन ने एसडीएम को सौंपा गया ज्ञापन

पत्रकार पर एफआइआर से पत्रकारों में आक्रोश

लालगंज (रायबरेली)। थाना सरेनी क्षेत्र में हुई एक आत्महत्या की घटना में पत्रकार को आरोपी बनाए जाने से पत्रकारों में भारी आक्रोश है। पत्रकार जन कल्याण एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने मंगलवार को उपजिलाधिकारी मिथिलेश त्रिपाठी को ज्ञापन सौंपा और मामले की निष्पक्ष जांच कर पत्रकार का नाम एफआईआर से हटाने की मांग की। सरेनी कस्बा निवासी धुनारी प्रजापति उर्फ राजेश ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। मृतक की पत्नी श्यामा देवी ने राजनीतिक दबाव में आकर पत्रकार आदित्य मिश्रा समेत अन्य लोगों पर हत्या का आरोप लगाते हुए सरेनी थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। पत्रकार संगठनों का कहना है कि पत्रकारों को बिना ठोस साक्ष्यों के मुकदमे में शामिल करना न केवल लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पर हमला है, बल्कि यह स्वतंत्र पत्रकारिता को भी बाधित करता है। एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष राममिलन शर्मा ने ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि पत्रकारों को इस तरह फर्जी मुकदमों में फंसाया जाना निंदनीय है। एसडीएम मिथिलेश त्रिपाठी ने आश्वासन दिया कि मामले की निष्पक्ष जांच की जाएगी और किसी भी पक्ष के साथ अन्याय नहीं होगा। इस दौरान मनीष प्रजापति, रवि शंकर, उमेश प्रजापति, जितेंद्र सविता, संजय सोनकर, पंकज साहू सहित अन्य पत्रकार मौजूद रहे।

सीएसपी लूट मामले में 3 जिलों में छापेमारी, पुलिस ने एक संदिग्ध को हिरासत में लिया

स्वतंत्र प्रभात

समस्तीपुर के मोहिउद्दीन नगर में सीएसपी संचालक से हुई लूट मामले में पुलिस ने एसपी के निर्देश पर जांच तेज कर दी है। पटोरी डीएसपी बीके मेधाबी के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने समस्तीपुर के अलावा बेगूसराय, बाढ़ और बख्तियारपुर में भी छापेमारी की है। इस दौरान पुलिस ने पूछताछ के लिए एक संदिग्ध को हिरासत में लिया है। बता दें कि सोमवार को हथियारबंद 6 अपराधियों ने कल्याणपुर बस्ती हाई स्कुल के समीप मदुदाबाद में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सीएसपी संचालक से दिनदहाड़े दो लाख 13 हजार की लूट की थी। पहचान छिपाने के लिए सभी ने गमछा से चेहरे को कवर कर रखा था। वहीं इस लूटकांड का एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है।

सीएसपी संचालक राजा प्रीतम कुमार के अनुसार दिन के ठीक 12 बजे बदमाश सीएसपी सेंटर में घुसे और घुसते ही ग्राहकों को गोली मार देने की धमकी देकर बाहर निकाल दिया। इस दौरान बदमाशों ने कैश काउंटर का शीशा भी तोड़ दिया और काउंटर में रखे दो लाख रुपये और बाहर पड़े दो लाख 13 हजार रुपये लूट लिए। विरोध करने पर एक महिला कर्मी और संचालक के छोटे भाई सौरभ कुमार को चाकू मारकर जख्मी कर दिया। घटना के बाद एसपी अशोक मिश्रा ने खुद घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की तहकीकात की। इस दौरान उन्होंने सीएसपी में मौजूद ग्राहकों और पीड़ित से अपराधियों की बोलचाल की भाषा और हुलिया के बारे में जानकारी ली। पुलिस का मानना है कि इस घटना के पीछे जिले से बाहरी गैंग का हाथ है।

बाल मजदूरी कराने वाले को 2 साल तक जेल की सजा का प्रावधान

● बाल श्रम से संबंधित शिकायत पुलिस 100, चाइल्ड लाइन 1098 पर

जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात

शहडोल अपर कलेक्टर श्री सरोधन सिंह की उपस्थिति में सोमवार को कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में बाल और किशोर श्रम प्रतिषेद एवं विनियमन संशोधित अधिनियम 2016 के तहत जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक में आयोजित की गई। अपर कलेक्टर ने कहा कि 14 साल से कम उम्र का बच्चा मजदुर के रूप में काम नहीं कर सकता, बाल मजदूरी करवाने वाले व्यक्ति को 2 साल तक जेल की सजा हो सकती है, बाल मजदूरी करने वाले को 20 हजार रूपये से लेकर 50 हजार रूपये तक का जुर्माना भी हो सकता है। उन्होंने बताया कि बाल श्रम से संबंधित शिकायत कोई भी नागरिक पुलिस 100, चाइल्ड लाइन 1098 पेंसिल पोर्टल पर कर सकते हैं।

बैठक में जिला नोडल अधिकारी बाल श्रम श्रीमती चरणा गुप्ता बताया कि बाल श्रमिक को नियोजित करने पर अधि0 की धारा 14 (1) के तहत तथा किशोर श्रमिक को खतरनाक व्यवसाय या प्रक्रिया में नियोजित करने पर अधि0 धारा 14 (1क) के तहत कम से कम छः माह की अवधि का कारावास, लेकिन जिसे दो वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है या इसके अलावा कम से कम 20 हजार रूपये का जुर्माना है, लेकिन जिसे 50 हजार रूपये तक बढ़ाया जा सकता है अथवा ये दोनों दण्ड का प्रावधान है। उपर्युक्त धाराओं के आधीन अपराध को दोहराने पर कम से कम एक वर्ष की अवधि का कारावास, लेकिन जिसे 3 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है।

उन्होंने पीड़ित बाल किशोर श्रमिक की सुरक्षा के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि छुड़ाए गए बच्चे की मूलभूत आवश्यकताएं छुड़ाए जाने के तत्काल बाद अवश्य पूरी की जानी चाहिए, बाल कल्याण समिति रू छुड़ाए गए बच्चों को 24 घंटे के अंदर बाल कल्याण समिति के समक्ष पेश करना अनिवार्य है, जो जांच का आदेश देगी, जिसमें चिकित्सा जांच, आयु का निर्धारण, मध्यस्थ देखभाल और सुरक्षा, माता पिता का पता लगाना एवं श्रमिक के घर का सत्यापन किया जाना शामिल किया जा सकता है, सामजिक जांच की रिपोर्ट 15 दिन के अंदर दाखिल की जायेगी।इस स्तर पर या जांच की समाप्ति पर बाल कल्याण समिति किशोर न्याय अधिनियम, 2015 के अनुसार किशोर न्याय बोर्ड के माध्यम से एफआईआर में अतिरिक्त धारायें शामिल करने की सिफारिश कर सकती है। बैठक में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री अरविंद शाह,जिला बाल संरक्षण अधिकारी, महिला बाल विकास विभाग श्री मनोज लारोकर, जिला समन्वयक सर्व षिक्षा श्री अमरनाथ सिंह, श्री संजीव वर्मा सहित जिला टास्क फोर्स समिति के अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

मोबाइल मिलने पर अधिवक्ता ने मुंबई पुलिस कमिश्नर (रेलवे) डॉक्टर रविन्द्र सिसवे व उनकी टीम का आभार व्यक्त किया

● चोरी के महज चार महीने मे मोबाईल बरामद करने मे सफल रही मुंबई पुलिस

कल्याण रेलवे स्टेशन से किला कोर्ट जा रहे थे अधिवक्ता सत्यम मिश्रा स्टेशन प्लेटफार्म पे मोबाईल हुवा था चोरी

स्वतंत्र प्रभात

मुंबई कल्याण रेलवे स्टेशन से किला कोर्ट जाते वक्त अधिवक्ता सत्यम मिश्रा का मोबाईल कल्याण रेलवे स्टेशन पर चोरी हो गया था जिसका एफ आई आर उन्होंने कल्याण पुलिस स्टेशन में दर्ज कराई थी उसके बाद पुलिस प्रशासन हरकत में आकर छापेमारी करते हुए साइबर सेल के मदद से सर्विलांस पर लेटे हुए अधिवक्ता का चोरी मोबाइल बरामद करने में सफल रही जिसके बाद पुलिस कमिश्नर डाक्टर रविंद्र सिसवे (जी आर पी) के आदेश पर मुंबई रेल्वे क्राइम ब्रांच के सिनिअर इन्स्पेक्टर खेडकर की टीम के हेड कांस्टेबल राम जाधव,अजय रौंधल, संतोष रोकड़े, ने अपने सहयोगी कांस्टेबल विकास जाधव व घूले के साथ अधिवक्ता का चोरी हुवा मोबाइल लखनऊ आकर सुपुर्द किया, प्रायः पुलिस के प्रति ये व्यथा उन लोगों की ज्यादा है, जो मोबाइल चोरी होने पर थाने और ढ्ढ के पास चक्कर लगाते-लगाते निराश होकर बैठ जाते हैं। आखिर में यही मान लेते हैं कि 'मोबाइल अब नहीं मिलना' मगर, इस फिक्स इमेज को मुंबई पुलिस व उनकी टीम ने चेंज करने की कोशिश की जो की एक सकारात्मक पहल है, ताकि लोगों के चेहरों की चमक और मुस्कुराहट वापस लौट सके, जिन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि उनका मोबाइल कभी मिल सकेगा मोबाइल

मिलने पर अधिवक्ता सत्यम मिश्रा ने मुंबई पुलिस कमिश्नर डॉक्टर रविंद्र सिसवे व उनकी संयुक्त टीम का इस त्वरित कार्यवाही के लिए आभार व्यक्त किया और उन्होंने बताया कि मुंबई पुलिस ने चोरी के महज चार महीने के अंदर मोबाइल को बरामद कर फोन पर सूचित कर दिया था कानूनी कार्यवाही के बाद क्राइम ब्रांच की टीम ने लखनऊ के जीआरपी थाने में आज मोबाइल सुपुर्द किया।

खण्ड शिक्षा ने गैस पाइप लाइन में लगे आग को बुझाने वाले युवक को किया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़, विकास खण्ड अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय लरछुट में सोमवार को एमडीएम बनाते समय गैस सिलेंडर चूल्हे कि पाइप फट गया था और आग लग गई जिसमें एमडीएम बना रही रसोईया झुलस गई। जिसकी सूचना पाते ही संविदा विद्युत कर्मी कमल किशोर पांडेय ने तत्काल मौके पर पहुंच कर जल रहे गैस कि पाइप को भस्सी डालकर आग को बुझाया था। अखबार में प्रकाशित खबर होने के बाद मंगलवार को प्राथमिक विद्यालय में हुए घटना कि निरीक्षण करने पहुंचे खण्ड शिक्षा अधिकारी बृजेश कुमार राय, एमडीएम प्रभारी रविंद्र मिश्रा ने घटना के संबंध में जानकारी ली और अपने विवेक और हिम्मत को दिखाते हुए एक बड़ी घटना होने से बचाने वाले युवक कमल किशोर पांडेय पिंटू को खण्ड शिक्षा अधिकारी एवं एमडीएम प्रभारी रविंद्र मिश्रा व प्रधानाध्यापिका प्रियंका ने माल्यार्पण एवं अंग वस्त्रम देकर उन्हें सम्मानित किया गया। इस दौरान प्रधान पुत्र जितेंद्र यादव सहायक अध्यापिका सफरून निशा व अन्य रहे। घटना झुलसी रसोईया के दवा उपचार कि जानकारी लिए और बीओ ने कहा कि जिस अस्पताल से उपचार कराया जा रहा है उसके उपचार में आने वाले खर्च को हम देगें। उक्त अवसर पर हिन्दुस्तान संवाददाता गोपीनाथ मिश्रा, शिक्षक संघ अध्यक्ष संजय सिंह, हिमांशु सिंह, सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

प्राइवेट स्कूलों की मनमानी के खिलाफ अवधकेशरी सेना ने लिखित शिकायत की और विभिन्न मांग रखी

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। दिनांक 22 अप्रैल को जिलाधिकारी महोदया और डीआईओएस जिला विद्यालय निरीक्षक से मिलकर प्राइवेट स्कूलों की मनमानी के खिलाफ अवधकेशरी सेना ने लिखित शिकायत की और विभिन्न मांग रखी।।

1- शिक्षा के नाम पर खुला व्यापार

प्रत्येक वर्ष फीस में मनमानी बढ़ोतरी, फीस का चेक द्वारा भुगतान न लेना, परीक्षा शुल्क, डायरी, आई कार्ड, ड्रेस और किताबों का अलग शुल्क, और बच्चों से समाज सेवा के नाम पर धन वसूली—इन सभी ने शिक्षा को एक व्यापार का रूप दे दिया है। दिलचस्प बात यह है कि अभिभावकों को स्कूल प्रशासन की दुकान से ही किताबें और ड्रेस लेने के लिए मजबूर किया जाता है, जिनकी कीमतें बाजार से कहीं अधिक होती हैं।

2- ट्यूशन का दबाव और छात्रों पर अत्याचार

विद्यालयों के शिक्षक बच्चों को व्यक्तिगत ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य करते हैं। यदि कोई बच्चा ट्यूशन नहीं लेता, तो उसकी परीक्षा में अंक काट लिए जाते हैं या उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। यह स्थिति छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल रही है।

3-प्रशासन की मनमानी और अभिभावकों की बेबसी

जब अभिभावक स्कूल प्रशासन से मिलने जाते हैं और अपनी समस्याएं रखते हैं, तो उन्हें ताना दिया जाता है या उनके बच्चों को टारगेट किया जाता है। कई बार छात्रों को कक्षा में अपमानित भी किया जाता है। परेशान अभिभावक जब समाधान की मांग करते हैं, तो स्कूल प्रशासन कहता है, "अगर परेशानी है तो बच्चों का नाम कटवा लें।"

4- निरीक्षण की कमी और प्रशासन की चुप्पी

इन सबके बीच सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि शिक्षा विभाग या अन्य जिम्मेदार अधिकारी शायद ही कभी स्कूलों का निरीक्षण करते हैं। यदि समय-समय पर इन स्कूलों की

जांच की जाए, तो कई अनियमितताओं का खुलासा हो सकता है। निजी स्कूलों की इस मनमानी पर सख्ती से लगाम लगाए। ड्रेस, किताबें, फीस, और अन्य शुल्कों पर नियंत्रण होना चाहिए ताकि मध्यम वर्गीय परिवार भी अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दे सकें। साथ ही, स्कूलों में मानकों के अनुरूप ढांचा, योग्य शिक्षक और अभिभावकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार सुनिश्चित किया जाए। नीरज सिंह, नील ठाकुर, राघवेंद्र सिंह, रामनरेश पांडेय, आलोक सिन्हा, अमित मिश्रा, शिवेन्द्र सिंह बाहुबली, विवेक सिंह, सन्तोषी सिंह सहित सैकड़ों पदाधिकारी उपस्थित रहे।

वीबीएस गोरखपुर ने जागृति स्पोर्टिंग क्लब बढ़नी को हराकर जीत दर्ज की

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। जागृति स्पोर्टिंग क्लब द्वारा इंडो-नेपाल सीमावर्ती बढ़नी कस्बे के रामलीला मैदान में आयोजित तीन दिवसीय 44वें ऑल इंडिया वॉलीबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच एलपीएन दिल्ली व एसएसबी लखनऊ के बीच दूधिया रोशनी में खेला गया। पहला सेट एलपीएन दिल्ली ने 25-20 से जीतकर बढ़त बनाई लेकिन दूसरे सेट में एसएसबी लखनऊ ने 25-20 से जीत दर्ज कर मुकाबला बराबर कर लिया। इसके बाद खेले गए तीसरे व निर्णायक सेट को एलपीएन दिल्ली ने 31-29 से जीतकर मैच को 2-1 से अपने नाम कर लिया। अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी हरनूर, कप्तान चेतन, रॉबिन, राहुल, सचिन, चंद्र प्रकाश, लैविश ने जबरदस्त खेल का प्रदर्शन किया। दूसरा मैच महिला वर्ग का वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज, गोरखपुर व जागृति स्पोर्टिंग क्लब, बढ़नी के खिलाड़ियों के बीच खेला गया। देर रात तक चले एकतरफा मुकाबले में वीबीएस गोरखपुर ने 25-3 व 25-8 से जागृति स्पोर्टिंग क्लब को हराकर जीत दर्ज की। मैच का आंखों देखा हाल नेशनल कमेंट्रेटर जुग्गीराम राही, निजाम अहमद व अब्दुल हलीम ने सुनाया।नेशनल रेफरी संकटा सिंह, राम शिरोमणि सिंह, उपेंद्र बहादुर सिंह, अंकित सिंह, पंकज दूबे, सीबी मिश्र, अलीमुद्दीन आदि ऑफिशियल्स की भूमिका में रहे। इस दौरान उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के महासचिव, हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के कार्यकारी निदेशक तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2016 में यश भारती सम्मानित डॉ. आनंदेश्वर पांडेय, कांग्रेस जिलाध्यक्ष काजी सुहेल अहमद, कृष्णनगर उद्योग वाणिज्य संघ के अध्यक्ष रितेश शर्मा, पीस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अयूब अहमद, जागृति स्पोर्टिंग क्लब के अध्यक्ष अकील अहमद उर्फ मुन्नू, उत्तर प्रदेश वालीबॉल एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष व आयोजन सचिव मोहम्मद इब्राहिम, गांधी आदर्श विद्यालय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य विजय कुमार वर्मा, मुन्नू अल्वी, अब्दुल कय्यूम, अजय प्रताप गुप्त, हाड़ा विकास सिंह, शाकिर अली, संजय गुप्ता, डॉ. राज नरायन उपाध्याय, राहुल मोदनवाल, शंभूनाथ गुप्ता, शकील अहमद, जावेद अहमद, जहीर आलम, पंकज चतुर्वेदी, मसूद अहमद, रामलीला समिति के मनोज पांडेय, सगीर अहमद, आदि मौजूद रहे।

महावीर स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया पृथ्वी दिवस

महराजगंज रायबरेली। कस्बा स्थित महावीर स्टडी इस्टेट सीनियर सेकेंडरी कॉलेज महराजगंज में छात्र-छात्राओं ने पृथ्वी दिवस बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया प्रधानाचार्य कमल वाजपेई ने एक दिन पूर्व ही बच्चों को पृथ्वी दिवस के बारे में बताया कि जननी मां के समान ही हमें अपने धरती मां से प्यार करना चाहिए मां के सभी माँ के सभी गुण दया क्षमा सौहार्द प्यार वात्सल्य सुरक्षा भरण पोषण सभी पृथ्वी में निहित तत्वों से मिलता है हमारे शरीर में मां का अंश रहता है वैसे ही हमारा शरीर पांच तत्व गगन समीर से बना होता है प्रातः मां के चरण वंदन के समान धरती मां को भी प्रणाम करना चाहिए हम उसी की गोद में दिनभर रहते हैं बच्चों को बताया कि हमें पर्यावरण संरक्षण करना है जल पेड़ पौधों को सुरक्षित रखना विनाशकारी अपशिष्ट पदार्थों को पृथ्वी में जाने से रोकना है पृथ्वी दिवस को जन जागरण की दिशा में ले जाने हेतु बच्चों ने पोस्टर स्लोगन कविता तथा भाषण के माध्यम से बहुत ही उत्कृष्ट तरीके से अपना प्रयास किया इस मुहीम में कक्षाध्यापक तथा हिंदी प्रवक्ता नीरू मैम का सार्थक योगदान रहा। इस अवसर पर राजीव मिश्रा, सुरेंद्र प्रजापति, अमरेंद्र प्रजापति, अनिमेष मिश्र,मंजू सिंह, सरिता मिश्रा ,नीरू बाजपेई, राजकिशोर पाल, अभिजीत अवस्थी, लवलेश सिंह, अनुपम सिंह, रुचि सिंह, आलोक, लक्ष्मी सिंह, साधना सिंह, शालिनी सिंह, ज्योति सिंह, सौम्या शुक्ला, राधा शुक्ला ,अभिजीत अवस्थी, अवनीश सिंह, रामजी, अयोध्या प्रसाद ,सुनीता ,जगदीश तिवारी, गोमती, आदि उपस्थित रहे।

किशोरियों को अपहृत कर ले जाने का आरोप, मामला दर्ज

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के दो अलग-अलग गांवों में दो घटनाएं घटित हुई। जिहमें तीन आरोपी दो नाबालिक किशोरियों को बहला फुसलाकर अपने साथ भगा ले गए। परिवारीजनों की शिकायत पर पुलिस ने मामलों में मामला दर्ज कर किशोरियों की तलाश शुरू कर दी है। पहली घटना कोतवाली क्षेत्र की रहने वाली एक महिला ने पुलिस दी गई अपनी तहरीर में बताया कि रविवार की दोपहर को कैथन का पुरवा मजरे सेमरपहा गांव का रहने वाला प्रदीप कोरी उसकी 15 वर्षीय बेटी को लालच देकर अपने साथ भगा ले गया। दूसरी घटना में दो युवकों पर एक 14 वर्षीय बालिका को अपहृत करने का आरोप लगा है। गायब बालिका के भाई ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि पांडेपुर मजरे बिशुनखेड़ा गांव का रहने वाला देव सिंह व उसका साथी आर्यन रैदास उसकी 14 वर्षीय बहन को अपहृत कर ले गया। गायब दोनों किशोरियों के परिजनों ने बताया कि काफी खोजबीन की गई, लेकिन वे कहीं ढूंढे नहीं मिली। परिजनों ने बच्चियों की खोजबीन कर आरोपियों पर कार्रवाई की गुहार लगाई। प्रभारी निरीक्षक विनय कुमार तिवारी ने बताया

कि दोनों ही मामलों में मुकदमा दर्ज कर किशोरियों की तलाश की जा रही है। बच्चियों की लोकेशन मिल गई है। जल्द ही उन्हें बरामद कर लिया जाएगा।